ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 49 अंक 4 अक्तूबर 2025

पत्रिका के बारे में

प्राथमिक शिक्षक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देश भर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय पर अवगत कराते रहना। शिक्षा जगत में होने वाली गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने होते हैं। अत: यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक चिंतन में परिषद की नीतियों को ही प्रस्तुत किया गया हो। इसलिए परिषद का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

© 2026. पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है। परिषद की पूर्व अनुमति के बिना, लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. : दिनेश प्रसाद सकलानी

अध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग : सुनीति सनवाल

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम.वी. श्रीनिवासन

संपादकीय समिति

अकादमिक संपादक : पद्मा यादव एवं उषा शर्मा

मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार

प्रकाशन मंडल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार

मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : दीपक जैसवाल

सहायक उत्पादन अधिकारी : दीपक कुमार

संपादकीय सहायक : अंजू शर्मा

आवरण

अमित श्रीवास्तव

चित्र

आवरण I – सानवी,
चौथी 'बी', बलवंत राय मेहता विद्या भवन

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
होस्केरे हल्ली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
धनकल बस स्टॉप के सामने
पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

मूल्य एक प्रति ₹ 230.00 **वार्षिक ₹ 920.00** **त्रैवार्षिक ₹ 2,760**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 के लिए प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. कॉम्प्लेक्स, ओखला, इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली 110 020 द्वारा मुद्रित।

अप्रैल 2026 में मुद्रित

ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष 49 **अंक 4** **अक्तूबर 2025**

इस अंक में

संवाद 3

लेख

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में शिक्षण विधियाँ — रमन कनौजिया, सुमित गंगवार — 5
   एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
2. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए नाइजीरियाई पाठ्यक्रम — ईशिता यादव — 19
3. बाल मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में मातृभाषा में शिक्षा का प्रभाव — कृष्ण चंद्र चौधरी — 28
4. मातृभाषा आधारित प्राथमिक शिक्षा पर अभिभावकों के दृष्टिकोण का समालोचनात्मक अध्ययन — कुलदीप कुमार पाण्डेय, ज्ञानेन्द्र कुमार — 35
5. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन — अवनीश कुमार, देवेंद्र कुमार यादव — 48
6. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छा विद्यालय — राकेश राणा — 56
7. भविष्य की ओर शिक्षा— एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के सिद्धांतों का अध्ययन — दानिश अहमद, हिमांशी, विवेक सिंह — 63
8. 'वीणा'— कक्षा 4 के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तक की समालोचनात्मक समीक्षा — जावेद खान, डोरी लाल, नसरीन — 77
9. परियोजना आधारित विज्ञान शिक्षा — आशुतोष प्रभाकर — 86
   प्राथमिक स्तर पर शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी NCERT

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं— (i) अनुसंधान और विकास, (ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार। यह डिजाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर जिले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद* से लिया गया है जिसका अर्थ है— विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

10. कक्षा में आनंद— सीखने का जीवंत अनुभव — पद्मा यादव — 97

11. प्राथमिक विद्यालय के तीसरी कक्षा के बच्चों द्वारा पूर्ण संख्या घटाव का त्रुटि पैटर्न
एक विश्लेषण — चन्द्रा तिवारी — 106

विशेष

12. 'वीणा' (कक्षा 5)
हिंदी की पाठ्यपुस्तक के विषय में — 114

बालमन कुछ कहता है

13. मेरी प्रिय मित्र — युक्ति — 119

कविता

14. एक अध्यापक की प्रेरणा — दिव्या राजपूत — 120

संवाद

शिक्षा केवल ज्ञान के हस्तांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समाज के भविष्य से संवाद करने का सशक्त माध्यम है। *प्राथमिक शिक्षक* पत्रिका का यह अंक इसी संवाद को आगे बढ़ाने का प्रयास है, जिसमें समकालीन शैक्षिक विमर्श, नीतिगत परिवर्तनों, शोध-अध्ययनों और कक्षा-स्तरीय अनुभवों को एक साझा मंच पर प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उसके आलोक में विकसित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 एवं एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023) भारतीय शिक्षा को जिस नई दिशा की ओर ले जा रही हैं, यह अंक उसी परिवर्तनशील यात्रा का प्रतिबिंब है।

इस अंक के लेख शिक्षा के भविष्य, उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि और व्यावहारिक पक्षों के बीच सेतु का कार्य करते हैं। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के सिद्धांतों पर केंद्रित आलोचनात्मक अध्ययन हमें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि पाठ्यचर्या केवल विषयवस्तु का ढाँचा नहीं, बल्कि शिक्षण-अधिगम की दृष्टि और मूल्यों की अभिव्यक्ति है। इसी क्रम में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय अनुभव, जैसे नाइजीरियाई पाठ्यक्रम का अध्ययन, भारतीय संदर्भ में वैश्विक दृष्टिकोण को समझने का अवसर प्रदान करता है।

मातृभाषा में शिक्षा, बाल मनोविज्ञान और अभिभावकों के दृष्टिकोण से जुड़े लेख इस बात को रेखांकित करते हैं कि सीखने की प्रक्रिया बच्चे की भाषा, संस्कृति और अनुभवों से गहराई से जुड़ी होती है। ये अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि जब शिक्षा बच्चे की दुनिया से संवाद करती है, तभी वह प्रभावी और सार्थक बनती है। इसी तरह खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र और अनुभवात्मक अधिगम पर आधारित शोध यह दर्शाते हैं कि कक्षा में आनंद, गतिविधि और प्रयोग की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका है, विशेषकर प्राथमिक स्तर पर।

इस अंक में 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छा विद्यालय' जैसे लेख विद्यालय को शिक्षा के केंद्रीय स्थल के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करते हैं। यह हमें स्मरण कराता है कि शिक्षक, पाठ्यक्रम, संसाधन और समुदाय— सबका समन्वय ही एक अच्छे विद्यालय की पहचान बनाता है। साथ ही

पाठ्यपुस्तकों की समालोचनात्मक समीक्षा और परियोजना आधारित विज्ञान शिक्षा पर अध्ययन यह संकेत देते हैं कि शैक्षिक सामग्री और शिक्षण विधियों की सतत समीक्षा और नवाचार समय की आवश्यकता है।

विशेष खंड में 'वीणा' कक्षा 5 पर केंद्रित सामग्री तथा बालमन और कविता जैसे सृजनात्मक स्तंभ पत्रिका को केवल अकादमिक नहीं, बल्कि बाल-केंद्रित और संवेदनशील स्वर भी प्रदान करते हैं। ये स्तंभ यह दर्शाते हैं कि शिक्षा का संसार शोध, नीति और कक्षा के साथ-साथ भावनाओं, कल्पनाओं और अभिव्यक्ति से भी निर्मित होता है।

प्राथमिक शिक्षक का यह अंक शिक्षकों, शिक्षक-शिक्षकों, शोधकर्ताओं और नीति-निर्माताओं के लिए एक विचारोत्तेजक संवाद है। आशा है कि प्रस्तुत लेख और रचनाएँ पाठकों को आत्ममंथन, नवाचार और बेहतर शैक्षिक अभ्यास की दिशा में प्रेरित करेंगी तथा प्राथमिक शिक्षा को अधिक समावेशी, आनंदमय और अर्थपूर्ण बनाने में सहायक सिद्ध होंगी।

अकादमिक संपादक

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में शिक्षण विधियाँ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

रमन कनौजिया*
सुमित गंगवार**

भारत सरकार का लक्ष्य वर्ष 2030 तक संयुक्त राष्ट्र द्वारा संस्तुत सतत विकास एजेंडा के लक्ष्य 4 (एस.डी.जी. 4) में परिलक्षित सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा को सुनिश्चित करना तथा जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा देना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति तथा 21वीं सदी की नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्रस्तुत किया है। इस शिक्षा नीति के सिद्धांतों को वर्तमान विद्यालयी व्यवस्था में समाहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2022 में शिक्षा के बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का निर्माण किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शिक्षा व्यवस्था में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन तथा परिमार्जन करना है, ताकि उनके समग्र विकास की नींव रखी जा सके। इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में वर्णित शिक्षण विधियों का अन्वेषण करना है। जिसके लिए शोधार्थी द्वारा इस दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण करने के उपरांत परिणाम के रूप में यह पाया गया कि इस दस्तावेज में बुनियादी स्तर के विद्यार्थियों के लिए खेल आधारित शिक्षण विधियों पर बल दिया गया है, जिसके अंतर्गत बातचीत, कहानी, खिलौने, गीत-संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ, कला एवं शिल्प, इनडोर-आउटडोर खेल, प्रकृति से जुड़ाव और क्षेत्र भ्रमण जैसी गतिविधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इन आनंदपूर्ण गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को सीखने के अवसर मिलते हैं तथा उनमें जिज्ञासा, रचनात्मकता और समस्या-समाधान जैसी क्षमताओं का विकास हो पाता है। इस शोध-पत्र के अध्ययन के उपरांत प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापक कक्षागत एवं कक्षा के बाहर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इन शिक्षण विधियों को समाहित करके एक ऐसे समावेशी, न्यायसंगत एवं विद्यार्थी केंद्रित वातावरण का निर्माण कर सकेंगे जहाँ पर प्रत्येक विद्यार्थी आनंदपूर्वक नवीन ज्ञान को सीख सके।

*पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007
**_सहायक आचार्य_, शिक्षाशास्त्र विभाग, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य एक ऐसे व्यक्ति का निर्माण करना है, जो विवेकशील तर्कसंगत विचार तथा कर्म करने में सक्षम हो, जिसमें करुणा, समानुभूति, साहस, लचीलापन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा रचनात्मक कल्पनाशक्ति के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का समावेश हो। इसका लक्ष्य हमारे संविधान द्वारा परिकल्पित न्यायसंगत, समावेशी और बहुलतावादी समाज के लिए संलग्न, उत्पादक और योगदान करने वाले नागरिकों को तैयार करना है। इस प्रकार यह शिक्षा नीति भारतीय लोकाचार/लोकनीति/मूल्यों पर आधारित ऐसी शिक्षा व्यवस्था के लिए दृष्टि देती है जो सभी को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके भारत को एक न्यायसंगत और जीवंत ज्ञान समाज में सतत रूप से रूपांतरित करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से योगदान करके इसे एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने में सहायता प्रदान करती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 32)। इस शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांत जैसे बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वोच्च प्राथमिकता, लचीलापन, बहुविषयक और समग्र शिक्षा, अवधारणात्मक समझ पर जोर, रचनात्मक आकलन, बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति को बढ़ावा देना, विद्यार्थी केंद्रित दृष्टिकोण तथा भारतीय बुनियाद और गौरव इत्यादि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति में मार्गदर्शक का कार्य करते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा की वर्तमान संरचना (10+2) में बदलाव करते हुए 3 से 18 वर्ष के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय आधार पर 5+3+3+4 प्रतिमान को अपनाने की संस्तुति करती है। इस नई विद्यालयी संरचना में प्रारंभ के पाँच वर्षों को 'बुनियादी स्तर' कहा गया है, जिसमें 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाएगी। चूँकि बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की उम्र तक हो जाता है। अतः बच्चे के विकास के प्रारंभिक वर्ष मस्तिष्क के स्वस्थ व सतत विकास और वृद्धि के लिए उनकी उपयुक्त देखभाल और उपयुक्त प्रोत्साहन के विशिष्ट महत्व को इंगित करते हैं (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 15)। इस बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर पर प्रारंभ के तीन वर्षों (3–6 वर्ष) के दौरान बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की ठोस नींव रखी गई है, जबकि अगले दो वर्ष (6–8 वर्ष) प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 1 और 2 के रूप में होते हैं, जिसमें बच्चों की प्रारंभिक भाषा, गणित और सामाजिक व्यवहार संबंधी क्षमताओं का विकास किया जाता है। इस प्रकार यह स्तर बच्चों के मस्तिष्क के विकास से लेकर विद्यालय की तैयारी तक समग्र विकास की आधारशिला है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 नामक

दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। इस दस्तावेज में शिक्षा को एक अधिक समग्र, बहुआयामी और लचीले रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास पर बल देता है। यह दस्तावेज विज्ञान, कला, खेल, भाषा, गणित, नैतिक शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा जैसे विषयों को समाहित करके कला और विज्ञान, अकादमिक और व्यावसायिक विषयों के बीच की खाई को दूर करने का प्रयास करता है तथा विद्यार्थियों में रचनात्मक, आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच विकसित करने के साथ-साथ डिजिटल साक्षरता, सहयोग, संवाद कौशल और जीवनोपयोगी मूल्यों को भी विकसित करता है। इसके अतिरिक्त यह दस्तावेज भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी, गहन समझ, मूल्यों तथा जीवन कौशल की शिक्षा पर जोर देते हुए शिक्षा प्रणाली को अधिक व्यावहारिक, विद्यार्थी-केंद्रित और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार स्तंभ शिक्षा के माध्यम से 'पंचकोश' का विकास है। इसके अनुसार बालक का संपूर्ण विकास पाँच परतों अन्नमय कोश (शारीरिक परत), प्राणमय कोश (जीवनशक्ति ऊर्जा परत), मनोमय कोश (मन की परत), विज्ञानमय कोश (बौद्धिक परत) और आनंदमय कोश (आंतरिक स्व) से होता है (ओड़, 2021)। इस अर्थ में शिक्षा का लक्ष्य बालक के आंतरिक और बाह्य दोनों तरह के विकास को पोषित करना है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी— स्तर 2022 में पंचकोश की अवधारणा को पाठ्यचर्या उद्देश्यों के आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। पाठ्यचर्या में 'पंचकोश' की अवधारणा का समावेश शिक्षा को केवल जानकारी तक सीमित नहीं रखता, बल्कि यह बालकों के शारीरिक, भावात्मक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास में भी सहायक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में बुनियादी स्तर के लिए दिए गए मार्गदर्शक सिद्धांतों में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रत्येक बच्चा सीखने में सक्षम होता है, चाहे उसकी पारिवारिक या सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। बच्चे अपने अनुभवों से सीखते हैं और उनका विकास उनके अपने अनुभवों से होता है। वे अपने अनुभवों और परिवेश के साथ संवाद करते हुए अपनी समझ को विकसित करते हैं। अतः बच्चों के अनुभवों और उनकी सोच को उचित सम्मान मिलना चाहिए। साथ ही उनके सामाजिक, भावनात्मक और भाषायी विकास के लिए संवाद और अनुकरण को पाठ्यचर्या में उचित स्थान प्रदान करना चाहिए। इस अवस्था में बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं अतः सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अध्यापक खेल आधारित विभिन्न गतिविधियों का उपयोग कर सकते हैं। खेल आधारित गतिविधियों के माध्यम से बच्चे अपने और आस-पास के वातावरण के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं (गंगवार और कुमार, 2022)। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और अर्थपूर्ण अनुभव, वातावरण से जुड़ाव, नवीनता तथा चुनौतियाँ बच्चों की जिज्ञासा

और अनुभव आधारित सोच को प्रोत्साहित करती हैं। अतः शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में विविधता, समावेशन, जेंडर-संवेदनशीलता तथा परिवार और समुदाय की भागीदारी को महत्व प्रदान किया जाना चाहिए (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022)। ई.सी.सी.ई. इस चरण की शिक्षा का एक केंद्र बिंदु है, जिसमें अध्यापकों की संवेदनशीलता और बच्चों की भावनात्मक आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में ई.सी.सी.ई. के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। ई.सी.सी.ई. आदर्श रूप से लचीली, बहुआयामी, बहुस्तरीय, खेल आधारित गतिविधि आधारित, और खोज आधारित शिक्षा पर आधारित है। यह पद्धति बच्चों को वर्णमाला, भाषा, संख्याएँ, रंग, आकृतियाँ, खेल, पहेलियाँ, तार्किक सोच, समस्या-समाधान तथा चित्रकला जैसे विभिन्न विषयों से परिचित कराकर उनके विकास को बढ़ावा देती है (मेइती और अन्य, 2024)।

शोध लेख का उद्देश्य एवं अध्ययन प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध लेख का उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में नवाचारी शिक्षण विधियों का विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है। विषयवस्तु विश्लेषण अनुसंधान की वह प्रविधि है जिसके माध्यम से किसी प्रलेख (दस्तावेज) में निहित विशेषताओं का पूर्व निर्धारित प्रसंगों के आधार पर क्रमबद्ध एवं वस्तुनिष्ठ तरीके से अध्ययन करके निष्कर्षों तक पहुँचा जाता है (श्रीवास्तव और आनंद, 2022)।

अध्ययन के निष्कर्ष

इस शोध लेख में निर्धारित उद्देश्य के अनुसार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण करने के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 द्वारा संस्तुत शिक्षण विधियाँ

विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर में बच्चे स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु, रचनात्मक और सक्रिय अधिगमकर्ता होते हैं। वे खेल-खेल में और गतिविधियों के माध्यम से स्वयं करके बेहतर ढंग से सीखते हैं। वे प्रश्न करते हैं, सोचते हैं, कारण खोजते हैं और प्रयोग के माध्यम से प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं। इस अवस्था में उनका सीखना एक संवादात्मक प्रक्रिया के रूप में होता है, जहाँ वे अपने अनुभव, संवेदना और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। खेलों के माध्यम से उनकी सृजनात्मकता, कल्पनाशक्ति, भाषा और समस्या-समाधान क्षमता का विकास होता है। बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा, आनंद, और सहभागिता उनके शारीरिक व मानसिक विकास के लिए इस स्तर पर अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार, यह स्तर बच्चों के समग्र विकास और शिक्षा की नींव मजबूत करने का कार्य करता है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 39)। अतः इस आयु वर्ग के प्रत्येक बच्चे के लिए कक्षा-कक्ष एक समावेशी,

सीखने के लिए एक अनुकूल वातावरण वाला होना चाहिए जो प्रत्येक बच्चे को स्वतंत्रता, खुलापन, स्वीकृति, सार्थकता, अपनापन और चुनौती प्रदान करे (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ. सं. 128)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने समावेशी शिक्षा की एक सशक्त आधारशिला रखी है। यह नीति शिक्षा प्रणाली में व्याप्त मौजूदा चुनौतियों को दूर करने तथा यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि कोई भी विद्यार्थी पीछे न रह जाए (दत्ता और दोवारह, 2025)। बच्चों का सतत मूल्यांकन, जो पूर्व-प्राथमिक और आँगनवाड़ी कार्यक्रमों का एक अनिवार्य हिस्सा है, विकास संबंधी विलंब या कठिनाइयों की प्रारंभिक पहचान में सहायक सिद्ध होता है। इससे बच्चों को समय रहते सहारा और संसाधन उपलब्ध कराए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम, 2009 के अंतर्गत यह सुनिश्चित किया गया है कि विद्यालयों को अधिक लोकतांत्रिक और सहभागी रूप में संचालित किया जाए। इसमें माता-पिता और स्थानीय समुदाय को विद्यालय की गतिविधियों, निर्णय प्रक्रिया और बच्चों की शिक्षा में भागीदारी के अवसर दिए जाते हैं, ताकि शिक्षा प्रणाली अधिक समावेशी और उत्तरदायी बन सके (*इन्क्लूजन इन एजुकेशन— ए मैनुअल फॉर स्कूल मैनेजमेंट कमेटी*, 2020, पृ.सं. 5)। उपर्युक्त वर्णित सुझावों के आलोक में विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी चरण में अधिगम प्रक्रिया को समावेशी एवं अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से नवीन शिक्षणशास्त्रीय पद्धतियों को अपनाने की आवश्यकता महसूस होती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर, 2022, एक व्यापक और विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षणशास्त्र की संस्तुति करती है, जो बच्चों के समग्र विकास और सीखने की सहज प्रकृति पर केंद्रित है। जिसमें खेल आधारित दृष्टिकोणों और विशिष्ट विषय-क्षेत्र रणनीतियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

खेल आधारित शिक्षा

पूर्व-प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या में परंपरागत विषयों के स्थान पर व्यावहारिक क्रियाएँ विशेष महत्व रखती हैं। अतः बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, सृजनात्मक तथा भाषायी विकास के लिए विभिन्न प्रकार की खेल सामाग्री की भी आवश्यकता होती है (यादव, 2023)। जब बच्चे खेलते हैं तो वे न केवल आनंद का अनुभव करते हैं, बल्कि अपनी कल्पना का उपयोग कर अपनी पसंद और नियम भी तय करते हैं। खेल के दौरान वे अपने आस-पास की दुनिया पर ध्यान केंद्रित करते हैं और नई चीजें सीखते हैं। यह एक समग्र सामाजिक गतिविधि है जो बच्चों को दुनिया को समझने, समस्याओं को हल करने, आत्मनिर्भर बनने और दूसरों के साथ सहयोग करने जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने में मदद करती है। खेल-खेल में ही बच्चे अनजाने में गणित, भाषा, योजना बनाना, तार्किक सोच और सामाजिक समझौते जैसी बातें सीखते हैं, जो उनके सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। इस प्रकार खेल-सीखने की गतिविधियों का एक आदर्श माध्यम है। शिक्षाविदों ने भी शिक्षण और सीखने की गतिविधियों में खेल

के उपयोग की सिफारिश की है। खेल पद्धति बच्चों को अपने तरीके से ज्ञान अर्जित करने की, समझने की और उसे आत्मसात करने की स्वतंत्रता देती है (तेवतिया, 2023)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 'खेल' को बच्चों के सीखने और विकास के केंद्र में रखती है। यह खेल को केवल मनोरंजन के साधन के रूप में नहीं, बल्कि एक सुनियोजित शैक्षिक उपकरण के रूप में भी देखती है। खेलना बच्चों के लिए केवल एक गतिविधि नहीं बल्कि एक स्वाभाविक आवश्यकता है, जिससे वे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। बच्चों की प्रकृति ही ऐसी होती है कि वे खेल के माध्यम से चीजों को समझते और सीखते हैं। खेल बच्चों को सक्रिय रखता है और उनके सोचने, अनुभव करने, सामाजिक संबंध बनाने और समस्याओं को हल करने की क्षमताओं को विकसित करता है। यह उन्हें स्व-अनुशासन, सामाजिक जुड़ाव और सहभागिता के अवसर प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में वे न केवल स्वयं से, बल्कि दूसरों से और अपने परिवेश से भी सीखते हैं। खेल बच्चों को सीखने के लिए एक मुक्त, आनंददायक और सार्थक माहौल प्रदान करता है, जो उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में सहायक होता है। इस प्रकार, खेल बच्चों के लिए आवश्यक सभी शर्तों को पूरा करता है और उनकी शिक्षा का एक अभिन्न हिस्सा बनता है। इस प्रकार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 खेल के महत्व को उजागर करती है। इसके अनुसार पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र, समय और विषयवस्तु को व्यवस्थित करने और बच्चे के संपूर्ण अनुभव के लिए कक्षा में जिन अवधारणात्मक और प्रक्रियात्मक अभ्यासों को अपनाया जाता है उसमें खेल की मुख्य भूमिका होती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 41)।

खेल आधारित अधिगम के विभिन्न प्रकार और उनकी शैक्षणिक भूमिकाएँ

ई.सी.सी.ई. के संदर्भ में 'खेल' शब्द के अंतर्गत उन सभी गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है जो बच्चों के लिए मजेदार और उन्हें व्यस्त रखने वाली हैं। इनमें शारीरिक खेल, अनौपचारिक बातचीत, प्रश्न और उत्तर करना, कहानी सुनाना और सीखने-सीखाने से जुड़ी अन्य गतिविधियाँ भी शामिल हैं (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 41)। खेल बच्चों को सक्रिय और प्रेरणादायक रूप से सीखने के अवसर प्रदान करती है और इसे विभिन्न तरीके से व्यवस्थित किया जा सकता है—

मुक्त या स्वतंत्र खेल

इस प्रकार के खेल के अंतर्गत बच्चे स्वयं ही यह तय करते हैं कि उन्हें क्या खेलना है और कितनी देर तक खेलना है तथा वे स्वयं ही इसे निर्देशित भी करते हैं। इसमें अध्यापक की भूमिका अप्रत्यक्ष होती है। वे केवल खेल के लिए परिस्थितियाँ निर्मित करते हैं, बच्चों का अवलोकन करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उनकी मदद भी करते हैं। इस प्रकार का खेल बच्चों को सामाजिक और आत्म-नियमन के कौशल विकसित करने में मददगार होता है। इसके अंतर्गत खिलौनों से खेलना, पहेलियों को हल करना,

सहपाठियों के साथ भूमिका निर्वहन करना तथा उनके साथ पुस्तकें पढ़ने जैसी गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

मार्गदर्शित खेल

इस प्रकार के खेल में बच्चे गतिविधि का स्वयं नेतृत्व कहते हैं, लेकिन वयस्क सक्रिय रूप से खेल गतिविधि को सुगम बनाने में सहायता प्रदान करते हैं। इसमें अध्यापक एक विशिष्ट उद्देश्य के साथ जुड़ते हैं जैसे बच्चों में सूक्ष्म-गतिक कौशल और कल्पना को विकसित करना। विकास के सभी आयामों से संबंधित कौशलों के विकास के लिए मार्गदर्शित खेल सबसे प्रभावी माना जाता है, क्योंकि यह बच्चों और अध्यापकों दोनों को एक साथ मिलकर सीखने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार बाल्यावस्था में मार्गदर्शित खेल को सबसे प्रभावी माना जा सकता है, क्योंकि यह सीखने के विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति तथा बाल-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापक द्वारा सौम्य और सक्रिय संबलन पर बल देता है। इस प्रकार के खेल के अंतर्गत स्मृति आधारित खेल, कला एवं शिल्प तथा संगीत एवं नृत्य आदि गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

संरचित/निर्देशित खेल

इस प्रकार के खेल के अंतर्गत अध्यापक द्वारा निर्देशित गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं, जो आनंददायक होती हैं तथा जिनमें कुछ खास नियम और दिशानिर्देश होते हैं। बुनियादी स्तर में विशिष्ट दक्षता और सीखने के प्रतिफलों पर ध्यान केंद्रित करने की दृष्टि से संरचित खेल काफी महत्वपूर्ण होते हैं। अध्यापक ऐसे खेलों और गतिविधियों जिनमें कुछ खास नियम और दिशानिर्देश होते हैं, उनके माध्यम से सीखने के लिए आनंददायक अनुभवों की योजना बनाते हैं। इस प्रकार के खेल के अंतर्गत निर्देशित बातचीत, कहानी कहना, कविताएँ गाना तथा क्षेत्र-भ्रमण जैसी गतिविधियों को सम्मिलित किया जा सकता है। इस प्रकार खेल आधारित अधिगम शिक्षण का एक ऐसा तरीका है जिसमें वयस्कों के मार्गदर्शन और समर्थन के साथ-साथ हँसी-खेल और बच्चों पर केंद्रित तत्व शामिल होते हैं। यह बच्चों के लिए सीखने के विभिन्न स्तरों को समझने में अध्यापकों की भूमिका को रेखांकित करता है। इस सीखने के क्रम में, बाल-निर्देशित और अध्यापक-निर्देशित दोनों तरह की मजेदार गतिविधियाँ शामिल हो सकती हैं, जो बच्चों को सीखने में मदद करती हैं। बुनियादी स्तर (कक्षा 1 और 2) में, बच्चों को प्रत्येक वर्ष सभी प्रकार के खेल-खेलने के समान अवसर मिलने चाहिए।

खेल के माध्यम से सीखने के विभिन्न तरीके

बाल्यावस्था में बच्चे विभिन्न प्रकार के खेलों और आनंददायक गतिविधियों के माध्यम से सीखते हैं जैसे बातचीत करना, खिलौनों से खेलना, चित्रकला, गायन तथा नृत्य आदि। एक अध्यापक बच्चों के साथ जुड़ने तथा उन्हें अधिगम प्रक्रिया में समायोजित करने की दृष्टि से इन सभी तरीकों को अपना सकता है। खेल के माध्यम से सीखने के विभिन्न तरीकों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है—

बातचीत

बाल्यावस्था में बच्चों में भाषा का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि भाषा के माध्यम से ही बच्चे एक दूसरे से जुड़ते हैं, अपनी समझ को विकसित करते हैं तथा सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास करते हैं। अतः अध्यापक को इस आयु वर्ग के बच्चों के भाषायी विकास के लिए उपयुक्त रणनीतियों को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। बच्चों में आस-पास के लोगों और चीजों से जुड़ने के लिए बातचीत जरूरी होती है। कक्षा में बच्चों के साथ निरंतर बातचीत विश्वासपूर्ण संबंध बनाने में मदद करती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 94)। इसके लिए अध्यापक कक्षा में खुली एवं नियोजित दोनों प्रकार की बातचीत आधारित गतिविधियों को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके लिए अध्यापक 'सर्कल टाइम सेशन' (जिसमें सभी बच्चे अध्यापक के साथ एक घेरे में बैठकर बातचीत करते हैं) तथा 'दिखाओ और बताओ सत्र' (जिसमें बच्चे और अध्यापक अपने पसंदीदा खेल, मूल कहानियाँ तथा निजी किस्से आदि को सम्मिलित कर उन पर चर्चा करते हैं) जैसी गतिविधियों को बढ़ावा दे सकते हैं। कक्षा में कविता, कहानी और चित्र आदि के माध्यम से बातचीत द्वारा बच्चों को किसी विषय पर तर्क-वितर्क करने के मौके प्रदान करने चाहिए, जिससे उनकी मान्यतओं को चुनौती मिले, वे सही-गलत का निर्णय करने में सक्षम हो पाएँ और संवैधानिक मूल्यों को समझने की कोशिश कर पाएँ (गुप्ता, 2024)। इसके अतिरिक्त अध्यापक को कक्षा में भाषा संबंधी अवरोधों को दूर करना भी आवश्यक हो जाता है, क्योंकि कक्षा में सांस्कृतिक विविधता के संदर्भ में भाषा संबंधी अवरोध प्रमुख चुनौतियों में से एक हैं, जो उन विद्यार्थियों के लिए शिक्षण में पूर्ण सहभागिता को कठिन बना सकते हैं, जिनकी भाषिक पृष्ठभूमि शिक्षण माध्यम से भिन्न होती है। जिसके लिए बातचीत करना एक सशक्त माध्यम होता है।

कहानी सुनना

कहानियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अभिन्न हिस्सा हैं। छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनना बहुत अच्छा लगता है। इसके माध्यम से उनमें सुनने, कल्पना करने तथा तर्क करने की क्षमताओं का विकास होता है। कहानियाँ बच्चों के लिए दुनिया की एक खिड़की की तरह होती हैं, जो उन्हें आकर्षित करती हैं, मजेदार होती हैं और कल्पना को बढ़ावा देती हैं। बच्चे इसमें रुचि लेते हैं, जिससे उनमें नैतिक मूल्यों, भावनात्मक समझ और जीवन कौशलों का विकास होता है। कहानियाँ सीखने का एक अच्छा माध्यम है, क्योंकि वे बच्चों को नए शब्द सिखाती हैं, उनकी शब्दावली का विस्तार करती हैं और वाक्य संरचना व समस्या सुलझाने के कौशल को बेहतर बनाती हैं। कहानियों के माध्यम से बच्चे सांस्कृतिक, सामाजिक और मानवीय विविधताओं से परिचित होते हैं, जिससे उनमें इनके प्रति जागरूकता पैदा होती है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 96)। अतः अध्यापक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे कक्षा में बच्चों को कहानियाँ सुनाकर उनमें विभिन्न क्षमताओं एवं कौशलों का विकास करें। कहानी को सुनाने के लिए अध्यापक पुस्तकों, कठपुतलियों, विभिन्न प्रकार के चित्र, मुद्रित फ्लैश काड्र्स, कहानी

चार्ट और पोस्टर आदि का सहारा ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चों को कहानी सुनने के अलावा कहानी कहने का भी अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। बच्चे कक्षा में पहले से सुनी हुई या अपने द्वारा बनाई गई कहानी सुना सकते हैं अथवा अध्यापक कहानी सुनाना शुरू कर सकते हैं और बच्चों से उसे पूरा करने के लिए कह सकते हैं (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 94)।

खिलौने आधारित शिक्षा

छोटे बच्चे प्रत्यक्ष अनुभवों और वास्तविक वस्तुओं के माध्यम से बेहतर ढंग से सीखते हैं। अतः अध्यापक को अधिगम प्रक्रिया में मूर्त वस्तुओं जैसे स्थानीय खिलौनों आदि के माध्यम से बच्चों को सिखाने का प्रयास करना चाहिए। खिलौने आधारित शिक्षा खेल आधारित शिक्षणशास्त्र का एक जरूरी हिस्सा है। खिलौनों और खेलों से ऐसा वातावरण बनता है, जिसमें विद्यार्थी बिना किसी डर के बहुत खुशी और जिज्ञासा के साथ सीखता है (रॉय, सहरावत और चित्ररेखा, 2024)। खिलौने के माध्यम से बच्चे जोड़-तोड़, खोज और प्रयोग करना सीखते हैं, जिससे वातावरण में उनकी सक्रिय भागीदारी और उनमें गहन समझ विकसित होती है। खिलौने चाहे सरल हों या जटिल, इनके माध्यम से बच्चे अपनी कल्पनाशक्ति, समस्या-समाधान क्षमता, भाषा और गणितीय समझ को निखारते हैं। पारंपरिक खिलौने जैसे रिंग सेट पहेली, ढिंगली (कपास की गुड़िया), रसोई का सेट आदि बच्चों की रचनात्मकता और सामाजिक समझ को बढ़ावा देते हैं। इसके अतिरिक्त मिट्टी, रंग, गेंद, बीज, धागा आदि से बने खिलौने से बच्चों की रचनात्मकता, समूह में कार्य करने की क्षमता और आत्म-विश्वास विकसित होता है। इस प्रकार खिलौने बच्चों के संपूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये न केवल उनकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति को प्रोत्साहित करते हैं, बल्कि बहुविषयक और अंतर्विषयक शिक्षण में भी सहायक होते हैं। खेल और खिलौनों के माध्यम से बच्चे गतिक-कौशलों तथा हाथ-आँख के समन्वय को मजबूत करते हैं। इसके साथ ही ये बच्चों के सामाजिक और भावात्मक विकास में भी योगदान प्रदान करते हैं (*टॉय बेस्ड पैडागॉजी : ए हैंडबुक— लर्निंग फॉर फन, जॉय एंड हॉलिस्टिक डेवलपमेंट पार्ट-I*, 2022)।

गीत और तुकबंदियाँ

बच्चों को गीत और तुकबंदियाँ गाना और संगीत पर नृत्य करना बहुत अच्छा लगता है। ये उनकी भाषा सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। गीतों के माध्यम से बच्चे न केवल आनंद की प्राप्ति करते हैं, बल्कि उनकी समझ और भावनात्मक जुड़ाव भी बढ़ता है। गीतों और तुकबंदियों के साथ शारीरिक गतिविधियों को जोड़ने से बच्चों में समन्वय, एकाग्रता और अनुशासन जैसे कौशल विकसित होते हैं। इसके अतिरिक्त ये बच्चों को भाषा के स्वाभाविक प्रवाह, उच्चारण, शब्दावली और संप्रेषण कौशल को भी बढ़ाने का अवसर देती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे समूह में सहभागिता करना सीखते हैं। अध्यापक जब बच्चों को स्वयं गाने, दोहराने और अभिनय करने का अवसर देते हैं तो उनकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति का भी विकास होता है। इस प्रकार गीत और तुकबंदियाँ

बाल-शिक्षण में केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि बहुस्तरीय शिक्षा का प्रभावी माध्यम भी हैं जो बच्चों में भाषा, गणित, सामाजिक कौशल और भावनात्मक विकास में सहायक सिद्ध होते हैं।

संगीत और शारीरिक हलचल

संगीत सुनना बच्चों को बहुत आनंददायी लगता है। बच्चे अपनी दादी-नानी की लोरी सुनते हुए बड़े होते हैं। मस्तिष्क के विकास और सिनैप्टिक कनेक्शन (तंत्रिका कोशिकाओं के मध्य का संबंध या जुड़ाव जो संकेतों के संचार के लिए महत्वपूर्ण होता है) के निर्माण के लिए संगीत एक प्रभावशाली उद्दीपन है। अतः अध्यापकों द्वारा बच्चों को सरल वाद्य-यंत्र बजाने और गायन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हमारे आस-पास संगीत के बहुत से स्त्रोत हो सकते हैं, जैसे खेतों में गाते किसान, मधुमक्खियों की भिनभिनाहट, कोयल की कूक या बारिश की गड़गड़ाहट आदि (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर, 2022 पृ.सं. 101)।

संगीत और शरीर की गति न केवल बच्चों के लिए मनोरंजक होती हैं, बल्कि वे उनकी रचनात्मकता, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता को भी प्रोत्साहित करते हैं। बच्चों को ताल, लय और ध्वनि की पहचान सहज रूप से होती है। शारीरिक गतिविधियाँ, जैसे— ताली बजाना, पाँव पटकना, घूमना, कूदना आदि बच्चों के गतिक विकास के लिए भी उपयोगी होती हैं। इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों को आत्म-अनुशासन, एकाग्रता और तालमेल सिखाने में मदद करती हैं। अतः अध्यापक यदि संगीत और शारीरिक गतिविधियों को शिक्षण में रचनात्मक तरीके से शामिल करें, तो इससे बच्चों की सीखने की प्रक्रिया अधिक आनंददायक, सहभागितापूर्ण और प्रभावशाली बन सकती है। साथ ही यह विविध संस्कृतियों और भाषाओं के प्रति बच्चों में सम्मान और समझ विकसित करने का माध्यम भी बनती है। कुल मिलाकर, संगीत और शारीरिक हलचल न केवल शिक्षा को रोचक बनाते हैं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कला और शिल्प

प्रारंभिक कक्षाओं मे कला एवं शिल्प का समावेशन अधिगम प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है, क्योंकि बच्चों को रंगों के साथ खेलने और अपनी रुचि के अनुसार चीजों को बनाने में आनंद की प्राप्ति होती है। ये बच्चों को अपने विचारों और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम उपलब्ध करते हैं। कला एवं शिल्प आधारित विभिन्न गतिविधियाँ, जैसे— चित्रकारी, रंगाई, मिट्टी के बर्तन बनाना तथा विभिन्न प्रकार की स्थानीय सामग्रियों के माध्यम से नई वस्तुओं को बनाना आदि न केवल बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं, बल्कि उनमें विभिन्न कौशलों को भी विकसित करती हैं। इस प्रकार ये गतिविधियाँ शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कला समेकित शिक्षा को बढ़ावा देती हैं। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में कला, जैसे— कागज शिल्प, मुखौटा, कठपुतली तथा मिट्टी के बर्तन आदि के जुड़ाव से विद्यार्थी मनोरंजक ढंग से, सामूहिक रूप में अधिक जुड़ाव के साथ नई अवधारणाओं को सीखते हैं वहीं अध्यापक विद्यार्थियों में आपसी जुड़ाव, सृजनात्मकता तथा उच्च प्रतिधारण जैसे

महत्वपूर्ण कौशलों का विकास कर सकते हैं (यादव, 2024)। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कला और शिल्प को बच्चों के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण माना गया है। अतः अध्यापक को बच्चों की कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रशंसा करनी चाहिए तथा एक ऐसे समावेशी वातावरण का निर्माण करना चाहिए जो कक्षा-कक्ष में बच्चों को उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्रता प्रदान करे।

इनडोर खेल

जिस तरह शरीर को स्वस्थ रखने के लिए शारीरिक व्यायाम जरूरी है, ठीक उसी तरह मानसिक रूप से स्वयं को स्वस्थ रखने के लिए मानसिक व्यायाम भी जरूरी है। बच्चों के विकास के शुरुआती चरण में उनके समग्र विकास हेतु 'इंडोर खेल' महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये खेल बच्चों में समस्या-समाधान, तार्किक सोच और सहयोग जैसे महत्वपूर्ण कौशलों को विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं। कुछ प्रमुख खेल, जैसे— जिग्सॉ पहेलियाँ बच्चों में कल्पनात्मक तर्क विकसित करने में मदद करती हैं; रणनीतिक खेल जैसे शतरंज बच्चों में रणनीतिक सोच और समस्या समाधान के कौशल को विकसित करते हैं तथा चौपड़, साँप-सीढ़ी और लूडो जैसे खेल गिनती, रणनीति, सहयोग, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा एवं सहपाठियों के साथ सहयोग बढ़ाने में सहायता प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त शब्द और तर्क पहेलियाँ एवं समस्या-समाधान जैसी गतिविधियाँ जिनमें तर्क, पैटर्न, रणनीति और अंकगणितीय कौशल शामिल हैं, बच्चों में तार्किक निर्णय और रचनात्मकता के लिए आवश्यक कौशल को विकसित करने में सहायता प्रदान करती हैं। अतः इन पहेलियों और समस्या-समाधान आधारित गतिविधियों को व्यापक रूप से कक्षा-कक्ष की अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

बाहरी मैदानी खेल

छोटे बच्चे विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधियाँ करते हैं, जैसे— चलना, दौड़ना, कूदना तथा पेड़ों पर चढ़ना आदि। बचपन में बच्चों की ये गतिविधियाँ उनके शारीरिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक होती हैं। ये गतिविधियाँ बच्चों को स्थूल गतिक कौशलों को विकसित करने में सहायता प्रदान करती हैं। विभिन्न प्रकार के बाहरी मैदानी खेलों के माध्यम से इन सभी गतिविधियों को प्राथमिकता दी जा सकती है। खेल खेलने से बच्चों के शरीर के सभी अंग सक्रिय रूप से क्रियाशील होते हैं जिससे पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है और उनके शरीर की उपापचयी क्रियाएँ भी सुचारु रूप से कार्य करने लगती हैं (सिंह, पटेल और राव, 2023)। अतः अध्यापक विभिन्न प्रकार के खेलों, जैसे— रस्सी-कूद, पकड़म-पकड़ाई, पिट्ठू, आँख-मिचौली और लुक-अप तथा लुक-डाउन आदि खेलों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की शारीरिक गतिविधियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। जिससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास होता है। इसके अतिरिक्त समूह में खेलने से वे दूसरों के साथ मिलकर काम करना सीखते हैं जो उनके सामाजिक सामंजस्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देता है।

प्रकृति के साथ समय बिताना

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में कहा गया है कि हमारा शरीर पंचभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) से

मिलकर बना होता है। पंचभूत हमारे शरीर के विभिन्न हिस्सों में प्रकट होते हैं। अतः बाल्यावस्था में बच्चों का इनसे प्रत्यक्ष संपर्क होना आवश्यक होता है, ताकि वे इन तत्वों के साथ गहरे संबंध का अनुभव कर सकें। इसके लिए बच्चों का प्रकृति के साथ जुड़ाव आवश्यक हो जाता है। पेड़-पौधों, पक्षियों और जानवरों के साथ समय बिताना या चारों ओर से घिरी प्रकृति में सिर्फ शांत रहना पर्यावरण के लिए जीवन शैली का आधार विकसित कर सकता है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022, पृ.सं. 112)। प्रकृति के साथ जुड़े रहने से बच्चों में अवलोकन, अन्वेषण तथा प्रश्न करने की क्षमता का विकास होता है तथा नई चीजों को सीखने के प्रति जिज्ञासा को प्रोत्साहन मिलता है। अतः अध्यापकों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे बच्चों को प्रकृति का प्रत्यक्ष अनुभव कराकर सीखने के लिए प्रेरित करें। यह न केवल बच्चों में नई चीजों को सीखने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करेगा, बल्कि उन्हें पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देने के योग्य बनाएगा।

क्षेत्र-भ्रमण

क्षेत्र भ्रमण बच्चों को कक्षा की चारदीवारी से बाहर निकालकर वास्तविक दुनिया का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे उनकी समझ और ज्ञान में वृद्धि होती है। जब बच्चे किसी नई जगह पर जाते हैं तो वे विभिन्न चीजों को देखते, सुनते और महसूस करते हैं। यह बच्चों में अवलोकन कौशल को बढ़ाता है और उन्हें अपने आस-पास की दुनिया के बारे में जानने के लिए जिज्ञासु भी बनाना है। उदाहरण के लिए, किसी बगीचे की यात्रा उन्हें पौधों, फूलों और कीड़ों के बारे में जानने का अवसर प्रदान कर सकती है या किसी चिड़ियाघर की यात्रा उन्हें विभिन्न जानवरों और उनके आवासों के बारे में जानकारी प्रदान कर सकती है। क्षेत्र भ्रमण बच्चों को नए अनुभव प्रदान करके उनमें आत्मविश्वास पैदा करता है और उन्हें विभिन्न संस्कृतियों और जीवनशैली से परिचित कराता है। इस प्रकार क्षेत्र-भ्रमण के माध्यम से सीखना और सिखाना दोनों ही आनंदपूर्ण होता है। इसमें बच्चे भी पूर्ण रूप से सहभागी होते हैं और बच्चों के सीखने का स्तर स्थायी होता है (कुमार, 2022)। अतः सीखने की प्रक्रिया के एक हिस्से के रूप में छोटी, स्थानीय क्षेत्र अध्ययन यात्राएँ कक्षा में बच्चों द्वारा प्राप्त ज्ञान को पुख्ता करती हैं और उन्हें ज्यादा सवाल तथा पहले से ज्ञात चीजों के साथ संबंध बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। इन अनुभवों के माध्यम से बच्चे खुद का प्रबंधन करना और दूसरों के साथ रहना सीखते हैं।

परिणाम, व्याख्या एवं निष्कर्ष

खेल के माध्यम से सीखना प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की आधारशिला है, जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 ने विशेष महत्व प्रदान किया गया है। ये दस्तावेज इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न होकर बच्चों की रुचि, अनुभवजन्य और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप होनी चाहिए। बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को स्वाभाविक, आनंददायक और सहभागितापूर्ण बनाने के लिए बातचीत, कहानी, खिलौने, गीत-संगीत, शारीरिक गतिविधियाँ, कला एवं शिल्प, इनडोर-आउटडोर खेल, प्रकृति से जुड़ाव

और क्षेत्र-भ्रमण जैसे विविध विधाओं को शैक्षिक ढाँचे में समाहित किया जाना चाहिए। ये गतिविधि आधारित अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है जो कि प्रारंभिक कक्षाओं में बनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की दक्षता के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लक्ष्य को प्रतिपादित करते हैं (गौतम, 2022)। इन विधियों के माध्यम से शिक्षण अधिगम न केवल आनंददायक बनता है, बल्कि ये बच्चों में भाषा विकास, सामाजिकता, समस्या-समाधान, संवेदनशीलता, रचनात्मकता तथा आत्म-अभिव्यक्ति जैसे आवश्यक जीवन-कौशलों को भी पोषित करती हैं। इन विधियों के माध्यम से बच्चों को उनके परिवेश से जोड़ने, सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी कराने तथा बहुविषयी एवं अंतर्विषयी शिक्षण के अवसर प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षण को बाल केंद्रित, अनुभवात्मक और समावेशी बनाने के लिए अधिगम प्रक्रिया को खेल के साथ एकीकृत करके सिखाने पर जोर दिया गया है जिससे कि विद्यार्थियों में अधिगम को प्रभावी व रुचिकर बनाने के साथ साथ स्व-अनशुासन, स्व-निर्देशन, कुशल नागरिकता तथा समूह के साथ मिलकर कार्य करने की भावना जैसे कौशलों का विकास हो सके (सिंह, पटेल और राव, 2023)।

इस प्रकार, खेल के माध्यम से सीखना केवल बाल सुलभ अधिगम नहीं, बल्कि वह शिक्षण दर्शन है जो भारतीय ज्ञान-परंपरा, समकालीन शिक्षा नीति तथा समावेशी विकास की मूल अवधारणाओं को एक साथ समेटे हुए है। इसे बुनियादी स्तर की शिक्षा में प्रभावी रूप से लागू कर, हम एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं जो न केवल ज्ञानवान होगी बल्कि संवेदनशील, सक्षम और रचनात्मक भी होगी।

संदर्भ

ओड़, एल.के. 2021. *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि*. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर.

कुमार, ए. 2022. प्राथमिक स्तर के शिक्षण-अधिगम में क्षेत्रीय भ्रमण की भूमिका. *प्राथमिक शिक्षक*. 46(4), पृ.सं. 12–21. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

गंगवार, एस. और ए. कुमार. 2022. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 : एक शिक्षणशास्त्रीय विश्लेषण अधिगम. 33, पृ.सं. 64–76.

गुप्ता, डी.के. 2024. कक्षा में बातचीत का शिक्षणशास्त्रीय महत्व. *प्राथमिक शिक्षक*. 48(2), पृ.सं. 69–75. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

गौतम, डी.डी. 2022. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की संप्राप्ति में गतिविधि आधारित अधिगम की उपादेयता. *प्राथमिक शिक्षक*. 46(2), पृ.सं. 85–95. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी. 2022. *टॉय बेस्ड पैडागॉजी : अ हैंडबुक— लर्निंग फॉर फन, जॉय एंड हॉलिस्टिक डेवलपमेंट पार्ट-I*. डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी. https://ncert.nic.in/pdf/notice/toy_based_pedagogy.pdf

तेवतिया, ए.के. 2023. खेल की शिक्षा और कक्षा में खेलना. *प्राथमिक शिक्षक*. 47(3), पृ.सं. 5–13. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

दत्ता, जे. तथा जे. दोवारह. 2025. एजुकेशनल एंड सोशल इनक्लूजन ऑफ लर्नर्स विद डाइवर्स लर्निंग नीड्स इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी. 2020. *समिखिया: अ मल्टिडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल*. 4(2), पृ.सं. 1–13.

मिनिस्ट्री ऑफ लॉ एंड जस्टिस (लेजिस्लेटिव डिपार्टमेंट). 2009. *द राइट ऑफ चिल्ड्रेन टू फ्री एंड कम्पलसरी एजुकेशन एक्ट 2009*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/rte.pdf

मेइती ए.पी. और अन्य. 2024. प्रैक्टिकल पैडागॉजिकल अप्रोचेज़ : इंटीग्रेटिंग प्ले-बेस्ड एंड एक्सपीरिएंशल लर्निंग ऐट प्री-प्राइमरी एजुकेशन ऐज पर एन.ई.पी. 2020 एंड एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022. *एडुमेनिया : एन इंटरनेशनल मल्टीडिसिप्लिनरी जर्नल*. 2(4), पृ.सं. 174–193.

यादव, पी. 2023. खेल-खेल में पूर्व-प्राथमिक शैक्षिक क्रियाओं का संचालन. *प्राथमिक शिक्षक*. 47(1), पृ.सं. 15–24. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. विद्यालयी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए कला समेकित शिक्षा. *प्राथमिक शिक्षक*. 48(1), पृ.सं. 78–90. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

रॉय, एम.एम., एम. सहरावत और चित्रेरेखा. 2024. स्वदेशी खेल-खिलौनों के माध्यम से अधिगम की संप्राप्ति एक प्रायोगिक अध्ययन. *प्राथमिक शिक्षक*. 48(2), पृ.सं. 17–25. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2020. *इन्क्लूजन इन एजुकेशन— अ मैनुअल फॉर स्कूल मैनेजमेंट कमेटी*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/announcement/Inclusion_in_Eduction.pdf

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://scert.cg.gov.in/pdf/ncf-2022/NCF-FS-Hindi-Ver23Dec22.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep_update/NEP_final_HI_0.pdf

सिंह, एस.एन., एन. पटेल और जी. राव. 2023. खेल गतिविधियों का विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर प्रभाव. *प्राथमिक शिक्षक*. 47(3), पृ.सं. 14–21. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

श्रीवास्तव, आर. और बी. आनंद. 2022. *मनोविज्ञान, शिक्षा तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ*. मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, नई दिल्ली.

2

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए नाइजीरियाई पाठ्यक्रम

ईशिता यादव*

नाइजीरियाई शिक्षा प्रणाली में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के स्तर शामिल हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा इस प्रणाली की नींव है। नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा छोटे बच्चों के लिए एक मजबूत शैक्षणिक आधार तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह उनकी संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक क्षमताओं को विकसित करने में मदद करती है। अनुसंधान से पता चला है कि जिन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा मिलती है, वे बाद के वर्षों में अकादमिक रूप से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह विद्यालय छोड़ने की दर को कम करने और भविष्य में रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाने में भी मदद करती है। इसके अलावा, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा आजीवन सीखने और आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ावा देती है, जो आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में सफलता के लिए आवश्यक हैं। यह बच्चों में रचनात्मकता और नवाचार को भी बढ़ावा देती है। इसलिए, नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में निवेश राष्ट्र के समग्र विकास और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है। यह एक मजबूत और स्थायी शैक्षणिक प्रणाली बनाने की कुंजी है जो बच्चों को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए तैयार कर सकती है। प्रस्तुत लेख में नाइजीरियाई शिक्षा प्रणाली में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम की जानकारी दी गई है।

नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) छह साल से कम उम्र के बच्चों के लिए डिजाइन किए गए शैक्षणिक कार्यक्रमों और रणनीतियों को संदर्भित करती है। यह संज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और भाषा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में छोटे बच्चों के समग्र विकास पर केंद्रित है। ई.सी.ई. बच्चों के भविष्य की शिक्षा और सफलता के लिए एक मजबूत आधार तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह बच्चे की क्षमता को पोषित करने और उन्हें औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के लिए तैयार करने में मदद करती है।

**उप-प्रधानाचार्या*, इंडियन लैंग्वेज स्कूल लागोस, नाइजीरिया 100 252

नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और पाठ्यक्रम के मुख्य पहलू

खेल-आधारित शिक्षा के अंतर्गत नाइजीरियाई (ई.सी.ई.) पाठ्यक्रम शिक्षा के केंद्रीय घटक के रूप में खेल के उपयोग पर जोर देना है। खेल की गतिविधियों को बच्चों के व्यावहारिक अनुभवों में शामिल करने के लिए डिजाइन किया गया है जो उनके संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास का समर्थन करते हैं। बहुसंवेदी दृष्टिकोण में पाठ्यक्रम में विभिन्न संवेदी तरीकों को पूरा करने वाली गतिविधियाँ शामिल हैं, जैसे— दृश्य, श्रवण और गतिक। यह दृष्टिकोण छोटे बच्चों की विविध शिक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करता है।

नाइजीरिया में ई.सी.ई. पाठ्यक्रम एक समग्र शिक्षा अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न विषयों और क्षेत्रों को एकीकृत करता है। इसमें साक्षरता, संख्यात्मकता, विज्ञान, कला और शारीरिक शिक्षा से संबंधित गतिविधियाँ शामिल हैं। पाठ्यक्रम एक बाल-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाता है जो व्यक्तिगत बच्चों के हितों, आवश्यकताओं और शक्तियों पर केंद्रित है। शिक्षक सुविधाकर्ता के रूप में काम करते हैं जो निर्देशित गतिविधियों के माध्यम से बच्चों की खोज और सीखने का समर्थन करते हैं।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा से संबंधित शिक्षा की राष्ट्रीय नीति की समीक्षा

नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, शिक्षा की राष्ट्रीय नीति द्वारा शासित है, जो जन्म से छह साल तक के बच्चों के लिए शैक्षणिक कार्यक्रमों के विकास और कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश और नियम प्रदान करती है। नीति बच्चों की भविष्य की शैक्षणिक सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार करने में गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के महत्व पर जोर देती है।

समग्र विकास को बढ़ावा देना

इसका प्राथमिक उद्देश्य छोटे बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और रचनात्मक पक्षों का समुचित विकास करना है। प्रारंभिक शिक्षा के माध्यम से बच्चे न केवल पढ़ाई में, बल्कि अपने आस-पास के समाज से संवाद करना, भावनाओं को समझना और रचनात्मक ढंग से सोचना सीखते हैं। यह संपूर्ण विकास बाद की शिक्षा और जीवन में सफलता के लिए आधार तैयार करता है। नाइजीरिया में बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम बच्चों के लिए ऐसा वातावरण उपलब्ध कराते हैं, जिसमें वे सुरक्षित महसूस करते हैं और पोषणयुक्त अनुभव पाते हैं। इससे बच्चों में आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना विकसित होती है, जो आगे की शिक्षा में उन्हें सहायक सिद्ध होती है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा बच्चों को औपचारिक विद्यालय प्रणाली में प्रवेश के लिए तैयार करती है। वे पढ़ना, लिखना, गणना करना और अपने विचार व्यक्त करना सीखते हैं। यह शिक्षा बच्चों में अनुशासन, नैतिक सोच और सीखने की प्रबल इच्छा को विकसित करती है।

अभिभावक की भागीदारी को बढ़ावा देना

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि माता-पिता बच्चे के पहले शिक्षक होते हैं। जब माता-पिता शिक्षकों के साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो बच्चे की सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी और संतुलित

बनती है। नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों में माता-पिता की सहभागिता को कई तरीकों से प्रोत्साहित किया जाता है— जैसे नियमित अभिभावक-शिक्षक बैठकें, बच्चों के सीखने की प्रगति पर संवाद, घर पर सीखने के लिए सहयोग और विद्यालयी गतिविधियों में भागीदारी। इससे बच्चों में पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों का विकास होता है, आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपने परिवार तथा समुदाय के साथ मजबूत संबंध स्थापित करते हैं। साथ ही, शिक्षक और अभिभावकों के बीच संचार में सुधार होता है, जिससे बच्चे की शैक्षिक आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझा और पूरा किया जा सकता है। अभिभावक की सक्रिय भूमिका बच्चों के भावनात्मक और सामाजिक विकास को भी प्रोत्साहित करती है, जिससे वे विद्यालय जीवन में अधिक सफल और संतुलित बनते हैं।

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों का समर्थन करना

इन कार्यक्रमों में समावेशी वातावरण देने का प्रयास किया जाता है, जिससे सभी बच्चों चाहे वे किसी भी प्रकार की विशेष आवश्यकता या दिव्यांगता वाले हों, सभी को उपयुक्त सीखने के अवसर मिल सकें। शिक्षा कार्यक्रम बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उन्हें सहयोग व समर्थन प्रदान करते हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास एवं स्वावलंबन जन्म लेता है। यह उद्देश्य नाइजीरिया में एक सशक्त, समावेशी और संवेदनशील प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की नींव रखते हैं, जो बच्चों के संपूर्ण विकास, सामाजिक समावेशन और जीवन-भर की सीखने की क्षमता को सशक्त बना सकती है। इन दिशानिर्देशों का पालन करके, नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रख सकती है।

पाठ्यक्रम संरचना और घटक

जब प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए नाइजीरियाई पाठ्यक्रम की बात आती है, तो ढाँचा युवा विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया है। संरचना एक समग्र दृष्टिकोण के चारों ओर घूमती है जो बच्चों के शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास पर केंद्रित है। पाठ्यक्रम के घटकों में खेल-आधारित शिक्षा, व्यावहारिक गतिविधियाँ और इंटरैक्टिव अनुभव शामिल हैं जो अनुसंधान और अन्वेषण को प्रोत्साहित करते हैं।

विषय संरचना

कक्षा	पढ़ाए जाने वाले विषय
प्राथमिक 1–3	• अंग्रेजी • गणित • एक नाइजीरियाई भाषा (जैसे— हौसा, योरूबा, इग्बो) • बुनियादी विज्ञान • शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा • ईसाई धार्मिक अध्ययन (ईसाई छात्रों के लिए)/इस्लामी अध्ययन (मुस्लिम छात्रों के लिए) • नाइजीरियाई इतिहास • सामाजिक और नागरिकता अध्ययन • सांस्कृतिक और रचनात्मक कला • अरबी भाषा (वैकल्पिक)
प्राथमिक 4–6	• अंग्रेजी अध्ययन • गणित • एक नाइजीरियाई भाषा • बुनियादी विज्ञान और प्रौद्योगिकी • शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा • बुनियादी डिजिटल साक्षरता/आई.सी.टी. • ईसाई धार्मिक अध्ययन/इस्लामी अध्ययन • नाइजीरियाई इतिहास • सामाजिक और नागरिकता अध्ययन • सांस्कृतिक और रचनात्मक कला • पूर्व-व्यावसायिक अध्ययन • फ्रेंच भाषा (वैकल्पिक) • अरबी भाषा (वैकल्पिक)

पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक और स्थानीय सामग्री का एकीकरण

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए नाइजीरियाई पाठ्यक्रम का एक मुख्य पहलू सांस्कृतिक और स्थानीय सामग्री का समावेश है। यह सुनिश्चित करता है कि बच्चे अपनी विरासत, परंपराओं और मूल्यों के बारे में सीखते हुए विविधता की सराहना भी करें। कहानियों, गीतों, नृत्यों और समारोहों के माध्यम से, बच्चे विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं और विश्वासों से परिचित होते हैं। स्थानीय भाषाओं को भी पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाता है, ताकि स्वदेशी भाषाओं को संरक्षित और बढ़ावा दिया जा सके और बहुभाषिकता को बढ़ावा दिया जा सके। सांस्कृतिक तत्वों को शामिल करके, पाठ्यक्रम युवा विद्यार्थियों के बीच समावेशिता, सम्मान और पहचान की भावना को बढ़ावा देता है। वास्तव में, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए नाइजीरियाई पाठ्यक्रम एक व्यापक ढाँचा प्रदान करता है जो बच्चों के समग्र विकास को पूरा करता है। विभिन्न विषयों पर ध्यान केंद्रित करके, सांस्कृतिक सामग्री को एकीकृत करके और विविधता को बढ़ावा देकर, पाठ्यक्रम युवा विद्यार्थियों को एक विविध और अंतर्संबंधित दुनिया के लिए तैयार करता है। खेल, अन्वेषण और व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से, बच्चे आवश्यक कौशल और ज्ञान विकसित करने में सक्षम होते हैं जो उनके पूरे जीवन में उनके काम आएँगे।

डिजिटल नवाचार का समावेश

आधुनिक युग में तकनीकी उपकरणों का शिक्षण में समावेश अनिवार्य हो गया है। नाइजीरियाई पाठ्यक्रम में डिजिटल लर्निंग टूल्स, जैसे— टैबलेट्स, शैक्षिक ऐप और इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड का उपयोग बच्चों के सीखने के अनुभव को समृद्ध करता है। प्राथमिक 4–6 की कक्षाओं में बुनियादी डिजिटल साक्षरता और आई.सी.टी. को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है, जो बच्चों को 21वीं सदी के कौशलों से लैस करता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से बच्चे इंटरैक्टिव शिक्षण सामग्री तक पहुँच प्राप्त करते हैं, जो उनकी रुचि और सहभागिता को बढ़ाता है। शैक्षिक गेम्स और एनिमेशन बच्चों को जटिल अवधारणाओं को सरल और मनोरंजक तरीके से समझने में मदद करते हैं। साथ ही, डिजिटल उपकरण शिक्षकों को विद्यार्थियों की प्रगति पर नजर रखने, व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ तैयार करने और अभिभावकों के साथ प्रभावी संवाद स्थापित करने में सहायता प्रदान करते हैं।

शिक्षण विधियाँ

खेल-आधारित शिक्षण विधि छोटे बच्चों के लिए सबसे स्वाभाविक और प्रभावी सीखने का तरीका मानी जाती है। खेल के माध्यम से बच्चे अनुभव प्राप्त करते हैं, समस्या-समाधान सीखते हैं, रचनात्मकता दिखाते हैं और सामाजिक कौशल विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, भूमिका निभाना, निर्माणात्मक खेल और समूह गतिविधियाँ बच्चों के संज्ञानात्मक तथा भावनात्मक विकास में सहायक होती हैं। कहानियों के माध्यम से बच्चों को नैतिक मूल्यों, भाषा, शब्दावली और कल्पनाशक्ति से परिचित कराया जाता है। यह न केवल बच्चों की भाषा दक्षता बढ़ाती है, बल्कि उनमें सुनने, समझने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता भी विकसित करती है।

संवादात्मक शिक्षण विधि में शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच सक्रिय संवाद को बढ़ावा दिया जाता है। प्रश्नोत्तर, चर्चा और समूह प्रस्तुति के माध्यम से बच्चे अपने विचार व्यक्त करना और दूसरों के दृष्टिकोण को समझना सीखते हैं। चित्रकला, नृत्य और संगीत जैसी कलात्मक गतिविधियाँ बच्चों की रचनात्मकता, मोटर स्किल्स और आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा देती हैं। यह विधि बच्चों के भावनात्मक संतुलन और आत्मविश्वास को भी मजबूत करती है। अनुभवात्मक शिक्षण विधि में बच्चों को वास्तविक जीवन के अनुभवों के माध्यम से सिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, बगीचे में पौधों की देखभाल करना, पानी के प्रयोगों से विज्ञान समझना या बाजार की यात्रा से गणना और सामाजिक व्यवहार सीखना। तकनीकी सहायता से आधुनिक शिक्षा में श्रव्य-दृश्य उपकरणों, स्मार्ट बोर्ड और शैक्षणिक एप्लिकेशनों का प्रयोग बच्चों की रुचि और सीखने की गति को बढ़ाता है। यह विधि विशेष रूप से भाषा और गणित के मूलभूत सिद्धांतों को सिखाने में प्रभावी है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास

नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास में निवेश की भी आवश्यकता है। निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षकों को नए ज्ञान, कौशल और रणनीतियों के साथ प्रदान करते हैं। बाल विकास, पाठ्यक्रम योजना और मूल्यांकन तकनीकों पर प्रशिक्षण शिक्षण प्रथाओं को बढ़ाता है। नवाचार दृष्टिकोणों को लागू करने और खेल-आधारित शिक्षा को शामिल करने में शिक्षकों के लिए समर्थन। सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए साथियों के साथ सलाह कार्यक्रम और सहयोग के अवसर।

भविष्य के शिक्षकों को तैयार करने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को शामिल करना। कुल मिलाकर, नियोजित शिक्षण विधियाँ, खेल-आधारित शिक्षा पर जोर और चल रहे शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की गुणवत्ता में योगदान देते हैं और छोटे बच्चों के समग्र विकास को सुविधाजनक बनाते हैं।

मूल्यांकन

नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए बच्चों की प्रगति और सीखने का आकलन करने के लिए कई विधियाँ अपनाई जाती हैं, जिन्हें विस्तार से नीचे स्पष्ट किया गया है। शिक्षक बच्चों के व्यवहार, वार्तालाप और गतिविधियों में सहभागिता को ध्यानपूर्वक देखते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों की सीखने की शैली, उनकी रुचियाँ और सामाजिक व्यवहार को समझने में मदद करती है। इससे शिक्षक वास्तविक समय में बच्चे की सीखने की प्रगति का आकलन कर पाते हैं।

खेल के माध्यम से मूल्यांकन— बच्चों के खेल को देखकर उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास का मूल्यांकन किया जाता है। खेल के दौरान बच्चे कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, टीमवर्क, समस्या समाधान और रचनात्मकता को समझा जाता है। यह विधि बच्चों की स्वाभाविक नेतृत्व क्षमता

और सीखने की प्रक्रिया का ठोस संकेत देती है। पोर्टफोलियो मूल्यांकन— 'इसमें शिक्षक बच्चों द्वारा किए गए कार्यों, कलाकृतियों, लिखावट, प्रोजेक्ट्स आदि को एकत्र कर एक फोल्डर या दस्तावेज तैयार करते हैं। यह पोर्टफोलियो बच्चे की शिक्षा यात्रा का संपूर्ण दृश्य देता है, जिससे उसकी प्रगति, रुचियाँ और सुधार के क्षेत्र स्पष्ट होते हैं। मानकीकृत परीक्षण— कुछ विद्यालय बच्चों के भाषा, गणित या अन्य शैक्षणिक कौशल के नियतांकित परीक्षण लेते हैं। इसके माध्यम से बच्चों की योग्यता का निरपेक्ष मूल्यांकन किया जाता है, जिससे उनके ज्ञान के स्तर की वस्तुनिष्ठ जानकारी मिलती है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में निरंतर मूल्यांकन का महत्व

व्यक्तिगत शिक्षा— निरंतर मूल्यांकन यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षक प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों को पहचान सकें। इससे शिक्षक अपनी शिक्षा पद्धति को बच्चे के स्तर व रुचियों के अनुरूप बना सकते हैं, जिससे सीखना अधिक प्रभावी होता है।

प्रगति की निगरानी

लगातार मूल्यांकन करने से शिक्षक बच्चे की शैक्षिक और विकासात्मक प्रगति को समय-समय पर देख सकते हैं। यह उन्हें यह समझने में मदद करता है कि बच्चा किस क्षेत्र में सुधार कर रहा है और किस क्षेत्र में उसे अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है।

प्रारंभिक हस्तक्षेप

यदि किसी बच्चे को सीखने में कठिनाई या विकासात्मक देरी है तो निरंतर मूल्यांकन से इन समस्याओं की पहचान जल्दी हो जाती है। इससे आवश्यक सहायता और हस्तक्षेप समय रहते उपलब्ध कराया जा सकता है, जिससे बच्चे की शिक्षा की बाधाएँ कम होती हैं।

माता-पिता की भागीदारी

बच्चों के प्रगति की रिपोर्ट और नियमित जानकारी माता-पिता को मिलती है। इससे वे बच्चे की शिक्षा में सक्रिय रूप से सहभागिता कर सकते हैं, घर पर सहयोग दे सकते हैं और बच्चे की शैक्षिक आवश्यकताओं को बेहतर समझ सकते हैं। इस प्रकार, उपरोक्त विधियाँ और निरंतर मूल्यांकन शिक्षा की गुणवत्ता और बच्चों के बहु-आयामी विकास को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

नाइजीरिया में युवा विद्यार्थियों के आकलन में चुनौतियों की व्याख्या

कई नाइजीरियाई विद्यार्थियों में आयु-उपयुक्त परीक्षण सामग्री, खिलौने, पज़ल, चित्र कार्ड या डिजिटल उपकरणों जैसे उचित मूल्यांकन संसाधन नहीं होते हैं। इसका मतलब है कि शिक्षक बच्चों की वास्तविक क्षमताओं का सही आकलन नहीं कर पाते, क्योंकि उनके पास उपयुक्त साधन नहीं होते। बहुत से शिक्षकों को बाल विकास मूल्यांकन तकनीकों में समुचित प्रशिक्षण नहीं मिलता है। वे नहीं जानते कि अवलोकन कैसे करें, विकासात्मक मील के पत्थर की पहचान कैसे करें या मूल्यांकन परिणामों की सही व्याख्या कैसे करें। यह शिक्षकों को सामान्य विकास पैटर्न और विशेष आवश्यकताओं के बीच अंतर करने में भी असमर्थ बना सकता है। कई विद्यालयों में उचित

कक्षा स्थान, प्रकाश व्यवस्था या निजी मूल्यांकन क्षेत्र नहीं होते हैं, जो प्रभावी मूल्यांकन के लिए आवश्यक हैं। बालक और बालिकाओं के लिए अलग-अलग व्यवहार और क्षमताओं को निर्धारित कर सकती हैं, जो मूल्यांकन परिणामों को प्रभावित कर सकती हैं। विभिन्न जातीय समूह— नाइजीरिया में 250 से ज्यादा जातीय समूह हैं (योरूबा, हौसा, इग्बो आदि)। प्रत्येक की अपनी परंपराएँ हैं जो बच्चों के व्यवहार और सीखने के तरीकों को प्रभावित करती हैं। नाइजीरिया में 500 से ज्यादा भाषाएँ बोली जाती हैं, जो मूल्यांकन को बेहद जटिल बनाती हैं।

बच्चे घर पर स्थानीय भाषा बोल सकते हैं, लेकिन विद्यालय में अंग्रेजी (आधिकारिक शिक्षा भाषा) में मूल्यांकन किया जाता है। यह उनकी वास्तविक क्षमताओं को छिपा सकता है। एक बच्चा जो अवधारणा को पूरी तरह समझता है, वह इसे अंग्रेजी में व्यक्त करने में असमर्थ हो सकता है, जिससे गलत तरीके से कम प्रदर्शन का आकलन हो सकता है। अधिकांश मूल्यांकन उपकरण अंग्रेजी में विकसित किए गए हैं और सभी नाइजीरियाई भाषाओं में अनुवाद या सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित नहीं हैं।

आर्थिक असमानताएँ मूल्यांकन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बाधाएँ पैदा करती हैं। गरीब परिवारों के बच्चों को किताबों, शैक्षिक खिलौनों या उत्तेजक वातावरण तक पहुँच नहीं मिल सकती है, जो उनके विकास को प्रभावित करता है और मूल्यांकन पर खराब प्रदर्शन की ओर ले जाता है। कुपोषण, अनुपचारित स्वास्थ्य समस्याएँ और खराब रहने की स्थिति संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करती हैं, जिससे बच्चे की सच्ची क्षमता बनाम परिस्थितिजन्य सीमाओं को अलग करना कठिन हो जाता है। वंचित बच्चों को घरेलू जिम्मेदारियों, काम या विद्यालय की फीस की कमी के कारण विद्यालय छोड़ना पड़ सकता है, जिससे सीखने में अंतराल होता है।

अभिभावक की भागीदारी

गरीब परिवारों में अभिभावक शिक्षित नहीं हो सकते हैं या अपने बच्चों की शिक्षा में भाग लेने के लिए समय नहीं दे सकते हैं; जो प्रारंभिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। धनी परिवार, निजी स्कूलों, ट्यूटर और विशेष मूल्यांकन सेवाओं का खर्च उठा सकते हैं, जबकि गरीब बच्चे अधिक भीड़भाड़ वाली सार्वजनिक सुविधाओं पर निर्भर हैं।

सुधार के लिए संभावित समाधान और सिफारिशें

- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में बढ़ा हुआ सरकारी वित्तपोषण और निवेश।
- विद्यालयी बुनियादी ढाँचे में सुधार और शिक्षा सामग्री का प्रावधान।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षकों के लिए बेहतर प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के महत्व को उजागर करने के लिए सार्वजनिक जागरूकता अभियान।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और मूल्यांकन ढाँचे का विकास।

इन चुनौतियों से निपटने में सरकार, अभिभावक और हितधारकों की भूमिका

सरकार प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा का समर्थन करने के लिए आवश्यक संसाधन, नीतियाँ और वित्तपोषण

प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्हें राष्ट्रीय विकास एजेंडे में इस क्षेत्र को प्राथमिकता देनी चाहिए और पर्याप्त बजटीय आवंटन करना चाहिए। अभिभावकों की जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हों, एक सहायक घरेलू वातावरण प्रदान करें और विद्यालय गतिविधियों में भाग लें। उन्हें अपने समुदायों में गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की वकालत भी करनी चाहिए। शिक्षा की सफलता में अभिभावकों और समुदाय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। नाइजीरियाई पाठ्यक्रम में अभिभावकों के लिए जागरूकता कार्यक्रम, पैरेंटिंग वर्कशॉप और सामुदायिक सहभागिता अभियानों को शामिल किया गया है। इससे बच्चों को एक स्थिर और सहायक वातावरण मिलता है, जो उनके विकास के लिए आवश्यक है। गैर-सरकारी संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों और सामुदायिक नेताओं सहित हितधारक प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में सुधार के लिए सरकार के साथ सहयोग करके योगदान दे सकते हैं। वे कार्यक्रमों और सेवाओं की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए वित्तीय सहायता, विशेषज्ञता और वकालत प्रदान कर सकते हैं। संक्षेप में, नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियों से निपटने के लिए सरकार, अभिभावक और हितधारकों के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। एक साथ काम करके और सुझाए गए समाधानों को लागू करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा मिले, जो उनकी भविष्य की सफलता के लिए एक मजबूत आधार तैयार करे।

निष्कर्ष

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए नाइजीरियाई पाठ्यक्रम बच्चों को उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक कौशल को विकसित करने वाली गतिविधियों के माध्यम से औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करने पर केंद्रित है। यह नाइजीरियाई बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए व्यापक, आयु-उपयुक्त और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। पाठ्यक्रम में संख्यात्मकता, साक्षरता, विज्ञान, कला, संगीत, शारीरिक शिक्षा और सामाजिक अध्ययन जैसे विषय शामिल हैं। यह खेल-आधारित शिक्षा, बाल-केंद्रित दृष्टिकोण और समग्र विकास के महत्व पर भी जोर देता है। अनुसंधान से पता चला है कि जिन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा मिलती है, उनके विद्यालय में सफल होने, बेहतर सामाजिक और भावनात्मक कौशल रखने और समाज में सकारात्मक योगदान देने की अधिक संभावना होती है। प्रारंभिक वर्षों में एक मजबूत आधार तैयार करके, देश एक कुशल कार्यबल का निर्माण कर सकते हैं, गरीबी को कम कर सकते हैं और आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा उपलब्धि की खाई को कम करने, स्वास्थ्य परिणामों में सुधार करने और अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज को बढ़ावा देने में भी मदद करती है। इसलिए, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में निवेश न केवल व्यक्तिगत बच्चों के लिए, बल्कि राष्ट्र के समग्र विकास और समृद्धि के लिए भी फायदेमंद है।

संदर्भ

अकिनवेयर, एम. 2018. नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा : नीति कार्यान्वयन और चुनौतियाँ. *अफ्रीकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट*. 11(2), पृ.सं. 45–59.

ओकोह, बी.ए. 2020. नाइजीरियाई प्रीस्कूल्स में खेल-आधारित शिक्षण और प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्ली इयर्स एजुकेशन*. 28(4), पृ.सं. 378–391.

ओगुनेमी, एफ.टी. और एल. रेगपोट. 2015. नाइजीरियाई प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में कार्यबल तैयारी और व्यावसायिक विकास. *साउथ अफ्रीकन जर्नल ऑफ चाइल्डहुड एजुकेशन (संस्करण 14)*. 5(2), पृ.सं. 61–79.

नाइजीरियन एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट काउंसिल. 2013. *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड डेवलपमेंट पाठ्यक्रम*. नाइजीरियन एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट काउंसिल, अबुजा.

फेडरल रिपब्लिक ऑफ नाइजीरिया. 2014. *शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (6वाँ संस्करण)*. नाइजीरियन एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमेंट काउंसिल.

यूनिसेफ, नाइजीरिया. 2017. *नाइजीरिया में प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास : स्थिति विश्लेषण और नीतिगत सिफारिशें*. यूनिसेफ, अबुजा, नाइजीरिया.

यूनेस्को. 2021. *सभी के लिए शिक्षा : वैश्विक निगरानी रिपोर्ट— उप-सहारा अफ्रीका में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा*. यूनेस्को, पेरिस.

——— और यूनिसेफ. 2016. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : नीतियों और प्रथाओं की वैश्विक समीक्षा*. यूनिसेफ, न्यूयॉर्क.

राष्ट्रीय सांख्यिकी ब्यूरो. 2022. *नाइजीरिया शिक्षा सांख्यिकी डाइजेस्ट 2021–2022*. अबुजा, नाइजीरिया.

वर्ल्ड बैंक. 2019. *नाइजीरिया शिक्षा क्षेत्र विश्लेषण : प्रदर्शन और मुख्य मुद्दों का विश्लेषणात्मक संश्लेषण*. वर्ल्ड बैंक, वाशिंगटन डीसी, अमेरिका.

3

बाल मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में मातृभाषा में शिक्षा का प्रभाव

कृष्ण चंद्र चौधरी*

मातृभाषा किसी भी बच्चे के संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक और भावनात्मक विकास की आधारशिला होती है, जो उसकी सोच, समझ और अभिव्यक्ति को प्रारंभिक दिशा प्रदान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और बुनियादी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 इस तथ्य को स्वीकारते हुए प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा की भूमिका को केंद्र में रखती हैं। यह शोध-पत्र बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतों और व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर यह समझने का प्रयास करता है कि मातृभाषा में शिक्षा देना बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को कैसे सहज, प्रभावी और सृजनात्मक बनाता है। पियाजे, वायगोत्स्की और ब्रूनर जैसे मनोवैज्ञानिकों के विचारों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि जब बच्चे अपनी परिचित भाषा में सीखते हैं, तो वे अधिक आत्मविश्वास के साथ ज्ञान को आत्मसात करते हैं। इसमें उन चुनौतियों, अवसरों और शैक्षिक नवाचारों पर भी चर्चा की गई है जो मातृभाषा आधारित शिक्षण के क्रियान्वयन में सामने आते हैं। मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना न केवल बच्चों के अधिकारों की रक्षा करता है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता और समानता को भी सुनिश्चित करता है। यह दृष्टिकोण भाषायी विविधता को सम्मान देते हुए त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बहुभाषिकता, सांस्कृतिक एकता और वैश्विक संवाद को भी सुदृढ़ करता है। इस प्रकार, यह नीति शिक्षा को स्थानीय अनुभवों से जोड़कर वैश्विक क्षितिज की ओर ले जाने वाली समावेशी एवं दूरदर्शी पहल के रूप में सामने आई है।

बचपन जीवन का वह महत्वपूर्ण चरण होता है जिसमें सीखने, समझने एवं सोचने की बुनियाद रखी जाती है और इसी अवस्था में बच्चे सबसे अधिक संवेदनशील और ग्रहणशील होते हैं। वे जिस भाषा को अपने घर, परिवार और समुदाय में प्रतिदिन सुनते और बोलते हैं, वही उनकी मातृभाषा बन जाती है जो उनके अनुभवों, अभिव्यक्तियों और भावनाओं की पहली अभिव्यक्ति होती है। बच्चों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भाषायी विकास में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि यह न केवल उसकी सोच को दिशा देती है, बल्कि उसे अपने आस-पास की दुनिया को समझने और उससे जुड़ने में सहायता भी करती है।

**विभागाध्यक्ष*, मनोविज्ञान विभाग, सहजानंद ब्रह्मर्षि महाविद्यालय, आरा, बिहार 802 301

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 इस तथ्य को स्वीकार करते हुए यह सिफारिश करती हैं कि प्रारंभिक कक्षाओं तक बच्चों को उनकी मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि उनका बौद्धिक और भावनात्मक विकास सहज, संतुलित और प्राकृतिक रूप से हो सके। बाल मनोविज्ञान के अनुसार, जब बच्चों को उसकी अपनी भाषा में पढ़ाया जाता है, तो वह विषयवस्तु को बेहतर समझ पाते हैं, अपनी जिज्ञासाओं को सहजता से व्यक्त करते है और उनका आत्मविश्वास भी स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। इस संदर्भ में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक दूरदर्शी और परिवर्तनकारी कदम है, जो शिक्षा को अधिक समावेशी, संवेदनशील और रचनात्मक बनाने की दिशा में मातृभाषा को केंद्र में रखती है। इस नीति के माध्यम से त्रिभाषा-सूत्र को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो न केवल भाषाई समावेशन को बल देता है, बल्कि बच्चों की सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव और विविध भाषाओं के सम्मान को भी प्रोत्साहित करता है। मातृभाषा आधारित शिक्षा के इस दृष्टिकोण से बच्चों के सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है और उनकी पहचान मजबूत होती है, जिससे वे अपने अनुभवों को बेहतर रूप में समझते और अभिव्यक्त कर पाते हैं।

मातृभाषा का शैक्षिक महत्व

मातृभाषा में शिक्षा बच्चों को उसके जीवन के वास्तविक अनुभवों, सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक मूल्यों से सहज रूप में जोड़ती है, क्योंकि यही वह भाषा होती है जिसमें वह बचपन से सोचता, समझता और अपने विचारों को व्यक्त करता है। यह भाषा उसके मनोविज्ञान की नींव होती है, जिससे वह दुनिया को समझने और उसमें अपनी भूमिका तय करने की प्रक्रिया शुरू करता है। विभिन्न शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि जब बच्चे को उसकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है तो उसकी स्मरणशक्ति तेज होती है, सोचने और समस्याएँ सुलझाने की क्षमता बढ़ती है और उसमें आत्मविश्वास तथा रचनात्मकता का विकास स्वाभाविक रूप से होता है। मातृभाषा बच्चों के लिए केवल बातचीत का साधन नहीं होती, बल्कि वह उनके विचारों को आकार देने और कल्पनाओं को उड़ान देने का सबसे सशक्त माध्यम बन जाती है। जब बच्चों को वही भाषा शिक्षण के लिए मिलती है जो उनके दिल और दिमाग से जुड़ी होती है, तो वे सीखने की प्रक्रिया में अधिक सक्रिय, सहज और गहराई से जुड़ जाते हैं, जिससे वे ज्ञान को न केवल जल्दी समझते हैं, बल्कि उसे लंबे समय तक आत्मसात भी करते हैं।

बाल मनोविज्ञान की अवधारणा और मातृभाषा

बाल मनोविज्ञान बच्चों की सोच, समझ, अधिगम और व्यवहार को जानने-समझने की एक वैज्ञानिक शाखा है, जो यह स्पष्ट करती है कि बच्चे अपने अनुभवों और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के माध्यम से किस प्रकार सीखते हैं और बाहरी दुनिया से कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। बचपन एक अत्यधिक ग्रहणशील अवस्था होती है जिसमें भाषा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि विचारों को आकार देने, उन्हें क्रमबद्ध करने और ज्ञान को समझने का आधार बनती है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में सुनते, बोलते

और सीखते हैं तो वह ज्ञान को अधिक प्रभावी ढंग से आत्मसात करते हैं, क्योंकि यही भाषा उनकी सोच और भावनाओं से सबसे निकट होती है। पियाजे का मत है कि बच्चे का संज्ञानात्मक विकास चरणबद्ध ढंग से होता है और भाषा इस विकास का अभिन्न हिस्सा होती है जो उसकी तार्किक क्षमता को दिशा देती है। वायगोत्स्की की 'निकटतम विकास क्षेत्र' की अवधारणा यह बताती है कि बच्चे सामाजिक सहयोग और संवाद के माध्यम से गहराई से सीखते हैं और यह संवाद तभी सार्थक होता है जब भाषा उनकी अपनी हो। ब्रूनर के अनुसार भाषा विचारों को संरचना देने का माध्यम है और इसके बिना अधिगम की प्रक्रिया अधूरी रह जाती है। जब बच्चों को अपनी मातृभाषा में सवाल पूछने, उत्तर देने और संवाद करने का अवसर मिलता है तो वे न केवल बेहतर ढंग से सीखते हैं, बल्कि आत्मविश्वास, रचनात्मकता और कल्पनाशीलता में भी उनका विकास होता है। बाल मनोविज्ञान इस विचार को सशक्त रूप से स्वीकार करता है कि भाषा सीखने की नींव है और उस नींव की सबसे मजबूत इकाई मातृभाषा होती है, जो बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में सबसे स्वाभाविक और प्रभावी माध्यम बनती है।

त्रिभाषा सूत्र और बहुभाषिकता

मातृभाषा बच्चों के सोचने, कल्पना करने और अपनी भावनाएँ व्यक्त करने की सबसे सहज और स्वाभाविक भाषा होती है, जो उसके संज्ञानात्मक और भाषायी विकास की मजबूत नींव रखती है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो वे न केवल खुद को अधिक सहज और आत्मीय अनुभव करते हैं, बल्कि वह अपने पूर्व अनुभवों को नए ज्ञान से जोड़कर गहराई से समझने लगते हैं जिससे उसका मानसिक और बौद्धिक विकास सुदृढ़ होता है। यह प्रक्रिया रचनावादी अधिगम की उस धारणा को बल देती है जिसमें ज्ञान केवल प्राप्त नहीं किया जाता, बल्कि व्यक्ति का निर्माण किया जाता है। मातृभाषा में पढ़ने वाले बच्चों की स्मरणशक्ति अधिक मजबूत होती है, क्योंकि वे सीखी गई अवधारणाओं को अपने दैनिक जीवन और अनुभवों से जोड़कर समझते हैं, जिससे उनकी समझ, अभिव्यक्ति और समस्या समाधान की क्षमता बेहतर होती है। वे अपने विचारों को अधिक आत्मविश्वास के साथ साझा करते हैं और कक्षा में संवाद तथा सहभागिता में भी अधिक सक्रिय रहते हैं। यह भाषा उनके सामाजिक अनुभव, पारिवारिक संवाद और स्थानीय जीवन से जुड़ी होती है, जिससे उन्हें पढ़ना-लिखना, सीखने की प्रक्रिया सहज लगती है और शब्दों का अर्थ गहराई से समझने में सुविधा मिलती है। इस प्रकार मातृभाषा के माध्यम से शिक्षित बच्चों में सीखने की गति, जिज्ञासा और आत्मनिर्भरता अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती है और वे शिक्षा को केवल सूचना नहीं, बल्कि अनुभव और समझ का माध्यम बना लेते हैं। ऐसी शिक्षा प्रणाली बच्चों के भीतर रचनात्मक सोच और विचारशीलता को विकसित करने का सबसे मजबूत आधार बनती है। इसी संदर्भ में, त्रिभाषा सूत्र की परिकल्पना कोठारी आयोग ने सबसे पहले प्रस्तुत की थी, जिसे बाद में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986 और 2020 में औपचारिक रूप से स्वीकार किया गया। इस सूत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को तीन भाषाएँ सीखने का अवसर मिलता है— पहली भाषा मातृभाषा या स्थानीय भाषा,

दूसरी हिंदी और तीसरी एक अन्य भारतीय या विदेशी भाषा। यह व्यवस्था बच्चों को केवल भाषायी कौशल नहीं देती, बल्कि उन्हें बहुसांस्कृतिक समझ, सामाजिक विविधता की स्वीकार्यता और वैश्विक दृष्टिकोण से भी समृद्ध बनाती है। त्रिभाषा सूत्र की एक विशेषता इसका लचीलापन है, जो यह सुनिश्चित करता है कि किसी एक भाषा को जबरन न थोपते हुए स्थानीय आवश्यकताओं, बच्चों की रुचियों और संसाधनों के अनुसार भाषाओं का चयन किया जाए। यह दृष्टिकोण भाषा को न केवल शिक्षा का माध्यम बनाता है, बल्कि एक ऐसा सेतु भी तैयार करता है जो स्थानीयता और वैश्विकता, सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक संवाद क्षमता के बीच संतुलन स्थापित करता है।

भाषायी संरक्षण और सांस्कृतिक उत्तराधिकार

मातृभाषा केवल शिक्षा प्राप्त करने का माध्यम नहीं बल्कि हमारी संस्कृति, परंपराओं और सामूहिक स्मृति को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का माध्यम भी होती है। इसके द्वारा लोकगीत, लोककथाएँ, रीति-रिवाज और पारंपरिक ज्ञान स्वाभाविक रूप से बच्चों तक पहुँचते हैं, जिससे वे अपने सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ाव महसूस करते हैं। जब बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ते हैं, तो वे न केवल विषय को बेहतर समझते हैं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों, इतिहास और समुदाय से भी आत्मीय संबंध स्थापित करते है। ऐसी शिक्षा प्रणाली उसके भीतर राष्ट्रीय चेतना, आत्मगौरव और पहचान की भावना को भी विकसित करती है। मातृभाषा में दी गई शिक्षा बच्चों को न केवल व्यक्तिगत रूप से मजबूत बनाती है, बल्कि वह उन्हें सामाजिक विविधता को सम्मान देने और एकता की भावना को आत्मसात करने की दिशा में भी प्रेरित करती है। इस प्रकार, मातृभाषा बच्चों के संपूर्ण विकास का आधार बनते हुए सांस्कृतिक उत्तराधिकार की रक्षा करती है और एक समरस, सशक्त तथा सजग नागरिक तैयार करने की भूमिका निभाती है।

सामाजिक-भावनात्मक विकास और मातृभाषा

मातृभाषा किसी भी बच्चे की सामाजिक और भावनात्मक पहचान की सबसे पहली कड़ी होती है, क्योंकि यही भाषा उसे उसके परिवार, समुदाय और आस-पास के वातावरण से प्रारंभ से जोड़ती है। जब बच्चे उसी भाषा में संवाद करते हैं जिसे वे सहजता से समझते और बोलते हैं, तो वे अपने अनुभवों को अधिक आत्मीयता और आत्मविश्वास के साथ प्रकट करते हैं। शिक्षा का माध्यम भी जब मातृभाषा होता है, तो बच्चे को यह महसूस होता है कि उसकी भाषा, संस्कृति और अभिव्यक्ति को मान्यता और सम्मान मिल रहा है, जिससे उसके भीतर सुरक्षा और अपनापन की भावना दृढ़ होती है। यह भाषा न केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम बनती है, बल्कि सामाजिक संबंधों को मजबूत करने, नैतिक सोच को दिशा देने और व्यावहारिक संवेदनाओं को विकसित करने का सशक्त जरिया भी बन जाती है। मातृभाषा में शिक्षा मिलने से घर और विद्यालय के बीच एक स्वाभाविक सांस्कृतिक पुल बनता है, जिससे बच्चे अपने व्यक्तिगत अनुभवों को सीखने की प्रक्रिया से जोड़कर शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण और जीवंत बना पाते हैं। यह भाषा उसके लिए केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि परंपराओं, मूल्यों और सामाजिक व्यवहार को सहजता से सीखने और

अपनाने का माध्यम बनती है। जब बच्चे को अपनी मातृभाषा में सीखने का अवसर मिलता है, तो वह न केवल शैक्षिक रूप से आगे बढ़ते हैं, बल्कि वह सामाजिक रूप से अधिक आत्मीय, नैतिक रूप से सजग और भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करते है।

शिक्षक की भूमिका

जब शिक्षक मातृभाषा में पढ़ाते हैं, तो वे बच्चों की भाषा, सोच और अभिव्यक्ति की शैली को सहजता से समझ पाते हैं, जिससे वे विषय को सरल और बच्चों की समझ के अनुरूप प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चों की जिज्ञासाओं को पहचानना और उनका उत्तर देना अधिक स्वाभाविक और प्रभावी हो जाता है, क्योंकि संवाद उसी भाषा में होता है जिसे वे पहले से जानते हैं। मातृभाषा शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच संवाद की दूरी को कम करती है और एक ऐसा वातावरण बनाती है जहाँ बच्चे खुलकर अपने विचार रख सकते हैं। शिक्षक जब कहानी, चित्र, गतिविधि, खेल और समूह-वार्ता जैसे तरीकों से पढ़ाते हैं, तो बच्चे सीखने में रुचि लेते हैं और सक्रिय भागीदारी करते हैं। कक्षा में जब बातचीत मातृभाषा में होती है, तो बच्चे एक-दूसरे को बेहतर समझते हैं और सहयोग की भावना भी विकसित होती है। इससे कक्षा में प्रश्न पूछने की प्रवृत्ति, रचनात्मक सोच और विचारों को खुलकर व्यक्त करने की स्वतंत्रता को बल मिलता है। शिक्षक मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा को केवल जानकारी देने का माध्यम नहीं, बल्कि बच्चों की सोच को आकार देने और भाषा कौशल को निखारने का अवसर बना देता है। इस प्रकार वे कक्षा का मार्गदर्शक बन जाते हैं जो बच्चों को उनकी भाषा में सीखने, समझने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

नीति, नवाचार और क्रियान्वयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि बच्चों को कक्षा 5 तक उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि उनका बौद्धिक विकास मजबूत आधार पर आगे बढ़ सके। इस दिशा में भारत सरकार ने प्रारंभिक साक्षरता और गणना मिशन की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत राज्यों को मातृभाषा आधारित शिक्षण सामग्री, गतिविधियाँ और मूल्यांकन उपकरण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। पंजाब, केरल और ओडिशा जैसे राज्यों ने स्थानीय भाषाओं में पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया है और साथ ही शिक्षकों को मातृभाषा में प्रभावी शिक्षण के लिए प्रशिक्षित करने हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाए हैं। भाषा आधारित मूल्यांकन ढाँचों का विकास करके यह सुनिश्चित किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और परिवेश से जुड़े रहकर अधिक गहराई से सीख सकें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 और विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में भी स्थानीय भाषा में शिक्षण योजनाओं, पद्धतियों और संसाधनों को विशेष स्थान दिया गया है। इन नवाचारों और नीतिगत प्रयासों का मूल उद्देश्य यही है कि शिक्षा बच्चों की भाषा, संस्कृति और पहचान के अनुकूल हो, जिससे उनका अधिगम अनुभवजन्य, समावेशी और व्यावहारिक बन सके।

प्रभावी कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

त्रिभाषा सूत्र की अवधारणा बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रभावशाली है, किंतु इसके सफल क्रियान्वयन में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयाँ सामने आती हैं जिनमें सबसे प्रमुख हैं प्रशिक्षित बहुभाषिक शिक्षकों की कमी, उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों का अभाव, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच संसाधनों की असमानता तथा माता-पिता की अंग्रेजी केंद्रित सोच और इसके प्रति झुकाव का होना। इन सभी चुनौतियों का समाधान तभी संभव है जब शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मातृभाषा आधारित शिक्षण की रणनीतियों को समुचित रूप से शामिल किया जाए, ताकि शिक्षक बच्चों की भाषायी पृष्ठभूमि को समझते हुए शिक्षा को सरल, प्रभावी और संप्रेषणीय बना सकें। साथ ही, समुदाय और अभिभावकों को यह समझाना भी आवश्यक है कि मातृभाषा केवल बोलचाल की भाषा नहीं, बल्कि बच्चों के मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास का आधार है। जब विद्यालय और परिवार मिलकर मातृभाषा को सीखने के माध्यम के रूप में स्वीकार करते हैं, तब बच्चों अधिक आत्मविश्वास से सीखते है और उसकी शैक्षिक गति भी तीव्र होती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में द्विभाषिक और त्रिभाषिक शिक्षण सामग्री का निर्माण एक व्यावहारिक समाधान बन सकता है जिससे अलग-अलग भाषायी पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी समान रूप से लाभान्वित हो सकें। तकनीक की सहायता से ऑडियो-विजुअल सामग्री, डिजिटल पाठ्यसामग्री और संवादात्मक संसाधनों का विकास कर बच्चों को ऐसे अनुभव आधारित अवसर दिए जा सकते हैं जो उन्हें रुचिकर और सहज रूप से सीखने में मदद करें। इन प्रयासों के माध्यम से मातृभाषा आधारित शिक्षा केवल नीति तक सीमित न रहकर व्यवहार में उतर सकेगी और एक प्रभावी शैक्षिक नवाचार के रूप में नई दिशा प्रदान करेगी।

निष्कर्ष

मातृभाषा केवल संवाद करने का माध्यम नहीं, बल्कि बच्चों के सोचने, समझने और सीखने की सबसे मजबूत नींव होती है, क्योंकि बच्चे उसी भाषा में सबसे पहले अपने अनुभवों को ग्रहण करते हैं। बाल मनोविज्ञान के सिद्धांत यह स्पष्ट करते हैं कि बच्चे वही सबसे अच्छे से सीखते हैं जो उनके लिए जाना-पहचाना हो और वह उनकी अपनी भाषा होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ इस विचार को अपनाते हुए मातृभाषा को प्रारंभिक शिक्षा का प्रमुख आधार मानती हैं, जो बच्चों की संपूर्ण क्षमताओं को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम बन सकती है। यदि इस नीति को व्यावहारिक रूप में क्रियान्वित किया जाए तो यह केवल शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि भाषायी समानता, सांस्कृतिक आत्मबोध और समावेशी विकास की दिशा में भी ठोस आधार तैयार करेगा। त्रिभाषा सूत्र इसी सोच पर आधारित एक ऐसा दृष्टिकोण है जो भारत की शिक्षा प्रणाली को भाषाई, शैक्षिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने की क्षमता रखता है। यह सूत्र मातृभाषा को शिक्षा का केंद्र बनाते हुए बच्चों के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को एक साथ

गति देता है और बहुभाषिकता, वैश्विक संवाद तथा सांस्कृतिक विविधता के बीच एक संतुलन स्थापित करता है। इस नीति को सफल बनाने के लिए शिक्षकों, नीति निर्माताओं और समाज के सभी हिस्सों को मिलकर सक्रिय भूमिका निभानी होगी, जिससे भारत का भविष्य भाषायी रूप से अधिक सक्षम, सांस्कृतिक रूप से अधिक सजग और शैक्षिक रूप से आत्मनिर्भर बन सके। वास्तव में मातृभाषा में शिक्षा देना केवल एक शैक्षणिक पहल नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संरक्षण और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है, जो त्रिभाषा सूत्र की आत्मा बनकर भारत को उसकी भाषायी विविधता के साथ एकजुटता की ओर अग्रसर करता है।

संदर्भ

कमिंस, जे. 2000. *लैंग्वेज, पावर एंड पेडागॉजली : बाइलिंगुअल चिल्ड्रेन इन द क्रॉसफायर, मल्टीलिंगुअल मैटर्स*. क्लेवेडन, मल्टीलिंगुअल मैटर्स, इंग्लैंड.

चौधरी, कृष्ण चंद्र. 2018. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल, विकास और शिक्षा*. बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना.

———. 2020. 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साँचे से होगा परिवर्तनकारी सुधार और दूरगामी प्रभाव.' *प्राथमिक शिक्षक*. अंक 4, पृ.सं. 17–25. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

पियाजे. 1952. *द आरिजिन ऑफ इंटेलीजेंस इन चिल्ड्रेन*. इंटरनेशनल यूनिवर्सिटीज प्रेस, न्यूयॉर्क.

बर्नर, जे.एस. 1966. *टूवार्ड ए थ्योरी ऑफ इंस्ट्रक्शन*. एम.ए., हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज.

महिला और बाल विकास मंत्रालय. 2013. *आई.सी.डी.एस. मिशन*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

यादव, पद्मा. 2020. 'प्राथमिक शिक्षा का बदलता स्वरूप : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'. *प्राथमिक शिक्षक*. अंक 4, पृ.सं. 26–35. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

यूनेस्को. 2016. इफ यू डोंट अंडरस्टैंड, हाऊ कैन यू लर्न? *ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट*. https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000243713

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF-FS-2022-English.pdf

———. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF-SE-2023-English.pdf

वाईगोत्स्की, एल.एस. 1978. *माइंड इन सोसायटी : द डेव्लपमेंट ऑफ हायर सायकोलोजिकल प्रोसेस*. एम.ए., हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज.

शर्मा, प्रेमपाल. 2021. *योजना*, '*शिक्षा नीति और भारतीय भाषाएँ*'. अंक : फरवरी. पृ.सं. 53–55. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

4

मातृभाषा आधारित प्राथमिक शिक्षा पर अभिभावकों के दृष्टिकोण का समालोचनात्मक अध्ययन

कुलदीप कुमार पाण्डेय*
ज्ञानेन्द्र कुमार**

बच्चे विद्यालय आने से पहले आस-पास के परिवेश की भाषा के माध्यम से अपनी समझ बनाते हैं। विद्यालय में उनके घर की भाषा/मातृभाषा को माध्यम बनाने से न केवल उनमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास होता है, अपितु उनमें आत्मविश्वास भी सुदृढ़ होता है। परंतु बच्चों की शैक्षणिक और व्यावसायिक संभावनाओं पर दीर्घकालिक प्रभाव के बारे में चिंताओं के कारण अभिभावकों की ओर से निरंतर प्रतिरोध बना हुआ है। अतः प्राथमिक विद्यालय में शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग पर अभिभावकों के दृष्टिकोण का समालोचनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस शोध में कथात्मक शोध डिजाइन अपनाया गया जिसका उद्देश्य यह विवेचना करना है कि अभिभावकों की मातृभाषा के संप्रत्यय तथा प्रयोग के प्रति क्या दृष्टिकोण हैं तथा इसके उपयोग के विरोध में कौन-कौन से कारक प्रभावी हैं। अध्ययन निष्कर्ष से प्रकट होता है कि भारत जैसे भाषायी विविधता वाले देश में मातृभाषा को शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग करने में अनेक चुनौतियाँ हैं। जैसे अभिभावकों की मातृभाषा की समझ में भिन्नता, अभिभावकों द्वारा बच्चों के भविष्य की व्यावसायिक संभावनाओं के कारण नकारात्मक दृष्टिकोण और समाज में शिक्षा माध्यम का अभिभावकों के सामाजिक प्रस्थिति से जोड़कर देखा जाना। निष्कर्षों के आधार पर, अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि अभिभावकों में मातृभाषा के प्रति सम्मान विकसित करना, भाषायी नीतियों का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन व सरकारी तथा निजी दोनों क्षेत्रों में अवसरों को बढ़ाना चाहिए। हालाँकि, यह लेख किसी शोध प्रक्रिया को नही अपनाता, परंतु एक आम दृष्टिकोण को दर्शाने का प्रयास है।

भारत दुनिया में अपनी विशाल सांस्कृतिक और भाषायी विविधता के लिए जाना जाता है। भारतीय संविधान अपनी आठवीं अनुसूची में 22 आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भाषाओं को सूचीबद्ध करके

*शोधार्थी (एम.एड.), शिक्षा विभाग (सी.आई.ई.), दिल्ली विश्वविद्यालय 110 007
**_सहायक आचार्य_, शिक्षा विभाग (सी.आई.ई.), दिल्ली विश्वविद्यालय 110 007

इस विविधता को मान्यता देता है। हालाँकि, भारत में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या इस आधिकारिक संख्या से कहीं अधिक है। 1971 की जनगणना के अनुसार देश-भर में 1,600 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। उनमें केवल 47 भाषाएँ ही विद्यालय में बच्चों की समझ का माध्यम बन सकीं हैं (*समझ का माध्यम*, पृष्ठ 1)।

भारत में भाषा और अस्मिता का संबंध बहुत गहरा है। बच्चे की भाषा और अस्मिता के संबंध को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि यदि बच्चे को उसकी मातृभाषा में अभिव्यक्ति का अधिकार व स्वीकृति नहीं मिलती तो इससे कहीं न कहीं उसकी अस्मिता खंडित होती है। बालक जन्म के साथ ही मातृभाषा अधिग्रहण सहज भाव से ही प्रारंभ कर देते हैं। इसलिए उन्हें उसी भाषा में पढ़ना-लिखना तथा बातों को समझना आसान हो जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा के महत्व को बताते हुए लिखा गया है कि "यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे अपनी घरेलू भाषा या मातृभाषा में जटिल विचारों को अधिक आसानी से समझ लेते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएँगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण भाषा के बीच किसी भी अंतर को समाप्त किया जा सके। घरेलू भाषा या मातृभाषा में पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध न होने पर जहाँ तक संभव हो शिक्षकों की विद्यार्थियों से संवाद की भाषा घरेलू/मातृभाषा ही होनी चाहिए।" शोध यह दर्शाते हैं कि बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उन्हें ऐसी भाषा में पढ़ाया जाता है जिसे वे अच्छी तरह समझते हैं, क्योंकि पाठ्यपुस्तकों की भाषा और बच्चों की अपनी भाषा व अनुभवों में गहरा अंतर होता है (*पढ़ने की दहलीज़ पर*, पृष्ठ 4)। यह दृष्टिकोण उन्हें बुनियादी अवधारणाओं को अधिक आसानी से समझने, मजबूत संज्ञानात्मक कौशल बनाने और आगे की शिक्षा के लिए एक ठोस आधार विकसित करने की अनुमति देता है (बारक और अन्य, 2014; एस्पोसिटो और बेकर-वॉर्ड, 2013; कोवेलमैन और अन्य, 2008)। जब बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है, तो वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने में सक्षम होते हैं। इससे एक अनुकूल सीखने का माहौल बनता है जहाँ वे आत्मविश्वास महसूस करते हैं (मॉरकॉम, 2017; कमिंस, 2021; ले पिशॉन और कैमबेल, 2022) और सामग्री से जुड़े होते हैं, जो बदले में जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा का उपयोग करने से बच्चे की आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमताओं और समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ावा मिलता है। यह उन्हें अपनी मातृभाषा में सीखे गए कौशल को अन्य भाषाओं में स्थानांतरित करने में भी सक्षम बनाता है, जिससे बाद में दूसरी भाषा सीखना आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, कमिंस (1981) के भाषा हस्तांतरण के सिद्धांत से पता चलता है कि जब विद्यार्थी अपनी पहली भाषा में दक्षता विकसित करते हैं, तो वे जो संज्ञानात्मक कौशल हासिल

करते हैं, उन्हें दूसरी भाषा सीखने में स्थानांतरित किया जा सकता है। इसका मतलब है कि मातृभाषा में अवधारणाओं में महारत हासिल करना आसान और अधिक प्रभावी दूसरी भाषा अधिग्रहण का मार्ग प्रशस्त करता है। संज्ञानात्मक लाभों से परे, शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग बच्चे की पहचान और सांस्कृतिक गौरव की भावना को भी मजबूत करता है। यह उन्हें अपनी विरासत से जुड़े रहने की अनुमति देता है, जो उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन, विशेष रूप से 'बुनियादी शिक्षा' की अवधारणा में भी शुरुआती शिक्षा को अनिवार्य रूप से मातृभाषा में रखने की बात की गई जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास सहज भाव से हो सके (शाह, 2017)।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम की प्रासंगिकता पर नीतिगत सुझाव

प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के लिए विश्व-भर में निरंतर अनेक अनुसंधान व प्रतिवेदन प्रकाशित होते रहते हैं। स्वतंत्रता के बाद उच्च शिक्षा में सुधार हेतु गठित राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1948–49) ने माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य शिक्षा के विषय में लिखा कि "कक्षा 1 से 5 तक विद्यार्थी केवल मातृभाषा सीखेंगे; कक्षा 6 से 8 तक मातृभाषा और संघीय भाषा पर जोर दिया जाना चाहिए" (*रिपोर्ट ऑफ एजुकेशन कमीशन*, पृष्ठ 109)। कोठारी आयोग (1964–66) ने भी इस बात पर जोर दिया कि यह आवश्यक है कि चुना गया माध्यम विद्यार्थियों को आसानी से ज्ञान प्राप्त करने, खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने और सटीकता के साथ सोचने में सक्षम बनाता हो। इस दृष्टिकोण से, मातृभाषा एक प्रमुख स्थान रखती है। इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में त्रिभाषा सूत्र की पृष्ठभूमि को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को रखने पर बल दिया गया (*समझ का माध्यम*, पृष्ठ 3)। जिसे शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) की धारा 29(2)(एफ) में कहा गया कि "शिक्षा का माध्यम, जहाँ तक संभव हो, बच्चे की मातृभाषा में होना चाहिए"। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जहाँ तक संभव हो, कम से कम कक्षा 5 तक, लेकिन अधिमानतः कक्षा 8 और उससे आगे तक, शिक्षण का माध्यम घरेलू भाषा/मातृभाषा रखने पर जोर दिया गया।

भारत जैसे भाषायी विविधता वाले देश में प्रारंभिक विद्यालयी भाषा का चयन आधार अत्यंत सावधानी व जिम्मेदारी का कार्य हो जाता है, क्योंकि यूनेस्को (2000) के अनुसार अल्पसंख्यक (भाषायी आधार पर) बच्चों के बीच लगातार जल्दी स्कूल छोड़ने और कम शैक्षणिक उपलब्धि आंशिक रूप से इन भाषा-शिक्षा नीतियों से उपजी हैं। यूनेस्को के शैक्षणिक आधार पत्र (2003) के अनुसार प्रारंभिक शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा अत्यंत आवश्यक है और इसे आगे जहाँ तक संभव हो जारी रखना चाहिए। मातृभाषा शिक्षण को बढ़ावा देकर, शिक्षा प्रणाली बच्चों

के लिए अधिक समावेशी, प्रभावी और सशक्त शिक्षण वातावरण बना सकती है, खासकर बहुभाषी समाजों में (यूनिसेफ इंडिया, 2024)।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

मातृभाषा शिक्षा माध्यम से संबंधित साहित्य पुनरावलोकन के अंतर्गत एजिओकोली और उग्वू (2019) ने पाया कि अभिभावकों का मातृभाषा के उपयोग और अध्ययन (विषय के रूप में) के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण है, परंतु माध्यम के रूप में कई अभिभावक अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता देते हैं। चाकमा (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावकों का मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षा के प्रति सकारात्मक और दृढ़ विश्वास था। नाओम और सारा (2014) ने केन्या में किए गए अपने शोध अध्ययन में पाया कि प्रायः सभी अभिभावक मातृभाषा शिक्षा माध्यम की सार्थकता के बावजूद बेहतर रोजगार व भविष्य की संभावनाओं के लिए इसके पक्ष में नहीं हैं। विल्लाल्बा (2013) अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावकों ने अंग्रेजी को सामाजिक, शैक्षिक और वित्तीय उन्नति के लिए आवश्यक माना, परंतु उनके अनुसार अंग्रेजी बेहतर नौकरी के अवसर प्रदान करती है। मोगीरे (2016) ने शोध अध्ययन में मातृभाषा शिक्षा माध्यम के प्रति अधिकांश अभिभावकों का दृष्टिकोण नकारात्मक पाया। अभिभावकों के अनुसार मातृभाषा माध्यम संस्कृति को संरक्षित करने में मदद नहीं करता, बल्कि उन्हें वैश्विक अवसरों व नौकरियों तक पहुँच सीमित कर देता है तथा इससे अन्य भाषा सीखने में भी बाधा उत्पन्न होती है। टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश अभिभावक मातृभाषा को सांस्कृतिक पहचान, अवधारणाओं को आसानी से समझने और प्रभावी संचार को बढ़ावा देने वाला मानते हैं। परंतु स्थानीय भाषाओं में शिक्षण सामग्री की कमी के कारण कुछ अभिभावक इसके पक्ष में नहीं हैं। इथियोपिया के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम पर सिफारिशों के लिए गठित कमीशन ह्यू और अन्य (2007) ने उल्लेख किया कि वर्तमान शिक्षा नीति द्वारा मातृभाषा प्राथमिक शिक्षा की प्राथमिकता देने पर भी अधिकांश अभिभावक इसके विपरीत दृष्टिकोण रखते हैं। वे अक्सर प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी को पहले शुरू करने की वकालत करते हैं। अर्विंद और अन्य (2024) ने वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट को रेखांकित करते हुए लिखा कि माता-पिता अपने बच्चों को अपनी आदिवासी मातृभाषा के बजाय अंग्रेजी व अन्य आधुनिक भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि इसे भविष्य में उन्नति की संभावना के रूप में देखा जाता है। झिंगरन (2009) ने शोध अध्ययन में पाया कि आस-पड़ोस व अभिभावकों द्वारा अंग्रेजी बोलने वाला माहौल न होने पर भी गरीब परिवार भी अपने बच्चों को इन निजी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में भेजने की आकांक्षा रखते हैं। मेगनाथन (2011) ने अध्ययन में पाया कि अंग्रेजी के प्रभुत्व को स्वीकार करते हुए आज

प्रत्येक बच्चा व अभिभावक इस भाषा को चाहता है। डेविड-एर्ब (2021) ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि अभिभावक अपने सामाजिक दर्जे और बच्चे की शिक्षा के माध्यम के बीच एक गहरा संबंध देखते हैं। अभिभावक स्वदेशी भाषाओं को अक्सर कम प्रतिष्ठित और ग्रामीण या आर्थिक रूप से वंचित सामाजिक समूहों से संबंधित माना जाता है।

शोध उद्देश्य

- मातृभाषा के संप्रत्यय के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण की समीक्षा करना।
- प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग के बारे में अभिभावकों के दृष्टिकोण की समीक्षा करना।
- अभिभावकों के दृष्टिकोण से प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रयोग में आने वाली बाधाओं की समीक्षा करना।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य को दिल्ली के सीमित अभिभावकों तक सीमित किया गया है। दिल्ली क्षेत्र के अभिभावकों के चयन का कारण मुख्यतः इसका राजधानी होना है जिससे शैक्षिक नीतियों के सुचारु रूप से क्रियान्वयन की संभावना यहाँ सबसे पहले होती है।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन व्याख्यात्मक प्रतिमान के भीतर स्थित कथात्मक जाँच है। इस डिजाइन को चुनने का कारण इसके व्यक्तिगत अनुभवों और व्यक्तिपरक अर्थों के गहन खोज की अनुमति देना है। इसमें उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण रणनीति द्वारा कुल 22 प्रतिभागियों का चयन किया गया। जिसमें 11 अभिभावक दिल्ली के सरकारी विद्यालयों व 11 निजी विद्यालयों से चुने गए। प्रदत्त एकत्र करने के लिए अर्ध-संरचित साक्षात्कार, अनौपचारिक विचार-विमर्श और अवलोकन का उपयोग किया गया है, जिसका अध्ययन गुणात्मक प्रकृति के साथ संरेखित करते हुए कथात्मक के माध्यम से प्रदत्त द्वारा स्पष्ट रूप से पहचानी गई थीम के अंतर्गत किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या

अभिभावकों से अर्ध-संरचित साक्षात्कार, अनौपचारिक विचार-विमर्श और अवलोकन के माध्यम से संकलित प्रदत्त को स्पष्ट रूप से पहचानी गई थीम के व्यवस्थित रूप से विश्लेषित किया गया है। सभी थीम शोध उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए एकत्र प्रदत्त से सीधे उभरे हैं।

मातृभाषा की समझ के प्रति दृष्टिकोण

अभिभावक मातृभाषा के अर्थ को किस प्रकार देखते हैं यह पूछने पर एक अभिभावक ने यह बताया कि "परिवार की भाषा जो बच्चा अपनी माता से सीखे वही मातृभाषा है"। इसके संदर्भ में एक अभिभावक ने कहा कि उसके अनुसार "घर-परिवार में जो भाषा शुरू से ही बोली जा रही है वही भाषा मातृभाषा है"। अतः अधिकांश अभिभावकों का मानना है कि मातृभाषा घर की भाषा है जिसे बच्चा परिवार से सहज स्वभाव से अर्जित करता है न कि उसे सीखता है अर्थात उनका मानना है की मातृभाषा माँ से ग्रहण की गई भाषा है। क्षत्रिया (1968); मोयो (2009); टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) तथा

निशांति (2020) ने मातृभाषा के इसी अर्थ की बात की है। एक अभिभावक ने मातृभाषा के अर्थ को अलग दृष्टिकोण से देखते हुए बताया कि "मेरे घर की भाषा अवधी है, परंतु मैं अपने बच्चे से हिंदी में बात करती हूँ तो उसके लिए मातृभाषा हिंदी होगी न कि अवधी"। इस प्रकार कुछ अभिभावकों ने मातृभाषा को आवश्यक रूप से परिवार की भाषा न मानते हुए बच्चों से सर्वाधिक संवाद की भाषा के रूप में माना। दो अभिभावकों ने मातृभाषा को सहजता के रूप में देखते हुए कहा कि "मेरे घर की भाषा कुमाऊनी हैं, परंतु मेरी मातृभाषा हिंदी है। हम गाँव में पहले कुमाऊनी बोलते थे, परंतु यहाँ शहर में आकर हिंदी में ज्यादा सहज हो गए"। इनके अनुसार सहजता के दृष्टिकोण से मातृभाषा परिवर्तित हो सकती है। एक अभिभावक ने सबसे अलग दृष्टिकोण रखते हुए कहा कि "मेरे घर में मैथिली बोली जाती थी तो सबसे पहले उसे ही सीखा, परंतु बाद में हिंदी भी अच्छे से सीख गया तो अब मेरे लिए दोनों मातृभाषाएँ हैं"। इस प्रकार एक अभिभावक ने यह स्वीकार किया कि एक से अधिक मातृभाषाएँ हो सकती हैं।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम का अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव

अधिकांश अभिभावक यह स्वीकार करते हैं कि प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा माध्यम से पढ़ाने पर बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस बारे में एक अभिभावक ने कहा कि "घर की भाषा में अकादमिक प्रदर्शन सबसे अच्छा होगा, क्योंकि बच्चा जिस भाषा की शब्दावलियों को घर में प्रयोग कर रहा है उन्हीं शब्दावलियों में विद्यालय में समझेगा तो उसे नई चीज सीखने में समस्या नहीं होगी"। इससे बच्चे पर अधिक मानसिक तनाव नहीं होता है और वह चीजों को आसानी से सीख पाता है। इसी तरह का परिणाम विल्लाल्बा (2013) तथा मोगीरे (2016) ने अपने शोध अध्ययन में पाया है। बीस अभिभावकों ने यह समान रूप से स्वीकार किया कि जब बच्चों को घर के संवाद की भाषा में पढ़ाया जाएगा तो उन्हें आसानी से समझ आएगा। टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) ने भी अपने शोध अध्ययन में इस बात की पुष्टि की है। एक अभिभावक ने इसी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि "जब घर की भाषा और स्कूल की भाषा एक होगी तो बच्चा खुल कर प्रश्न पूछ पाएगा और अपनी बात अच्छे से रख पायेगा"। अतः इनके अनुसार मातृभाषा माध्यम को समझ व विचारों की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है जो बच्चों के अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के मुख्य कारक हैं। यूनेस्को (2003) तथा पटनायक (1990) के अध्ययन से भी मातृभाषा शिक्षा माध्यम से सीखने पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव की पुष्टि हुई है। एक अभिभावक ने इसके विपरीत यह तर्क दिया कि "यदि बच्चे को जन्म से जिस माध्यम से पढ़ाया जाएगा तो वह उसे ही आत्मसात कर लेगा और उसे शुरू में भले समस्या आए, परंतु वह आगे के लिए लाभदायक होगा"। इन्होंने भी यह एकमत से स्वीकार किया कि शुरू में मातृभाषा शिक्षा माध्यम बच्चे के

अकादमिक प्रदर्शन पर सकरात्मक प्रभाव डालेगा यद्यपि वे बच्चे के भविष्य की संभावनाओं को लेकर चिंतित हैं। विल्लाल्बा (2013) तथा नाओम और सारा (2014) ने भी अपने शोध अध्ययन में इसी तरह का परिणाम पाया। दो अभिभावकों ने पूर्णतः अलग दृष्टिकोण रखते हुए कहा कि "बालमन को जैसा वातावरण देंगे वह उसी में ढल जाएगा। यदि आप बच्चे को प्रारंभ से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाएँगे तो वह उसी में सहज हो जाएगा। कोई जरूरी नहीं कि मातृभाषा माध्यम से पढ़ाने पर ही बच्चा अच्छा समझ पाएगा"। ह्यू और अन्य (2007) तथा मोगीरे (2016) ने भी अपने शोध में पाया कि मातृभाषा माध्यम और शैक्षिक प्रदर्शन में अभिभावकों का दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम का सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रभाव

मातृभाषा शिक्षा माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों व पारिवारिक परंपराओं पर पड़ने वाले प्रभावो के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण जानने के लिए उनसे यह प्रश्न पूछा गया। अधिकांश अभिभावकों ने यह माना कि मातृभाषा शिक्षण माध्यम से पढ़ने वाला बच्चा अपनी संस्कृति से अधिक जुड़ाव महसूस करेगा और अपने पारिवारिक परंपराओं का सम्मान करेगा। इस तरह एक अभिभावक ने कहा कि "मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाने से परिवार की परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्य अच्छी तरह सुरक्षित होंगे। परिवार की भाषा और विद्यालय की भाषा जब एक होगी तो संस्कृति संवर्धित होती है। इसी संदर्भ में एक और अभिभावक ने कहा कि "मातृभाषा घर और विद्यालय के बीच पुल का काम करती है। यदि बच्चे को मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाया जाएगा तो बच्चा ही नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य भी जुड़ाव महसूस करेंगे"। इसी दृष्टिकोण को चाकमा (2012) तथा टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) अपने अध्ययन में भी दर्शाते हैं। जबकि तीन अभिभावकों ने सांस्कृतिक मूल्यों के लिए महत्वपूर्ण कारक के रूप में मातृभाषा को नहीं, अपितु घर व परिवार को माना। एक अभिभावक ने साझा किया कि "बच्चा परिवार के परंपराओं तथा संस्कृति को तो परिवार में सीख ही रहा है, इस पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह परिवार पर निर्भर करता है कि वह अपने बच्चे को संस्कृति और पारिवारिक मान्यताओं के बारे में कितना सिखाता है"। इनका यह दृष्टिकोण था कि शिक्षा माध्यम का सांस्कृतिक व पारिवारिक परंपराओं से कोई संबंध नहीं है। जिसे मोगीरे (2016) ने अपने अध्ययन में भी पाया है।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम का सामाजिक प्रस्थिति से संबंध

अधिकांश अभिभावकों ने एक समान रूप से यह स्वीकार किया कि मातृभाषा का माध्यम के रूप में प्रयोग सामाजिक प्रस्थिति से सीधा संबंध रखता है। जिसमें केवल दो अभिभावकों ने मातृभाषा माध्यम से अपने बच्चे को पढ़ाना गर्व के भाव से देखा बाकी अन्य मातृभाषा शिक्षा माध्यम से पढ़ाने वाले अभिभावकों के लिए यह आर्थिक मजबूरी

थी। एक अभिभावक ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहा कि "अभिभावक अपने सोशल स्टेटस (सामाजिक प्रस्थिति) को बढ़ा कर दिखाने के लिए अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाते हैं, उन्हें इससे कोई मतलब नहीं कि बच्चे को समझ में आ रहा है या नहीं"। एक अन्य अभिभावक अपने अनुभव को साझा करते हैं कि "हर कोई अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाने में गर्व महसूस करता है। वो गर्व से बोलता है कि मेरा बच्चा अंग्रेजी माध्यम से पढ़ रहा है वहीं एक बच्चा भले ही कितना भी पढ़ने में अच्छा हो, लेकिन उसके अभिभावक समाज में यह नहीं बोल पाते कि उनका बच्चा हिंदी माध्यम से पढ़ रहा है"। डेविड-एर्ब (2021) ने भी अपने शोध में अभिभावकों द्वारा बच्चों के शिक्षा माध्यम चयन में सामाजिक प्रस्थिति को प्रमुख कारक माना है। एक अभिभावक ने इसके विपरीत कहा कि "बच्चे को अपनी मातृभाषा माध्यम से पढ़ाना मेरे लिए गर्व की बात है, बच्चा भाषा तो कोई भी सीख सकता है"। शिक्षा माध्यम का सामाजिक प्रस्थिति के जुड़ाव की गहनता को एक अभिभावक के कथन से समझा जा सकता है जब वह कहता है कि "मुझे पता है कि निजी विद्यालय में किस प्रकार कि पढ़ाई होती है, अंत में पढ़ाना मुझे ही पड़ता है, लेकिन मुझे भी चाहिए उस विद्यालय का ठप्पा, क्योंकि वह भविष्य में मेरे बच्चे को सभी क्षेत्र में सहयोग करेगा। इस ठप्पे के साथ जब वह कहीं भी जाएगा तो उसे विशिष्ट नजर से देखा जाएगा"। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि अभिभावक भी शिक्षा के इस बजारीकरण से पूर्णतः जागरूक हैं, परंतु समाज में व्यापक रूप से किसी भाषा को उच्च दृष्टि से देखे जाने के कारण वो अपने बच्चों को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार यथासंभव उच्च अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में पढ़ाना चाहते हैं।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम में व्यवसाय की संभावनाएँ

अधिकांश अभिभावक इस बात को लेकर आशंका व्यक्त करते हैं कि अगर उनके बच्चे मातृभाषा शिक्षा माध्यम में शिक्षित होते हैं, तो उन्हें कई क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, विशेषतः नौकरी व रोजगार के मामले में। ह्यू और अन्य (2007) तथा एजिओकोली और उग्वू (2019) भी अपने अध्ययन में भविष्य की व्यावसायिक चुनौतियों को प्रमुख कारक मानते हैं। एक अभिभावक ने स्पष्ट रूप से बताया कि "बच्चा अगर अंग्रेजी माध्यम से पढ़ रहा है तो वह आगे जाएगा, क्योंकि हम देख सकते हैं कि किसी भी सूचना का प्रकाशन अंग्रेजी में निकलता है, मातृभाषा में शायद ही कोई सूचना मिले"। एक अभिभावक ने विवशतावश व्यक्त किया कि "बच्चे को अगर चाहते हैं कि वह आगे अच्छे नौकरी व व्यवसाय में जाए तो उसे अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाना ही पड़ेगा, क्योंकि आजकल अंग्रेजी को यही मानते हैं कि जिसे यह भाषा आती है वह पढ़ा लिखा है"। अतः अभिभावकों ने बच्चों के भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए उसे

प्रारंभ से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने पर जोर देते हैं। अर्विंद और अन्य (2024); झिंगरन (2009) तथा मेगनाथन (2011) भी अपने शोध अध्ययनों में इसी प्रकार का परिणाम पाते हैं। दो अभिभावक इसके विपरीत दृष्टिकोण रखते हुए नौकरी व व्यवसाय के लिए मातृभाषा व स्थानीय भाषा को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हैं। इनमें एक अभिभावक का कथन है कि "यदि विदेशी भाषाओं में व्यापार होता तो सारी फिल्में अंग्रेजी में बन रही होतीं। मुझे तो हिंदी, तमिल, तेलुगू, मलयालम यहाँ तक की भोजपुरी की फिल्में ही नजर आती हैं। यह समाज में केवल भ्रम फैला दिया गया है कि केवल अंग्रेजी में ही नौकरी व व्यवसाय है और यदि हो भी तो बच्चा उसे भाषा के रूप में सीख सकता है"। इसी तरह का दृष्टिकोण रखने वाले दूसरे अभिभावक ने कहा कि "अपने आस-पास देखिए कौन-सा व्यापार मातृभाषा और स्थानीय भाषा में न होकर अंग्रेजी में होता है। आज तो लोग नौकरी और व्यापार करने के लिए स्थानीय भाषा सीख रहे हैं। अब अगर विदेश में व्यापार करने जाओगे तो वहाँ की भाषा आनी चाहिए न या हर जगह अंग्रेजी से काम चल जाएगा"! दोनों अभिभावकों का मानना है कि नौकरी और व्यावसाय के लिए मातृभाषा माध्यम से पढ़ाना आवश्यक है जिससे वह इसमें महारथ हासिल कर सके और उसे आगे यदि आवश्यक लगे तो अन्य भाषा सीख ले। ये जवाब भाषा और सामाजिक गतिशीलता के बीच कथित संबंध को उजागर करते हैं, जहाँ अंग्रेजी को व्यवसाय की दुनिया में सफलता के आवश्यक तत्व के रूप में देखा जाता है। एक अभिभावक साझा करता है "जिसकी जितनी चादर होती वह उतना ही पैर फैलाता है। मन तो मेरा भी होता है कि मेरे बच्चे भी किसी अच्छे निजी विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ें, परंतु हमारा बजट इतना नहीं है इसलिए हमें हिंदी माध्यम से पढ़ाना पड़ रहा है"। इस कथन में अपनी मातृभाषा के शिक्षण माध्यम में पढ़ाने की विवशता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

अभिभावकों के दृष्टिकोण से मातृभाषा शिक्षा माध्यम के प्रयोग में चुनौतियाँ

भारत में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने में कई जटिल चुनौतियाँ हैं, जिन्हें अभिभावकों ने विशेष रूप से रेखांकित किया है। इन्होंने भारत की विशाल भाषायी विविधता को सर्वप्रमुख कारक बताया। दिल्ली जैसे शहरी क्षेत्रों में, जहाँ विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि के अभिभावक एक साथ रहते हैं, शिक्षण के लिए एक विशिष्ट मातृभाषा का चयन करना अत्यंत कठिन हो जाता है। सरकारी नीतियों की भूमिका भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण की पुरजोर सिफारिश की है, परंतु इसका कार्यान्वयन अत्यंत चुनौतीपूर्ण रहा है। सामाजिक और आर्थिक दबावों के कारण अंग्रेजी का प्रभुत्व अभी भी बना हुआ है और विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों में नीति प्रवर्तन में असंगति शैक्षिक परिणामों में असमानताएँ उत्पन्न करती है। कई अभिभावक अंग्रेजी को सामाजिक

गतिशीलता और बेहतर नौकरी की संभावनाओं की कुंजी मानते हैं। अधिकांश अभिभावक चिंतित हैं कि उनके बच्चे वैश्वीकृत दुनिया में पिछड़ न जाएँ जहाँ अंग्रेजी भाषा आवश्यक है। एक अभिभावक ने कहा कि, "आज की वैश्वीकृत दुनिया में, सफलता के लिए अंग्रेजी आवश्यक है और यही बात सभी को क्षेत्रीय भाषाओं की तुलना में अंग्रेजी को प्राथमिकता देने के लिए प्रभावित करती है"। सामाजिक धारणाओं और आर्थिक आकांक्षाओं से प्रेरित यह प्रतिरोध, मातृभाषा शिक्षा को एक व्यवहार्य शैक्षिक दृष्टिकोण के रूप में बढ़ावा देने में एक बड़ी बाधा प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, शैक्षिक संसाधनों की गंभीर कमी भी मातृभाषा शिक्षा के मार्ग में एक अवरोध है। एक अभिभावक ने कहा, "मातृभाषा में किताबें या अन्य अध्ययन सामग्री मिलना मुश्किल है, जिसका मतलब है कि बच्चों को अंग्रेजी में पढ़ने वाले बच्चों के समान शिक्षा नहीं मिलती है"। मातृभाषा शिक्षा की सफलता के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता महत्वपूर्ण है जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बाद भारतीय भाषा समिति के गठन से तेजी अवश्य आई है।

सबसे अधिक चर्चित चुनौतियों में से एक उच्च शिक्षा में संक्रमण के दौरान विद्यालयों को आने वाली कठिनाई है। प्राथमिक स्तर पर अपनी मातृभाषा में शिक्षित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश करने पर संघर्ष करना पड़ सकता है, जहाँ अंग्रेजी अक्सर शिक्षा की प्राथमिक भाषा होती है। एक अभिभावक ने चिंता व्यक्त की कि "उच्च शिक्षा अंग्रेजी में होने के कारण बच्चा पढ़ाई गई चीजों को समझे या पहले भाषा सीखे। उस पर तो दोहरा दबाव पड़ता है"। मातृभाषा में पढ़ाए जाने के बाद विद्यार्थियों की अंग्रेजी-माध्यम की शिक्षा में सहज संक्रमण की क्षमता के बारे में यह चिंता उन अभिभावकों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा है जो अपने बच्चों की दीर्घकालिक शैक्षिक प्रगति पर विचार कर रहे हैं।

सुझाव

- मातृभाषा शिक्षा माध्यम से बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है, अतः मातृभाषा आधारित शैक्षिक वातावरण विकसित किया जाए।
- अभिभावकों को जागरूक किया जाए कि प्रथम भाषा में दक्षता द्वितीय भाषा सीखने में सहायक होती है न कि बाधा बनती है।
- अभिभावकों को प्रेरित किया जाए कि शिक्षा माध्यम को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ने की अपेक्षा उसे बच्चे के अच्छे सामाजिक, मानसिक व सांस्कृतिक विकास से जोड़ कर देखें।
- विद्यालय और अभिभावकों के मध्य संवाद हेतु मातृभाषा को ही प्रमुख माध्यम बनाया जाए, जिससे शिक्षा प्रक्रिया में परिवार की भागीदारी बढ़े।
- मातृभाषा की रोजगार उपयोगिता पर अभिभावकों में भ्रम है, इसलिए सफल उदाहरणों के माध्यम से विश्वास बनाया जाए।
- स्थानीय संस्कृति, लोककथाओं, परंपराओं और स्थानीय संदर्भों को पाठ्यक्रम में

सम्मिलित किया जाए जिससे मातृभाषा के प्रति सम्मान व जुड़ाव बढ़े, परिणामस्वरूप शिक्षा अधिक समावेशी हो। मातृभाषा में पढ़ने से बच्चे का अकादमिक प्रदर्शन बेहतर होता है, इसलिए शिक्षण पद्धति मातृभाषा अनुकूल होनी चाहिए।

- मातृभाषा में विद्यार्थी मूल्यांकन की वैकल्पिक विधियाँ, जैसे— मौखिक परीक्षण, परियोजनात्मक कार्य एवं स्थानीय संदर्भों पर आधारित मूल्यांकन विकसित की जाएँ तथा सभी निर्देशों व सूचनाओं को प्रसारित किया जाए जिससे समाज में मातृभाषा के प्रति सम्मान व उत्कृष्ट दृष्टिकोण विकसित हो सके।
- निजी एवं सरकारी विद्यालयों में मातृभाषा शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में सामंजस्य स्थापित किया जाए, जिससे शैक्षिक विषमता घटे और उच्च शिक्षा में संक्रमण की चिंता अभिभावकों को परेशान करती है, इसलिए बहुभाषी मॉडल अपनाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण कराना न केवल बच्चों के अधिगम को सहज एवं नैसर्गिक बनाता है, प्रत्युत उसमें अस्मिताबोध को भी जागृत करता है, किंतु यह भी सच्चाई है कि वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षा माध्यम का सफल कार्यान्वयन बहुआयामी चुनौतियों से घिरा हुआ है। जिसमें भाषायी विविधता की जटिलताएँ, असमान नीतिगत समर्थन, अभिभावकों के आर्थिक और सामाजिक स्तर, शैक्षिक संसाधनों की कमी, वैश्वीकरण का दबाव और उच्च शिक्षा में भाषा संक्रमण की बाधाएँ शामिल हैं। अभिभावकों द्वारा मातृभाषा शिक्षा माध्यम से बच्चों में संज्ञानात्मक, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास को स्वीकार करने के बाद भी प्राथमिकता न देना उनके कथित आर्थिक लाभों को दर्शाता है। जो अभिभावकों द्वारा अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा को उच्च सामाजिक स्तर तथा मातृभाषा माध्यम को आर्थिक विवशतावश से जोड़कर देखने से भी प्रेरित है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समग्र और लचीले दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो न केवल भाषायी विविधता का सम्मान करे, बल्कि पर्याप्त शैक्षिक संसाधन प्रदान करे और विद्यार्थियों के लिए सहज शैक्षिक मार्ग प्रशस्त करे, ताकि मातृभाषा शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

संदर्भ

अर्विंद, एस., डी. कुमार, आर. बनर्जी और डब्ल्यू. वाधवा. 2024. अंडरस्टैंडिंग द डायनैमिक्स ऑफ होम लैंग्वेज इंस्ट्रक्शन इन शेपिंग चिल्ड्रेन्स फाउंडेशनल लर्निंग : एविडेंस फ्रॉम रूरल इंडिया.

एजिओकोली, एफ.ओ. और उग्वू. 2019. पेरेंट्स, टीचर्स एंड स्टूडेंट्स बिलीफ्स अबाउट द यूज एंड स्टडी ऑफ मदर-टंग इन द सेकेंडरी स्कूल्स इन अकिन्येले लोकल गवर्नमेंट एरिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड लिटरेसी स्टडीज*. 7(2), पृ.सं. 82–93. ओयो स्टेट, नाइजीरिया.

कमिंस, जे. 1981. स्कूलिंग एंड लैंग्वेज माइनॉरिटी स्टूडेंट्स : थियोरेटिकल फ्रेमवर्क, प्रोफेशनल कैसेट सर्विसेज, एवैल्यूएशन. डिसेमिनेशन एंड असेसमेंट सेंटर, कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, लॉस एंजेलेस.

कोठारी, डी.एस. 1966. रिपोर्ट ऑफ द एजुकेशन कमिशन (1964–66) : एजुकेशन एंड नेशनल डेवलपमेंट. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

चाकमा, जे. 2012. पर्सेप्शन ऑफ पेरेंट्स एंड टीचर्स ऑफ चाकमा कम्युनिटी टुवर्ड्स मदर टंग-बेस्ड मल्टीलिंग्वल एजुकेशन एट अर्ली प्राइमरी लेवल डॉक्टोरल डिजर्टेशन. बी.आर.ए.सी. यूनिवर्सिटी.

छत्रिया, के. 1968. *मातृभाषा शिक्षण*. पृ.सं. 5. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

झिंगरन, डी. 2009. हंड्रेड्स ऑफ होम लैंग्वेजेस इन द कंट्री एंड मैनी इन मोस्ट क्लासरूम्स : कोपिंग विद डाइवर्सिटी इन प्राइमरी एजुकेशन इन इंडिया. *सोशल जस्टिस थ्रू मल्टीलिंगुअल एजुकेशन*. पृ.सं. 250, 267.

टैकी-ओफोसु, वी., एस. महामा, ई.एस.टी.डी. वैनडाइक, डी.के. कुमादोर और एन.ए.ए. टोकू. 2015. मदर टंग यूसेज इन घानाइयन प्री-स्कूल्स : परसेप्शंस ऑफ पेरेंट्स एंड टीचर्स. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस*. 6(34), पृ.सं. 81.

डेविड-एर्ब, एम. 2021. लैंग्वेज ऑफ इंस्ट्रक्शन : कन्सर्निंग इट्स चॉइस एंड सोशल प्रेस्टिज इन बुर्किना फासो. *इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ एजुकेशन*. 67(4), पृ.सं. 435–449.

नाओम, एन. और ए. सारा. 2014. मदर टंग इन इन्स्ट्रक्शन : द रोल ऑफ एटिट्यूड इन द इम्प्लीमेंटेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज*. 4(1), पृ.सं. 77–87.

बॉल, जे. 2011. एन्हांसिंग लर्निंग ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम डाइवर्स लैंग्वेज बैकग्राउंड्स : मदर टंग-बेस्ड बाइलिंग्वल और मल्टिलिंग्वल एजुकेशन इन द अर्ली इयर्स. यूनेस्को.

बारक, आर., ई. बायलिस्टोक, डी.सी. कैस्ट्रो और एम. सांचेज. 2014. द कॉग्निटिव डेवलपमेंट ऑफ यंग डुअल लैंग्वेज लर्नर्स : अ क्रिटिकल रिव्यू. *अर्ली चाइल्डहुड रिसर्च क्वार्टरली*. 29(4), पृ.सं. 699–714.

भारत सरकार. 2009. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 राजपत्रित अधिसूचना. द *गैजेट ऑफ इंडिया एक्स्ट्राऑर्डिनरी*. पृ.सं. 1–13.

मॉरकॉम, एल.ए. 2017. सेल्फ-एस्टीम एंड कल्चरल आइडेंटिटी इन एबोरिजिनल लैंग्वेज इमर्सन किंडरगार्टनर्स. *जर्नल ऑफ लैंग्वेज, आइडेंटिटी एंड एजुकेशन*. 16(6), पृ.सं. 365–380.

मेगनाथन, आर. 2011. लैंग्वेज पॉलिसी इन एजुकेशन एंड द रोल ऑफ इंग्लिश इन इंडिया : फ्रॉम लाइब्रेरी लैंग्वेज टू लैंग्वेज ऑफ एम्पावरमेंट (ऑनलाइन सबमिशन).

मोगीरे, एम.जे. 2016. पेरेंट्स पर्सेप्शन ऑन यूज ऑफ मदर टंग ऐज अ मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन इन प्राइमरी स्कूल्स इन मसाबा साउथ सब-काउंटी. केन्या.

यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन. 1951. द *रिपोर्ट ऑफ द यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन* (पुनर्मुद्रण संस्करण 1962). पृ.सं. 109. मैनेजर ऑफ पब्लिकेशंस, सिविल लाइंस, नई दिल्ली.

यूनेस्को. 2003. एजुकेशन इन अ मल्टीलिंगुअल वर्ल्ड. *यूनेस्को एजुकेशन पोजीशन पेपर*. यूनेस्को, पेरिस.

रा.शै.अ.प्र.प. 2008. *पढ़ने की दहलीज पर* (पुनर्मुद्रण संस्करण मई 2014). राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2010. *समझ का माध्यम* (पुनर्मुद्रण संस्करण जून 2021). राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2018. *भाषा शिक्षण हिंदी* (भाग 1). राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

विल्लाल्बा, वी.एल. 2013. मदर टंग ऐज मीडियम ऑफ इन्स्ट्रक्शन : पेरेंट्स एंड टीचर्स एटिट्यूड्स एंड प्यूपिल्स' लिसनिंग कॉम्प्रिहेन्शन (अनपब्लिश्ड मास्टर्स थीसिस).

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

ह्यू, के., सी. बेंसन, बी. बोगाले और एम.जी. योहान्स. 2007. फाइनल रिपोर्ट, स्टडी ऑन मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन इन प्राइमरी स्कूल्स इन इथियोपिया. *कमिशन्ड बाय द मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन* (सितंबर–दिसंबर, 2006).

5

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

अवनीश कुमार*
देवेंद्र कुमार यादव**

प्रस्तुत शोध-पत्र प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययन पर आधारित है। शोध का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के जेंडर (पुरुष एवं महिला) तथा विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर खिलौना-आधारित-शिक्षणशास्त्र के प्रति उनके अभिवृत्ति की तुलना करना था। शोध की प्रकृति वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित रही। लखनऊ जनपद के प्राथमिक विद्यालय के 60 शिक्षकों को सुविधा आधारित न्यादर्शविधि से चुना गया। आंकडे एक स्व-निर्मित अभिवृत्ति मापनी के माध्यम से एकत्रित किए गए, जिसमें 33 कथन शामिल थे और जिनमें पाँच आयामों (जागरूकता, व्यावहारिकता, लाभ एवं प्रभाव, अभिरुचि तथा सामाजिक समर्थन) को शामिल किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण द्वारा किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि पुरुष शिक्षक खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, जबकि विज्ञान एवं कला वर्ग के शिक्षकों को खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अधिकांश शिक्षकों ने खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता एवं आनंदपूर्ण अधिगम को प्रोत्साहित करने वाला माना। निष्कर्षतः, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को सकारात्मक रूप में स्वीकार करते हैं, किंतु इसके प्रभावी कार्यान्वयन हेतु प्रशिक्षण, संसाधन और प्रशासनिक सहयोग अनिवार्य है।

प्राथमिक शिक्षा विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास की आधारशिला मानी जाती है, क्योंकि यही वह अवस्था है जहाँ बालक के बौद्धिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास की नींव रखी जाती है। इस अवस्था में शिक्षण को जितना अधिक रोचक, सरलीकृत और विद्यार्थियों की रुचि के अनुकूल बनाया जाता है, उतना ही उसका प्रभाव दीर्घकालिक होता है (गुप्ता और अग्रवाल, 2018)। परंपरागत

*शोधार्थी (एम.ए.), शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007
**_आचार्य_, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007

शिक्षण पद्धतियाँ कई बार बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा और रचनात्मकता को सीमित कर देती हैं, जबकि खेल और खिलौनों के माध्यम से प्रस्तुत शिक्षण न केवल सीखने को आनंददायी बनाता है, बल्कि बच्चों को सक्रिय सहभागिता, सहयोग और समस्या-समाधान के अवसर भी प्रदान करता है (ब्रूनर, 1966)।

खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र बच्चे की खेल प्रवृत्ति और अनुभवात्मक अधिगम को आधार बनाकर सीखने की प्रक्रिया को जीवंत और प्रभावशाली बनाता है। यह शिक्षण पद्धति बच्चों में रचनात्मकता, आत्म-अभिव्यक्ति और सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करती है। हाल के वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में यह समझ बढ़ी है कि प्रारंभिक कक्षाओं में 'खेल के माध्यम से सीखना' बच्चों के सीखने की क्षमता और वैचारिक विकास को सुदृढ़ करता है (पियाजे, 1970; वाईगोत्स्की, 1978)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने भी खिलौना आधारित शिक्षा को प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण माना है। नीति में यह सुझाव दिया गया है कि शिक्षण को स्थानीय, सांस्कृतिक और पारंपरिक खिलौनों के साथ जोड़ा जाए, ताकि शिक्षण प्रक्रिया बच्चों के जीवन अनुभवों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ सके। इस संदर्भ में, शिक्षक की भूमिका अत्यंत निर्णायक है, क्योंकि किसी भी नई शिक्षण पद्धति के सफल कार्यान्वयन में शिक्षक की अभिवृत्ति केंद्रीय तत्व होती है। यदि शिक्षक खिलौना आधारित शिक्षण को सकारात्मक रूप से ग्रहण करते हैं तो यह शिक्षा की गुणवत्ता को नए आयाम दे सकता है, वहीं नकारात्मक दृष्टिकोण इस प्रयास की सफलता में बाधा बन सकता है (शर्मा, 2021)। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायता करता है कि शिक्षक इस पद्धति को किस प्रकार देखते हैं, इसके क्रियान्वयन में कौन-कौन सी संभावनाएँ और चुनौतियाँ सामने आती हैं तथा बाल-केंद्रित शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए इसके क्या निहितार्थ हो सकते हैं।

शोध का औचित्य

शोध साहित्य की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, भाषा कौशल, रचनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता और गणितीय सोच को विकसित करता है। हालाँकि, लाभों पर पर्याप्त शोध हुआ है, पर शिक्षकों की धारणाओं, दृष्टिकोणों और चुनौतियों पर सीमित कार्य हुआ है, विशेषकर भारतीय प्राथमिक विद्यालयों में जहाँ संसाधन की कमी, प्रशिक्षण की अपर्याप्तता और पारंपरिक शिक्षण प्रवृत्तियाँ सामान्य हैं। शहरी-ग्रामीण तथा प्रशिक्षित-अल्पप्रशिक्षित शिक्षकों के दृष्टिकोण की तुलनात्मक समीक्षा भी न्यून है। कुछ अध्ययनों (नीतू सिंह, 2021; पटेल और मेहता, 2021; सिंह और शर्मा, 2023) में यह पाया गया कि शिक्षकों का दृष्टिकोण इसके सफल कार्यान्वयन में निर्णायक है, किंतु अधिकांश अध्ययन क्षेत्रीय स्तर या मात्रात्मक आँकड़ों तक सीमित रहे हैं। व्यावहारिक कार्यान्वयन में आने वाली स्थलीय चुनौतियाँ, संसाधनगत सीमाएँ तथा

पाठ्यक्रम से एकीकरण को लेकर शिक्षकों की सोच और सुझावों पर भी गहन अध्ययन अपेक्षित है।

अतः प्रस्तावित अध्ययन 'प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों का खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति दृष्टिकोण' इस शोध-रिक्तता को भरने का प्रयास करता है। यह अध्ययन शिक्षकों की समझ, अनुभव, स्वीकार्यता, प्रशिक्षण आवश्यकताएँ और बाधाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जो नीतिगत सुधार एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

खिलौना— खिलौना एक ऐसी वस्तु होती है, जिसका इस्तेमाल बच्चे खेलने के लिए करते हैं और उससे खेलकर वे प्रसन्न होते है। खिलौनों से बच्चों का मनोरंजन तो होता ही है साथ ही वे खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाते हैं। जैसे— समस्या का समाधान करना, मिल-जुल कर खेलना, आँख-हाथ में तालमेल बिठाना इत्यादि।

खिलौना आधारित अधिगम— एक शिक्षण-अधिगम दृष्टिकोण जो खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने के आस-पास केंद्रित है।

अभिवृत्ति— अभिवृत्ति व्यक्ति के मनोभावों अथवा विश्वासों को इंगित करती है। ये बताती है कि व्यक्ति क्या महसूस करता है अथवा उसके पूर्व विश्वास क्या हैं? अभिवृत्ति से अभिप्राय व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जिसके कारण वह किन्हीं वस्तुओं, व्यक्तियों, संस्थाओं, परिस्थितियों, योजनाओं आदि के प्रति किसी विशेष प्रकार का व्यवहार करता है।

प्राथमिक विद्यालय— इस शोध में प्राथमिक विद्यालय से तात्पर्य कक्षा 1 से 5 तक की कक्षाओं तक से है।

शोध समस्या

प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं—

- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का जेंडर के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का विषय-वर्ग के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं—

- महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है तथा इसमें सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा जनसंख्या के रूप में लखनऊ जनपद के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों को सम्मिलित किया गया।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में न्यादर्श हेतु सुविधा आधारित न्यादर्श विधि का उपयोग करते हुए लखनऊ जनपद के कुल 60 सरकारी प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया, जिनमें 30 पुरुष और 30 महिला शिक्षक तथा 30 विज्ञान एवं 30 कला वर्ग के शिक्षक शामिल थे।

शोध उपकरण

आँकड़ों के संग्रहण के लिए शोधकर्ता द्वारा पाँच-बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित, पाँच आयामों (जागरूकता, व्यावहारिकता, लाभ एवं प्रभाव, अभिरुचि तथा सामाजिक समर्थन) के अंतर्गत 33 कथनों से युक्त स्व-निर्मित 'अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियाँ

इस शोध अध्ययन में समस्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिए शोधकर्ता द्वारा माध्य, मानक विचलन और t-परीक्षण को सांख्यिकी प्रविधियों के रूप में उपयोग किया था।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध उद्देश्य 1— प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का जेंडर के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

इस शोध अध्ययन के प्रथम उद्देश्य के लिए प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों से प्राप्त आँकड़ों को जेंडर (पुरुष तथा महिला) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का वितरण तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1— महिला एवं पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति हेतु तालिका

जेंडर	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	t-मान	p-मान	सार्थकता स्तर
पुरुष	30	131.93	7.74	58	2.10	0.040	0.05
महिला	30	127.73	7.75				

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के आभिवृत्ति का माध्य 127.73 तथा मानक विचलन 7.75 है, इसी प्रकार पुरुष शिक्षकों के अभिवृत्ति का माध्य 131.93 तथा मानक विचलन 7.74 है। दोनों समूहों के मध्य 4.2 अंकों का अंतर परिलक्षित होता है। खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति महिला तथा पुरुष शिक्षकों का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान -2.10 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 58 पर p-मान 0.040 है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से कम है, इसलिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना महिला एवं पुरुष शिक्षकों के अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है। परिणामस्वरूप, यह कहा जा सकता है कि खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति महिला तथा

पुरुष शिक्षकों के अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में सार्थक अंतर है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों का जेंडर (महिला तथा पुरुष) खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति उनके अभिवृत्ति को प्रभावित करता है।

इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में यह पाया कि पुरुष प्राथमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति महिला प्राथमिक शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है। इस अंतर के पीछे कई कारण निहित हो सकते हैं। सर्वप्रथम, पुरुष शिक्षक खेल एवं प्रयोगधर्मी गतिविधियों में अधिक सक्रिय और उत्साही पाए जाते हैं, जिससे वे खिलौना आधारित शिक्षण को सहजता से अपनाते हैं (शर्मा, 2020)। द्वितीय, पुरुष शिक्षकों में कक्षा प्रबंधन और नवीन शिक्षण तकनीकों को अपनाने का आत्मविश्वास अपेक्षाकृत अधिक होता है, जिसके कारण वे नई पद्धतियों को लागू करने में सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं (सिंह और मिश्रा, 2021)। तृतीय, सामाजिक भूमिकाएँ भी इस प्रवृत्ति को प्रभावित करती हैं, क्योंकि महिला शिक्षकों से अपेक्षाकृत पारंपरिक और अनुशासनात्मक शिक्षण शैली की अपेक्षा की जाती है, जबकि पुरुष शिक्षकों को रचनात्मक प्रयोगों में अधिक स्वतंत्रता मिलती है (पांडे और विश्वकर्मा, 2023)। चतुर्थ, शैक्षिक नवाचार एवं नीतिगत परिवर्तनों को अपनाने की तत्परता भी पुरुष शिक्षकों में अधिक पाई जाती है, और चूँकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में खिलौना आधारित शिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है, अतः पुरुष शिक्षकों की अभिवृत्ति इस दिशा में अधिक सकारात्मक देखी गई (राजपूत और यादव, 2024)। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुरुष प्राथमिक शिक्षकों की यह सकारात्मक अभिवृत्ति उनके व्यक्तिगत रुझान, आत्मविश्वास, सामाजिक-सांस्कृतिक अपेक्षाओं और नवाचार अपनाने की प्रवृत्ति का परिणाम है।

शोध उद्देश्य 2— प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का विषय-वर्ग के आधार पर खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

इस शोध अध्ययन के द्वितीय उद्देश्य के लिए प्राथमिक स्तर के शिक्षकों से प्राप्त आँकड़ों को उनके विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर व्यवस्थित करके सर्वप्रथम स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी की सभी अभिधारणाओं की जाँच की गई। इस सांख्यिकी प्रविधि से जुड़ी सभी अभिधारणाओं के संतुष्ट हो जाने के बाद स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण सांख्यिकी के परिणाम का वितरण तालिका 2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2— कला और विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अभिवृत्ति हेतु तालिका

विषय-वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	t-मान	p-मान	सार्थकता स्तर
कला	30	129.5	7.40	58	0.62	0.54	0.05
विज्ञान	30	128.4	6.40				

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कला वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति 129.5 का माध्य तथा मानक विचलन 7.40 है, जबकि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति का माध्य 128.4 तथा मानक विचलन 6.40 है। दोनों समूहों के बीच अभिवृत्ति में मात्र 1.10 अंकों का अंतर देखा गया, जो नगण्य है। खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति का परिकलित स्वतंत्र न्यादर्श t-परीक्षण का मान 0.62 है, जिसका स्वतंत्र्यांश 58 पर p-मान 0.54 है। यह मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है, इसलिए सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों के अभिवृत्ति के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा, निरस्त नहीं की जा सकती है। परिणामस्वरूप, यह कहा जा सकता है कि विषय-वर्ग (कला एवं विज्ञान) के आधार पर प्राथमिक शिक्षकों का खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति समान है। इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के विश्लेषण के उपरांत शोधार्थी ने परिणाम में पाया कि विज्ञान एवं कला वर्ग के प्राथमिक शिक्षकों की खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसका एक प्रमुख कारण यह हो सकता है कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षण अधिकतर बहुविषयक स्वरूप का होता है, जहाँ विज्ञान और कला दोनों ही पृष्ठभूमि के शिक्षक लगभग समान प्रकार की शिक्षण गतिविधियों एवं पद्धतियों का उपयोग करते हैं। कुमार (2019) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक स्तर पर विषयगत भिन्नताओं का प्रभाव शिक्षण दृष्टिकोण पर सीमित होता है, क्योंकि यहाँ बच्चों की जिज्ञासा, खेल और गतिविधि-आधारित अधिगम को अधिक महत्व दिया जाता है। इसी प्रकार, वर्मा और तिवारी (2020) ने यह दर्शाया कि खिलौना आधारित पद्धति जैसी गतिविधि-केंद्रित रणनीतियाँ विषय-विशेष पर आधारित नहीं होतीं, बल्कि सभी शिक्षकों के लिए समान रूप से उपयोगी होती हैं। चंद्रा (2021) ने यह भी बताया कि प्राथमिक शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान और कला पृष्ठभूमि वाले शिक्षकों के बीच किसी प्रकार की विषयगत भिन्नता को नहीं रखता, जिससे उनकी अभिवृत्ति में समानता देखी जाती है। इसके अतिरिक्त, नेहरू और जोशी (2022) ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि गतिविधि-आधारित शिक्षणशास्त्र बच्चों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं के विकास हेतु एक समान रूप से प्रभावी है, चाहे शिक्षक की विषयगत पृष्ठभूमि विज्ञान हो या कला। अतः यह स्पष्ट होता है कि खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र की प्रकृति समग्र और सार्वभौमिक होने के कारण विज्ञान और कला पृष्ठभूमि से आए प्राथमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

आँकड़ों के विश्लेषण से निम्नलिखित शोध निष्कर्ष प्राप्त हुए—

- इस शोध अध्ययन में यह पाया गया कि पुरुष शिक्षकों की खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक सकारात्मक है। यह स्पष्ट करता है कि शिक्षकों का जेंडर खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षक समुदाय में

खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति विश्वास एवं दृष्टिकोण को लेकर लैंगिक भिन्नता पाई गई।

- इस शोध अध्ययन में कला एवं विज्ञान वर्ग के शिक्षकों में खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति अभिवृत्ति के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह संकेत करता है कि शिक्षकों का विश्वास एवं दृष्टिकोण विषय की प्रकृति से स्वतंत्र है। दोनों ही विषय वर्गों के शिक्षकों ने खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दर्शाया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विषय-वर्ग का शिक्षक की अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिणाम यह दर्शाता है कि प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को सकारात्मक रूप से स्वीकारते हैं और इसे कक्षा-कक्ष में उपयोगी मानते हैं। यह परिणाम इस ओर संकेत करता है कि प्राथमिक शिक्षा को अधिक रचनात्मक और बाल-केंद्रित बनाने के लिए खिलौना-आधारित पद्धति को विद्यालयी शिक्षण में व्यवस्थित रूप से जोड़ा जा सकता है। शिक्षकों की सकारात्मक दृष्टि यह प्रमाणित करती है कि यदि उन्हें इस पद्धति से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण, उपयुक्त संसाधन और सहयोगी वातावरण उपलब्ध कराया जाए तो यह शिक्षण अधिक प्रभावी बन सकता है। पुरुष शिक्षकों का रुझान महिलाओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक होना इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि महिला शिक्षकों को प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, ताकि वे भी खिलौना-आधारित गतिविधियों का उपयोग समान आत्मविश्वास और सहजता के साथ कर सकें। इसी प्रकार, विज्ञान और कला पृष्ठभूमि के शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई अंतर न पाया जाना यह दर्शाता है कि यह पद्धति विषयगत सीमाओं से परे है और सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है। इस दृष्टि से देखा जाए तो खिलौना-आधारित शिक्षण न केवल विषयवस्तु को सरल और रोचक बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों के लिए सीखने का अनुभव अधिक जीवंत और आनंदपूर्ण करता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षकों ने इस पद्धति को बच्चों की सृजनात्मकता, समस्या-समाधान क्षमता और सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देने वाला माना। इसका अर्थ यह है कि यदि इस पद्धति को नियमित रूप से पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए तो विद्यार्थियों की जिज्ञासा, सोचने-समझने की क्षमता और सामाजिक सहभागिता को विकसित किया जा सकता है। यह पद्धति पारंपरिक रटने पर आधारित शिक्षा को अनुभवजन्य और प्रयोगात्मक शिक्षा में बदलने की क्षमता रखती है। हालाँकि, शिक्षकों का यह भी मानना रहा कि इसके प्रभावी प्रयोग के लिए प्रशिक्षण, समय, संसाधन और प्रशासनिक सहयोग आवश्यक है। यदि विद्यालयों में उपयुक्त खिलौना-सामग्री, गतिविधि कक्ष और रचनात्मक प्रयोगों के लिए वातावरण उपलब्ध हो, तो शिक्षक अपने सकारात्मक दृष्टिकोण को व्यावहारिक स्तर पर क्रियान्वित कर पाएँगे। इस प्रकार यह अध्ययन इस ओर इशारा करता है कि खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को विद्यालयी जीवन में सुव्यवस्थित ढंग से लागू करने पर प्राथमिक शिक्षा अधिक आनंदपूर्ण, समावेशी और रचनात्मक बन सकती है, जिससे विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को एक साथ गति मिल सकेगी।

संदर्भ

कुमार, ए. 2019. प्राथमिक शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण : शिक्षक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पेडागॉजिकल स्टडीज*. 11(3), पृ.सं. 101–115.

गुप्ता पी. और आर. अग्रवाल. 2018. शिक्षा में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य. *प्राथमिक शिक्षक*. 42(1), पृ.सं. 65–71. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

चंद्रा, आर. 2021. प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण और नवाचारपूर्ण शिक्षणशास्त्र : एक तुलनात्मक दृष्टि. *जर्नल ऑफ एलिमेंटरी एजुकेशन रिसर्च*. 15(2), पृ.सं. 45–58.

नेहरू, एस. और एम. जोशी. 2022. गतिविधि-आधारित अधिगम और उसका प्राथमिक शिक्षा पर प्रभाव. *एशियन जर्नल ऑफ चाइल्ड-सेंटर्ड एजुकेशन*. 9(1), पृ.सं. 67–79.

पटेल, एस. और आर. मेहता. 2021. भारत के प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों के खिलौनों के उपयोग की ओर दृष्टिकोण : एक सर्वेक्षण अध्ययन. *एजुकेशनल इनोवेशंस*. 28(4), पृ.सं. 134–145.

पांडे, एस. और डी. विश्वकर्मा. 2023. *शिक्षकों की अभिवृत्ति पर सामाजिक भूमिकाओं का प्रभाव*. अर्चना पब्लिकेशंस, नई दिल्ली.

पियाजे, जे. 1970. *साइंस ऑफ एजुकेशन एंड द साइकोलॉजी ऑफ द चाइल्ड* (अनुवादित संस्करण). वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

ब्रूनर, जे.एस. 1966. *टुवर्ड्स ए थ्योरी ऑफ इंस्ट्रक्शन* (अनुवादित संस्करण). नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.

राजपूत, वी. और एन. यादव. 2024. शैक्षिक नवाचार एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक विश्लेषण. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, भोपाल.

वर्मा, पी. और आर. तिवारी. 2020. खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र और विषयगत पृष्ठभूमि के आधार पर शिक्षकों की अभिवृत्ति. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*. 18(4), पृ.सं. 89–104.

वाईगोत्स्की, एल.एस. 1978. *माइंड इन सोसाइटी : द डेवलपमेंट ऑफ हायर साइकोलॉजिकल प्रोसेसेज* (अनुवादित संस्करण). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शर्मा, ए. 2020. *प्राथमिक स्तर पर खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का प्रभाव : एक अध्ययन*. ज्ञानभारती प्रकाशन, वाराणसी.

शर्मा, पी. 2021. *खिलौना आधारित शिक्षण : परिप्रेक्ष्य और संभावनाएँ*. शिक्षा भारती प्रकाशन, वाराणसी.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

सिंह, आर. और पी. मिश्रा. 2021. *शिक्षकों के कक्षा प्रबंधन एवं नवीन शिक्षण तकनीकों के प्रति दृष्टिकोण*. शिक्षा प्रकाशन, लखनऊ.

——— और ए. शर्मा. 2023. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खिलौनों की भूमिका : भारतीय प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की धारणाएँ और व्यवहार. *जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन*. 31(2), पृ.सं. 56–71.

सिंह, नीतू. 2021. खेल आधारित अधिगम के प्रति शिक्षकों की धारणा. *प्री-प्राइमरी शिक्षा समीक्षा*. 3(2), पृ.सं. 60–67.

6

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छा विद्यालय

राकेश राणा*

यह लेख गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्व और उसे सुनिश्चित करने में एक अच्छे विद्यालय की अनिवार्य भूमिका को स्पष्ट करता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न मानकर उसे एक बहु-आयामी अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षक, अधोसंरचना, संसाधन, मूल्यांकन, प्रबंधन और समुदाय की सहभागिता सम्मिलित है। लेख में यह रेखांकित किया गया है कि शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का वास्तविक अनुभव विद्यार्थी, अभिभावक और समाज अपने-अपने दृष्टिकोण से करते हैं तथा भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में गुणवत्ता के मानक तय करना एक जटिल कार्य है। एक अच्छा विद्यालय वह होता है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास— बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक और शारीरिक— पर समान रूप से ध्यान देता है। ऐसे विद्यालय में समावेशी और सुरक्षित वातावरण, प्रशिक्षित एवं प्रेरक शिक्षक, आधुनिक संसाधन, अनुकूली शिक्षण-पद्धतियाँ और सतत मूल्यांकन की व्यवस्था होती है। लेख यह भी स्पष्ट करता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समाज के समग्र विकास और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति की कुंजी है। भविष्य के विद्यालय की परिकल्पना करते हुए लेख बताता है कि विद्यालय केवल पढ़ाई-लिखाई का केंद्र नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी कौशल, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरणीय चेतना और मानवीय मूल्यों के विकास का मंच होंगे। निष्कर्षतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी संभव है जब विद्यालय शिक्षा को एक समग्र जीवन-अनुभव बनाएँ और बच्चों को 'नौकरी योग्य' के साथ-साथ 'जीवन योग्य' नागरिक के रूप में तैयार करें।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति और सतत विकास की आधारशिला है। शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का वास्तविक अनुभव विद्यार्थी, अभिभावक, प्रबंधन-तंत्र और समाज अपने-अपने दृष्टिकोण से करते हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मानक तय करना कठिन कार्य है, क्योंकि यहाँ स्थानीय आवश्यकताओं और सामाजिक प्राथमिकताओं में व्यापक भिन्नताएँ पाई जाती हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बहु-आयामी

**आचार्य*, समाजशास्त्र विभाग, एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश 201 009

अवधारणा है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षक, संसाधन, मूल्यांकन, अधोसंरचना, प्रबंधन और समुदाय की सक्रिय भागीदारी सम्मिलित होती है। विद्यालय इस संपूर्ण शैक्षिक पारिस्थितिकी का केंद्र है, जहाँ इन सभी घटकों का समन्वय होता है। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छे विद्यालय का होना अपरिहार्य है। एक अच्छा विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल देता है।

यह समावेशी वातावरण, प्रशिक्षित व प्रेरक शिक्षक, आधुनिक संसाधन, सकारात्मक विद्यालय संस्कृति, सतत मूल्यांकन, शिक्षार्थी-गतिविधियाँ और समुदायिक सहभागिता के माध्यम से शिक्षा को जीवनोपयोगी और मूल्य आधारित बनाता है। भविष्य का विद्यालय मात्र पढ़ाई-लिखाई का केंद्र नहीं होगा, बल्कि वह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की गारंटी देने वाला संस्थान होगा। वहाँ अनुकूली शिक्षण-पद्धतियाँ, बहुविध पाठ्यक्रम, स्मार्ट तकनीक, अनुभवात्मक अधिगम, पर्यावरणीय चेतना, वैश्विक नागरिकता और दार्शनिक दृष्टिकोण पर बल दिया जाएगा। इस प्रकार विद्यालय बच्चों को केवल 'नौकरी योग्य' नहीं, बल्कि 'जीवन योग्य' बनाने में सहायक होंगे। निष्कर्षतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य तभी साकार होगा जब विद्यालय समग्र व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक सरोकार और मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखकर कार्य करें। यही भविष्य के विद्यालय 21वीं सदी और आगे की पीढ़ियों को बेहतर जीवन और समाज की दिशा देंगे।

किसी भी इकोसिस्टम का उपभोक्ता ही उसकी गुणवत्ता का वास्तविक अनुभव कर पाता है। शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी, अभिभावक, प्रबंधन-तंत्र और अंततः समग्र समाज अपने-अपने दृष्टिकोण से शिक्षा की गुणवत्ता का मूल्यांकन करते हैं। भारत जैसे वैविध्यपूर्ण समाज में गुणवत्ता के पैमाने तय कर पाना और भी कठिन हो जाता है। हमारे समाज की विविधताएँ, भिन्नताएँ, स्थानीय आवश्यकताएँ और प्राथमिकताएँ अत्यंत जटिल हैं। इन विरोधाभासों में संतुलन साधने के लिए शिक्षा व्यवस्था को अतिरिक्त भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। जहाँ तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का प्रश्न है, यह एक बहु-आयामी अवधारणा है, जिसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण, संसाधन और मूल्यांकन सहित शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पहलू सम्मिलित होते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अर्थ है उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करना, जिसमें कुशलता के साथ शिक्षण उपकरणों का उपयोग किया जाए और रंग, जेंडर, धर्म, नस्ल, जातीयता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं भौगोलिक स्थान की परवाह किए बिना एक सहायक शैक्षिक वातावरण का निर्माण किया जाए।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही समग्र विकास का अजस्त्र स्रोत है— शिक्षा बच्चे के व्यक्तिगत विकास के माध्यम से उसमें आत्मविश्वास और आत्म-मूल्य का रोपण करती है। यह सामाजिक और आर्थिक उन्नति में विद्यार्थी को उत्पादक बनाती है और समाज में सकारात्मक योगदान देने योग्य बनाती है। शिक्षा उसे जीवन के लिए तैयार करती है तथा चुनौतियों से निपटना सिखाती है। शिक्षा विश्व के वास्तविक चतुर्मुखी विकास की कुंजी है। इसीलिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संयुक्त राष्ट्र के शीर्ष सतत विकास लक्ष्यों में शामिल है, क्योंकि यह गरीबी समाप्त करने का सबसे प्रभावी हथियार है। इसलिए यह सवाल

सामाजिक महत्व का भी है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का आवश्यक आधार कैसे तैयार हो और इस महान भूमिका के लिए कौन आगे आए। सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि शिक्षा को वास्तव में उच्च-गुणवत्तापूर्ण बनाता क्या है? उच्च-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा वह है जो केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, तार्किक सोच, रचनात्मकता और जीवन-कौशल को भी समाहित करती है। इसमें प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत क्षमताओं, रुचियों और सीखने की गति को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी-केंद्रित और अनुकूली शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं। प्रशिक्षित, प्रेरक और संवेदनशील शिक्षक ज्ञान का संप्रेषण करने के साथ-साथ मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करते हैं, जिससे बच्चों में जिज्ञासा, आत्मविश्वास और प्रश्न पूछने की क्षमता विकसित होती है। उच्च-गुणवत्तापूर्ण शिक्षा समावेशी और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करती है, जहाँ सभी बच्चों का सम्मान होता है और उन्हें समान अवसर प्राप्त होते हैं। आधुनिक संसाधन, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेलकूद और डिजिटल तकनीक सीखने की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाते हैं। साथ ही सतत मूल्यांकन और नियमित फीडबैक बच्चों की प्रगति का सटीक आकलन करता है और उन्हें सुधारने के अवसर प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, यह शिक्षा सामाजिक और नैतिक मूल्यों, सहयोग, सहभागिता और समुदाय के प्रति जिम्मेदारी के विकास पर भी बल देती है।

निस्संदेह, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के कई प्रमुख घटक हैं जो एक साथ मिलकर एक मजबूत और प्रभावी शैक्षिक परिवेश का निर्माण करते हैं और शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण उत्पाद के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह घटक निम्नलिखित हैं।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए ये तमाम घटक जहाँ संयुक्त अभ्यास करते हैं, वह है विद्यालय। अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विद्यालय का अच्छा होना एक अपरिहार्य आवश्यकता है। एक अच्छे विद्यालय के महत्वपूर्ण सूचक क्या हैं, इसकी समझ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

एक अच्छा विद्यालय केवल पढ़ाई ही नहीं कराता, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देता है। वास्तव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही समग्र विकास का अजस्त्र स्रोत है। शिक्षा बच्चे के व्यक्तिगत विकास के माध्यम से उसमें आत्मविश्वास और आत्म-मूल्य का रोपण करती सामाजिक है। यह और आर्थिक उन्नति में विद्यार्थी को उत्पादक बनाती है और समाज में सकारात्मक योगदान देने योग्य बनाती है। शिक्षा उसे जीवन के लिए तैयार करती है तथा चुनौतियों से निपटना सिखाती है।

इन मुख्य घटकों में— विद्यालय, शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय प्रबंधन-तंत्र, अधोसंरचना, प्रशासन, संसाधन, तकनीकी और समुदाय— सब कुछ समाहित है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए ये तमाम घटक जहाँ संयुक्त अभ्यास करते हैं, वह है विद्यालय।

अतः गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विद्यालय का अच्छा होना एक अपरिहार्य आवश्यकता है। एक अच्छे विद्यालय के महत्वपूर्ण सूचक क्या हैं, इसकी

समझ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की दिशा में आगे बढ़ने में सहायक होगी।

एक अच्छा विद्यालय केवल पढ़ाई ही नहीं कराता, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान देता है।

इनमें सुधार के लिए आवश्यक है कि विद्यालय में समावेशी और सुरक्षित वातावरण हो, जहाँ हर बच्चा सम्मानित और मूल्यवान महसूस करे। प्रशिक्षित और प्रेरक शिक्षक, आधुनिक अधोसंरचना, पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियाँ उपलब्ध कराना अनिवार्य है। साथ ही अनुकूली शिक्षण-पद्धतियाँ, तकनीकी उपकरण, स्मार्ट क्लास और अनुभवात्मक अधिगम अपनाना चाहिए। विद्यालय प्रबंधन पारदर्शी, सहभागी और जवाबदेह हो, ताकि शिक्षा केवल परीक्षा आधारित न होकर जीवनोपयोगी, रचनात्मक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बने।

एक अच्छे विद्यालय में क्या-क्या होना आवश्यक है?

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एक अच्छा विद्यालय समावेशी शैक्षिक संस्कृति के निर्माण पर ध्यान देता है—

- एक गुणवत्तापूर्ण संस्थान में शिक्षक, शिक्षणेत्तर कर्मचारी और प्रबंधन-तंत्र तक का रवैया सकारात्मक और खुशमिजाज होगा। वहाँ सब तक पहुँच सहज और सुलभ होगी।
- ऐसे विद्यालय का दृष्टिकोण पाठ्यक्रम से लेकर शिक्षण-सामग्री के डिजाइन और डिलीवरी तक विद्यार्थी-केंद्रित होगा।
- ऐसे विद्यालय के शिक्षक सामान्यतः खुश और संतुष्ट दिखेंगे। संस्थान नियमित रूप से अपने शिक्षकों के प्रशिक्षण पर ध्यान देगा और उनका ख्याल रखेगा।
- विद्यालय में एक सशक्त विद्यार्थी-गतिविधि विभाग सक्रिय होगा, जिसमें खेल, साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ, मनोरंजन तथा संवाद और सहयोग के अवसर मिलेंगे।
- गुणवत्तापूर्ण विद्यालय अपनी विद्यार्थी-गतिविधियों में उद्देश्यपूर्ण मनोरंजनात्मक, कलात्मक और सामान्य पाठ्येतर कार्यक्रमों का आयोजन करेगा और विद्यार्थियों व शिक्षकों को उसमें दक्ष बनाएगा।
- एक अच्छा विद्यालय अपने परिणाम पारदर्शी ढंग से अपनी मूल्य-मान्यताओं के अनुरूप प्रस्तुत करेगा।
- विद्यालय की असली पहचान इस बात से होती है कि वह अपना संदेश और छवि समाज तक कैसे पहुँचाता है। अच्छे विद्यालय ऊँचे स्कोर या छद्म अभिजात्य छवि पर नहीं, बल्कि वास्तविक शैक्षिक मूल्यों और सहभागिता पर बल देते हैं।
- एक अच्छा विद्यालय लचीली और किफायती शिक्षा व्यवस्था अपनाता है तथा नई तकनीकों और विधियों के विस्तार में आस्था रखता है।
- शिक्षकों का आत्मविश्वास इस विचार से भरा होता है कि 'सब बच्चे सीख सकते हैं'।
- विद्यालय की संस्कृति समावेशी होती है, जहाँ बच्चों, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों और प्रबंधन-तंत्र सभी में विविधता का सम्मान होता है।

- शिक्षक विषयवस्तु के जानकार होने के साथ-साथ समसामयिक घटनाक्रमों पर भी तार्किक समझ रखते हैं।
- विद्यालय बच्चों को विद्यालय से बाहर के अनुभवों से जोड़ने के नए-नए तरीके खोजता है।
- विद्यालय सुरक्षित वातावरण, आधुनिक संसाधन और सरोकारी दृष्टिकोण पर विशेष ध्यान देता है।
- विद्यालय का लक्ष्य केवल परीक्षा परिणाम नहीं, बल्कि अच्छी शिक्षा होता है। वह विद्यार्थियों में जीवन-कौशल, नैतिक मूल्य और सामाजिक दायित्वों को विकसित करता है।
- विद्यालय योग्य, प्रशिक्षित, संवेदनशील और प्रेरक शिक्षकों का चयन करता है। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, सोचने और सीखने के लिए प्रेरित करते हैं।
- विद्यालय नवाचारी शिक्षण-पद्धतियों, जैसे—स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्ट वर्क, समूह चर्चा, रोल-प्ले, फील्ड विजिट, सर्वे आदि पर बल देता है।
- विद्यालय सुरक्षित और भेदभाव-रहित वातावरण बनाता है तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समान अवसर उपलब्ध कराता है।
- विद्यालय पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेलकूद, कला-संस्कृति मंच, डिजिटल लर्निंग संसाधन जैसी आधुनिक सुविधाओं का उपयोग करता है और परंपरागत ज्ञान-स्रोतों को भी सक्रिय रखता है।
- विद्यालय केवल अंक-आधारित मूल्यांकन पर आश्रित न रहकर सतत मूल्यांकन और फीडबैक संस्कृति विकसित करता है।
- विद्यालय सामुदायिक भागीदारी को महत्व देता है, अभिभावकों से सतत संवाद करता है और सामूहिक जिम्मेदारी का भाव विकसित करता है।
- विद्यालय विद्यार्थियों को केवल 'नौकरी के योग्य' नहीं, बल्कि 'जीवन के योग्य' बनाने पर बल देता है।

भविष्य का विद्यालय कैसा होगा?

भविष्य का विद्यालय केवल पढ़ाई-लिखाई तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की गारंटी देने वाला होगा। यह विद्यालय यह सुनिश्चित करेगा कि समाज का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे। शिक्षा उपलब्ध कराना मात्र एक प्रशासनिक कार्य नहीं होगा, बल्कि विद्यालय का नैतिक दायित्व होगा।

भविष्य का विद्यालय अनुकूली शिक्षण-पद्धतियों पर विशेष बल देगा। इसका अर्थ यह होगा कि प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं और रुचियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा प्रदान की जाएगी। धीमे सीखने वाले बच्चों के लिए विशेष सहयोग, तेज सीखने वालों के लिए अतिरिक्त अवसर और दिव्यांग बच्चों के लिए समावेशी वातावरण सुनिश्चित किया जाएगा। इस प्रकार का विद्यालय बहुविध पाठ्यक्रम प्रस्तुत करेगा, जिसमें केवल पारंपरिक विषय ही नहीं होंगे, बल्कि कला, संगीत, खेल, योग, जीवन-कौशल, पर्यावरण शिक्षा, डिजिटल साक्षरता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे क्षेत्रों को भी समाहित किया जाएगा। इसके साथ-साथ, विद्यार्थियों को अद्यतन शिक्षण-सामग्री और डिजिटल संसाधनों तक नियमित पहुँच होगी, ताकि वे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सकें।

भविष्य का विद्यालय अपने सामाजिक दायित्वों को भी गंभीरता से निभाएगा। यह केवल नौकरी योग्य नागरिक तैयार करने तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि समाज के प्रति सरोकारी, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिकों का निर्माण करेगा। इस संदर्भ में विद्यालय बच्चों के भावनात्मक पक्ष पर भी विशेष बल देगा। विद्यार्थियों को तनाव-प्रबंधन, आत्म-नियंत्रण, सहानुभूति, सहयोग और करुणा जैसे गुण सिखाए जाएँगे। ऐसा विद्यालय विद्यार्थियों को दार्शनिक दृष्टिकोण से भी संपन्न करेगा। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं होगा, बल्कि उन्हें जीवन का अर्थ समझाना होगा। भविष्य का विद्यालय बच्चों को इस प्रकार तैयार करेगा कि वे संवेदनशील, सहयोगी, विवेकशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनें।

इसके अतिरिक्त, भविष्य के विद्यालय—

- स्मार्ट टेक्नोलॉजी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) आधारित शिक्षण को अपनाएँगे।
- प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा और अनुभवात्मक अधिगम को बढ़ावा देंगे।
- विद्यार्थियों में नवाचार, शोध और समस्या-समाधान की क्षमताओं का विकास करेंगे।
- पर्यावरण-हितैषी नीतियों को अपनाकर बच्चों में सतत विकास के प्रति जागरूकता जगाएँगे।
- वैश्विक नागरिकता की भावना विकसित करेंगे, ताकि विद्यार्थी स्थानीय ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर की चुनौतियों को भी समझ सकें।
- विद्यालय अभिभावकों और समुदाय के साथ निरंतर संवाद रखेंगे और शिक्षा को सामूहिक जिम्मेदारी मानेंगे।

भविष्य का विद्यालय केवल ज्ञान-संप्रेषण का केंद्र नहीं होगा, बल्कि वह समग्र व्यक्तित्व निर्माण का उदार मंच बनेगा। वहाँ प्रत्येक बच्चा न केवल पढ़ना-लिखना सीखेगा, बल्कि जीवन जीने की कला, सामाजिक समरसता, पर्यावरणीय चेतना और मानवीय संवेदनाओं से युक्त एक सशक्त व्यक्तित्व विकसित करेगा। यही विद्यालय 21वीं सदी और उससे आगे की पीढ़ियों को बेहतर भविष्य की ओर ले जाएँगे।

निष्कर्ष

एक अच्छा विद्यालय वही है जो केवल पढ़ाई का माध्यम न होकर शिक्षा को एक जीवन-अनुभव बना दे। विद्यालय तभी गुणवत्तापूर्ण कहा जा सकता है जब वह समावेशी, सहयोगात्मक और प्रेरणादायी वातावरण प्रदान करे, जहाँ प्रत्येक बच्चा सम्मानित और मूल्यवान महसूस करे। ऐसे विद्यालय में शिक्षक केवल ज्ञान संप्रेषक नहीं होते, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और सह-शिक्षार्थी के रूप में कार्य करते हैं, जो विद्यार्थियों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करते हैं और ज्ञान-निर्माण की प्रक्रिया को सरल बनाते हैं। इस प्रकार का विद्यालय विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी, प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता और सहयोगात्मक अधिगम के अवसर देकर उन्हें आत्मनिर्भर, तार्किक और रचनात्मक विचारक बनाता है। शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहकर, जीवन कौशल, संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों को भी पोषित करती है। अच्छा विद्यालय बच्चों को केवल परीक्षा की तैयारी तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें जीवन के विविध क्षेत्रों में सफल और सार्थक योगदान देने के लिए तैयार करता है। यही

वह शिक्षा है जो विद्यार्थियों को आनंदमय अधिगम अनुभव, सतत जिज्ञासा और सीखने की लालसा से जोड़कर उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। समग्र रूप से यह लेख इस तथ्य को रेखांकित करता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा किसी एक घटक पर निर्भर न होकर एक सुसंगठित और संवेदनशील शैक्षिक व्यवस्था का परिणाम होती है, जिसका केंद्र विद्यालय होता है। विद्यालय यदि केवल पाठ्यक्रम पूर्ण कराने तक सीमित रह जाए, तो शिक्षा अपने व्यापक सामाजिक और मानवीय उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाती। इसलिए आवश्यक है कि विद्यालय सीखने को आनंदमय, अर्थपूर्ण और जीवन से जुड़ा अनुभव बनाए। ऐसा विद्यालय बच्चों की विविध क्षमताओं को पहचानकर उन्हें विकसित करने के अवसर देता है और समानता, सम्मान व सहभागिता की संस्कृति को मजबूत करता है। शिक्षक, प्रबंधन, अभिभावक और समुदाय की साझी जिम्मेदारी से ही ऐसा वातावरण संभव है। भविष्य की चुनौतियों को देखते हुए विद्यालयों को नवाचार, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व को अपनाना होगा। जब विद्यालय शिक्षा को मानव निर्माण की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करेंगे, तभी वे बच्चों को संतुलित, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार कर सकेंगे और वास्तव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का लक्ष्य साकार होगा।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023 *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन* 2023 (अंतिम संस्करण). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

7

भविष्य की ओर शिक्षा— एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के सिद्धांतों का अध्ययन

दानिश अहमद*
हिमांशी**
विवेक सिंह***

यह शोध-पत्र विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दूरदर्शी संकल्पनाओं को व्यावहारिक एवं सुदृढ़ शैक्षिक सुधारों से जोड़ने का प्रयास है। यह अध्ययन गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति पर आधारित है, जिसमें नीति दस्तावेजों, पूर्ववर्ती पाठ्यचर्या रूपरेखाओं तथा प्रासंगिक अनुसंधान साहित्य की सुव्यवस्थित समीक्षा सम्मिलित है। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक सशक्त विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है तथा यह रचनावाद, आधुनिक शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत जैसे सुदृढ़ सैद्धांतिक ढाँचों पर आधारित है। यह पाठ्यचर्या रूपरेखा समावेशिता, बहुभाषी शिक्षा, डिजिटल एकीकरण, अनुभवात्मक अधिगम तथा 21वीं सदी के कौशलों को विद्यालयी शिक्षा के मूलभूत आधार के रूप में स्थापित करती है। इसके अतिरिक्त, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 सामाजिक-भावनात्मक विकास, मूल्यपरक शिक्षा तथा करियर मार्गदर्शन को विद्यालयी शिक्षा के अनिवार्य स्तंभों के रूप में प्रस्तुत करती है, जिससे विद्यार्थियों का समग्र एवं संतुलित विकास सुनिश्चित हो सके। यह रूपरेखा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को अधिक अर्थपूर्ण, प्रासंगिक और जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

समग्रतः, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 भारतीय शिक्षा प्रणाली को समावेशी, न्यायसंगत, गुणवत्तापूर्ण और भविष्य-उन्मुख बनाने की व्यापक क्षमता रखती है तथा यह विद्यालयी शिक्षा को राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों से प्रभावी रूप से जोड़ने का एक सशक्त वैचारिक एवं संरचनात्मक आधार प्रदान करती है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय शिक्षा प्रणाली ने कई सुधारात्मक चरणों से गुजरते हुए सांस्कृतिक, भाषायी और आर्थिक विविधताओं से भरे राष्ट्र की जटिलताओं को संबोधित करने का प्रयास किया है। आरंभिक पाठ्यक्रम सुधार मुख्यतः उपनिवेशोत्तर भारत को एकीकृत करने और व्यापक निरक्षरता से

*शोधार्थी (एम.एड.), शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002
**शोधार्थी (एम.ए.), शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002
***सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002

निपटने पर केंद्रित थे। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप क्रमशः 1975, 1988, 2000 और विशेष रूप से 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) बनाई गई। एन.सी.एफ. 2005 ने बाल-केंद्रित शिक्षण, रचनावादी दृष्टिकोण और समावेशी शिक्षा पर बल दिया, लेकिन इसके कार्यान्वयन में शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, आधारभूत संरचना का अभाव और रटंत शिक्षण की परंपरा जैसी गंभीर बाधाएँ सामने आईं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 ने शिक्षा को अधिक समग्र, बहु-विषयक, समावेशी और लचीली बनाने की व्यापक दृष्टि प्रस्तुत की। नीति संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, नैतिक और जीवन कौशलों के विकास पर बल देती है। यह मूल्यांकन की कठोरता और भारी-भरकम पाठ्यक्रम की जगह सोच, रचनात्मकता और संचार-केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक सुधार पारंपरिक 10+2 प्रणाली को 5+3+3+4 रूपरेखा से प्रतिस्थापित करना है, जो बाल विकास के विभिन्न चरणों के अनुकूल है (रा.शै.अ.प्र.प., 2023)। एन.ई.पी. 2020 की दृष्टि को कार्यरूप देने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) ने 2023 में विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) विकसित किया। इस रूपरेखा को 13 लाख से अधिक हितधारकों से परामर्श लेकर तैयार किया गया और इसमें 21वीं सदी की शिक्षा के मूल सिद्धांत शामिल किए गए। यह रूपरेखा अंतःविषयक शिक्षण, मूल्य शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षण, विषयों की लचीलता तथा पहुँच और परिणामों में समानता पर बल देती है (रा.शै.अ.प्र.प., 2023)। यह एकसमान दृष्टिकोण को त्यागकर विद्यार्थी-केंद्रित, अनुकूलनीय और संदर्भ-संवेदनशील शिक्षण को बढ़ावा देता है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में लंबे समय से मौजूद समस्याओं जैसे कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में असमानता, वंचित समूहों का बहिष्करण, बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक क्षमता की कमी तथा रचनात्मकता के लिए सीमित स्थान को दूर करना है। पूर्ववर्ती रूपरेखाओं की तुलना में, जो अक्सर नीति को व्यावहारिक परिवर्तन में बदलने में असफल रहीं, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक ठोस और क्रियाशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें रचनावाद, समावेशी शिक्षाशास्त्र और समग्र विकास को मूल आधार माना गया है (रा.शै.अ.प्र.प., 2023)। इस अध्ययन का उद्देश्य यह मूल्यांकन करना है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 किस हद तक अपने घोषित लक्ष्यों को एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप पूरा करता है। शोध प्रमुखतः रूपरेखा के मुख्य सिद्धांतों के विश्लेषण पर केंद्रित है। यह विश्लेषण यह जाँचने का प्रयास करता है कि क्या यह रूपरेखा वास्तव में समावेशी और डिजिटल शिक्षण पद्धतियों को प्रोत्साहित करती है, डिजिटल खाई को पाटती है और सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, पर्यावरणीय जागरूकता और लोकतांत्रिक मूल्यों को शामिल करती है (शिक्षा मंत्रालय, 2020; रा.शै.अ.प्र.प., 2023)।

संक्षेप में, यह अध्ययन गुणात्मक विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करके एन.सी.एफ.-एस.ई.

2023 की नीति, पाठ्यचर्या सिद्धांत, समावेशी शिक्षाशास्त्र और शैक्षिक सुधारों के दृष्टिकोण से मूल्यांकन करता है, ताकि यह आकलन किया जा सके कि इसका परिवर्तनकारी दृष्टिकोण वास्तव में क्रियान्वित किया जा सकता है या नहीं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) भारत में विद्यालयी शिक्षा को दिशा देने वाला एक मार्गदर्शक दस्तावेज है। 1975 में पहली बार प्रस्तुत होने के बाद से, इसे क्रमशः कई बार संशोधित किया गया है, 1988, 2000, 2005 और हाल ही में 2023 में, ताकि देश की बदलती सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप इसे अद्यतन किया जा सके। प्रत्येक संस्करण ने समान पहुँच, समावेशन, समग्र विकास और डिजिटल एकीकरण जैसे प्राथमिकताओं में महत्वपूर्ण बदलावों को रेखांकित किया है।

एन.सी.एफ. 1975— यह स्वतंत्रता के बाद का भारत का पहला समेकित शैक्षिक प्रयास था जिसे रा.शै.अ.प्र.प. ने विकसित किया था। इसने 'सामान्य विद्यालय प्रणाली' की संकल्पना पर जोर दिया, जिससे असमानताओं को कम किया जा सके और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिल सके। इस रूपरेखा ने विद्यार्थी-केंद्रित अधिगम, व्यावसायिक शिक्षा, और पाठ्यक्रम के भार को घटाने पर बल दिया। साथ ही, क्षेत्रीय अनुकूलन और पाठ्यक्रम की नियमित समीक्षा की आवश्यकता को भी रेखांकित किया गया। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत रूपरेखा की कमी के कारण इसके क्रियान्वयन में बाधाएँ आईं।

एन.सी.एफ. 1988— यह रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 से जुड़ी हुई थी और इसका उद्देश्य वर्ष 2000 तक सार्वभौमिक प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करना था। इसने ड्रॉपआउट दरों और साक्षरता के अंतर को दूर करने पर बल दिया, विशेषकर वंचित वर्गों के बीच 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से प्राथमिक विद्यालयों की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ किया गया। इस रूपरेखा ने समानता, मूल्य शिक्षा, पर्यावरणीय चेतना और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया। हालाँकि, संसाधनों की कमी के कारण इसकी पहुँच सीमित रही।

एन.सी.एफ. 2000— यह वैश्वीकरण और तकनीकी युग के साथ भारत की बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है। इसने कक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) को शामिल किया और मूल्य आधारित, समग्र शिक्षा को बढ़ावा दिया। इस रूपरेखा ने पाठ्यक्रम के अधिक बोझ को कम करने और आनंददायक अधिगम को प्रोत्साहित किया। निरंतर और समग्र मूल्यांकन (सी.सी.ई.) मॉडल को लागू किया गया, ताकि अकादमिक और व्यक्तिगत विकास दोनों का आकलन किया जा सके। हालाँकि, सीमित संसाधन वाले क्षेत्रों में इसका प्रभाव सीमित रहा।

एन.सी.एफ. 2005— यह एक निर्णायक बदलाव था, जिसमें रचनावादी और बाल-केंद्रित अधिगम को अपनाया गया। वैश्विक शैक्षिक सुधारों की पृष्ठभूमि में विकसित यह रूपरेखा समावेशन, सोच और वास्तविक जीवन के संदर्भों पर आधारित अधिगम को प्रोत्साहित करती है। इसने स्थानीय ज्ञान को

पाठ्यक्रम में शामिल करने और विद्यार्थी के समग्र विकास के लिए सी.सी.ई. प्रणाली को परिष्कृत करने की वकालत की। शिक्षक प्रशिक्षण और आधुनिक शिक्षण विधियों पर भी ज़ोर दिया गया। यह संस्करण आज भी भारत की कक्षाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023— यह एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप एक भविष्य उन्मुख दृष्टि को प्रस्तुत करता है। यह बुनियादी साक्षरता, दक्षता आधारित अधिगम और संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं शारीरिक क्षेत्रों में समग्र विकास को प्रोत्साहित करता है। यह रूपरेखा लचीले शिक्षण मार्गों का समर्थन करती है, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चुनाव कर सकें। यह प्रारंभिक शिक्षा में क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से बहुभाषी शिक्षा की वकालत करता है। डिजिटल एकीकरण इस रूपरेखा की प्रमुख विशेषता है, जिसमें ई-लर्निंग उपकरणों और संसाधनों को शिक्षण में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, यह अनुभवात्मक अधिगम, जीवन कौशल, कला और खेलों को भी मुख्य पाठ्यक्रम का हिस्सा मानती है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक समतामूलक, वैयक्तिकृत और प्रौद्योगिकी समर्थित शिक्षा प्रणाली की दिशा में एक परिवर्तनकारी कदम है, जो विद्यार्थियों को 21वीं सदी के लिए तैयार करता है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

शैक्षिक अनुसंधान में एक ठोस सैद्धांतिक रूपरेखा आवश्यक होती है, विशेषकर जब किसी नीति दस्तावेज जैसे कि विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 का विश्लेषण करना हो। सैद्धांतिक दृष्टिकोण उस विचारधारा, संरचना और शिक्षण रणनीतियों को समझने की नींव प्रदान करता है, जिनके आधार पर यह रूपरेखा निर्मित हुई है। इस अध्ययन में चार पूरक सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को अपनाया गया है— रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र, और मानव पूंजी सिद्धांत। ये दृष्टिकोण यह स्पष्ट करते हैं कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 अधिगम, पाठ्यचर्या लक्ष्यों, समावेशन और राष्ट्रीय विकास में शिक्षा की भूमिका को किस प्रकार संबोधित करता है।

रचनावाद

रचनावाद अधिगम को सक्रिय और अनुभवात्मक प्रक्रिया मानता है। पियाजे और वायगोत्स्की की अवधारणाओं से प्रेरित एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 खेल-आधारित और परियोजना-आधारित अधिगम को महत्व देता है। इसमें चरणवार संरचना और निकटतम विकास क्षेत्र की धारणा अपनाई गई है, जिससे विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक विकास सुनिश्चित होता है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थी-केंद्रित और खोजपरक शिक्षा को प्रोत्साहित करता है।

पाठ्यचर्या सिद्धांत

पाठ्यचर्या सिद्धांत शिक्षा को सामाजिक, दार्शनिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में समझाता है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 पाठ्यचर्या को केवल दिशानिर्देश न मानकर सामाजिक न्याय और समानता का साधन मानता है। इसमें लचीलापन, क्षेत्रीय अनुकूलन और शिक्षक स्वायत्तता पर बल दिया गया

है। मातृभाषा, स्थानीय संस्कृति, मूल्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता को जोड़कर यह रूपरेखा शिक्षा को अधिक प्रासंगिक और जीवनोन्मुख बनाती है।

शिक्षाशास्त्र

शिक्षाशास्त्र संवाद व सहभागिता पर बल देता है। पाउलो फ्रेरे की सोच से प्रभावित एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 समावेशिता, समान अवसर और मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देता है। यह विद्यार्थियों को सामाजिक प्रश्न उठाने, चिंतन करने और परिवर्तनकारी भूमिका निभाने के लिए सक्षम बनाता है। सहानुभूति, नागरिकता और नैतिकता को जोड़कर यह शिक्षा को अधिक जागरूक और उत्तरदायी बनाता है।

मानव पूंजी सिद्धांत

मानव पूंजी सिद्धांत शिक्षा को आर्थिक विकास से जोड़ता है। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 इस दृष्टिकोण को दक्षता-आधारित अधिगम, व्यावसायिक शिक्षा और डिजिटल साक्षरता के माध्यम से आगे बढ़ाता है। इसमें 21वीं सदी के कौशल, जैसे— सोच, रचनात्मकता, संचार और सहयोग पर बल है। यह शिक्षा को करियर तैयारी और जीवनभर सीखने से जोड़ता है, जिससे विद्यार्थी वैश्विक प्रतिस्पर्धा और रोजगार की आवश्यकताओं के लिए तैयार हो सकें।

यह चारों सैद्धांतिक दृष्टिकोण— रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत – एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। ये यह स्पष्ट करते हैं कि यह रूपरेखा किस प्रकार शैक्षणिक उत्कृष्टता और समानता, आर्थिक लक्ष्यों और नैतिक मूल्यों तथा मानकीकरण और संदर्भानुकूलता के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करती है। इन सैद्धांतिक आधारों को समझना इस मूल्यांकन के लिए आवश्यक है कि यह रूपरेखा एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप भारतीय शिक्षा को परिवर्तनशील दिशा में ले जाने में सफल होगा या नहीं।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

पाठ्यचर्या रूपरेखाओं के विकास और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के मूल्यांकन के लिए पूर्ववर्ती साहित्य की समीक्षा आवश्यक है। कई अध्ययनों ने शिक्षा सुधारों की दिशा, पहुँच और समानता के प्रयासों तथा क्रियान्वयन की चुनौतियों की पड़ताल की है। शर्मा (2023) ने मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर यह दिखाया कि एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 संज्ञानात्मक विकास, सामाजिक-भावनात्मक वृद्धि, प्रेरणा और चिंतन जैसे साझा स्तंभों पर टिके हैं और उनका एकीकरण विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करता है। कुमार 2023 ने एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 में करियर मार्गदर्शन और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया, किंतु प्रशिक्षित परामर्शदाताओं और शिक्षक प्रशिक्षण की कमी को चुनौती बताया। शुक्ला, प्राची और नेगी (2024) ने शारीरिक शिक्षा को स्वास्थ्य और सामाजिक कौशल के लिए महत्वपूर्ण माना पर संसाधनों और प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी को कार्यान्वयन की बाधा बताया। गोस्वामी (2023) ने राजस्थान में शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन किया और पाया कि अधिकांश शिक्षक इस नई रूपरेखा से अपरिचित हैं,

जबकि वे इसके प्रमुख क्रियान्वयनकर्ता हैं। यह तथ्य प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करता है। प्रजापति 2023 ने तर्क दिया कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के लक्ष्यों को पूरा करने हेतु शिक्षकों को रटंत पद्धति से आगे बढ़कर सोच, रचनात्मकता, टीमवर्क और संचार जैसे कौशलों पर आधारित रणनीतियाँ अपनानी होंगी। शांडिल्य (2025) ने भारतीय ज्ञान प्रणालियों के एकीकरण को इस रूपरेखा की विशेषता बताया, जिससे शिक्षा सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनती है। मेहरा और सिंह 2025 ने अनुभवात्मक अधिगम को विद्यार्थियों की वैचारिक समझ और 21वीं सदी के कौशलों के विकास के लिए प्रभावी माना और विद्यालय प्रशासन से इसके लिए लचीला समर्थन सुझाया। इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक बहु-आयामी दस्तावेज है जिसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धांत, कौशल-आधारित अधिगम, शारीरिक शिक्षा, शिक्षक तैयारी, सांस्कृतिक एकीकरण और अनुभवात्मक शिक्षण सभी को समाहित किया गया है। फिर भी, साहित्य में कुछ सीमाएँ स्पष्ट हैं। अधिकांश अध्ययन किसी एक ही पहलू, जैसे—शारीरिक शिक्षा, करियर मार्गदर्शन या अनुभवात्मक अधिगम पर केंद्रित हैं। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की समग्र संरचना और उसकी सैद्धांतिक नींव पर दृष्टि अभी अपेक्षाकृत कम है। विशेष रूप से, रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत जैसे ढाँचे अब तक कम उपयोग हुए हैं, जबकि इनके माध्यम से यह समझा जा सकता है कि खेल-आधारित अधिगम, समावेशन, मूल्य शिक्षा और व्यावसायिक कौशल किस प्रकार दस्तावेज के भीतर जुड़े हैं।

इसी आधार पर यह अध्ययन अपना औचित्य पाता है। यह शोध न केवल एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के आदर्शों की विवेचना करता है, बल्कि उनकी व्यावहारिक चुनौतियों की भी जाँच करता है। मूल्यांकन की अस्पष्टता, अवसंरचना और संसाधनों की असमानता, शिक्षक प्रशिक्षण की कमी और परीक्षा-प्रधान संस्कृति जैसी समस्याओं को सामने लाकर यह नीति और व्यवहार के बीच की खाई को उजागर करता है। इस प्रकार, यह अध्ययन एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की सैद्धांतिक और व्यावहारिक नींव का एकीकृत मूल्यांकन प्रस्तुत करता है और संकेत देता है कि सफलता केवल दस्तावेजी आदर्शों पर नहीं, बल्कि ठोस क्रियान्वयन रणनीतियों पर निर्भर है।

कार्यप्रणाली

अनुसंधान रूपरेखा

इस अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने गुणात्मक अनुसंधान डिजाइन को अपनाया है, जो कि उपलब्ध नीति दस्तावेजों की विषयवस्तु विश्लेषण पर आधारित है। यह अनुसंधान डिजाइन एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के सिद्धांतों का गहन अध्ययन करने और उसकी व्याख्या हेतु उपयुक्त रहा।

डेटा संग्रहण की विधि

शोधकर्ता ने इस अध्ययन हेतु एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 से संबंधित आधिकारिक दस्तावेजों को प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया, जिनमें सरकारी प्रकाशन, नीति-पत्र और दिशानिर्देश शामिल थे। इसके अतिरिक्त,

शोध-पत्रों और पत्रिकाओं जैसे द्वितीयक स्रोतों की भी समीक्षा की गई।

डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया

डेटा विश्लेषण के लिए प्रमुख रूप से विषयवस्तु विश्लेषण को अपनाया गया, जिससे रूपरेखा में प्रस्तुत प्रमुख सिद्धांतों की पहचान और वर्गीकरण किया जा सका। इस प्रक्रिया में दस्तावेजों की व्यवस्थित समीक्षा और मूल्यांकन शामिल था।

डेटा विश्लेषण

इस खंड में विषयगत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अनुसंधान उद्देश्य के अंतर्गत तीन मुख्य विषय और प्रत्येक के दो उप-विषय शामिल किए गए हैं।

अनुसंधान उद्देश्य— विद्यालयी शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के प्रमुख सिद्धांतों का अध्ययन।

विषय 1— समग्र विकास और लचीलापन

उप-विषय (क)— संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास पर बल

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 शिक्षा को केवल बौद्धिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक दोनों विकास को प्रोत्साहित करता है। 'फ्रॉम द वेयर' संदेश में कहा गया है कि "शिक्षा को शैक्षणिक कौशल के साथ-साथ सहानुभूति, नैतिक सोच और भावनात्मक दृढ़ता का भी विकास करना चाहिए", जबकि 'परिचय' खंड में संज्ञानात्मक विकास को चरित्र निर्माण से जोड़ा गया है। इसी प्रकार 'लर्निंग स्टैंडर्डस' में यह मान्यता दी गई है कि शिक्षण उद्देश्यों में सामाजिक-भावनात्मक कौशल, जैसे— आत्म-नियंत्रण, सहयोग और सहानुभूति भी सम्मिलित हों। 'समावेशी सिद्धांत' खंड में यह विचार प्रस्तुत किया गया है कि "हर शिक्षा की शुरुआत इस मूल विचार से होती है कि प्रत्येक बच्चा सीखने में सक्षम है। बच्चे तब सबसे बेहतर सीखते हैं जब उन्हें सम्मान, मूल्य और भागीदारी का अनुभव होता है"। यह दृष्टिकोण बाल विकास मनोविज्ञान के अनुरूप है, जहाँ भावनात्मक रूप से सहयोगी वातावरण को अधिगम के लिए अनिवार्य माना गया है। इसी क्रम में 'शारीरिक शिक्षा और आरोग्य' खंड शिक्षा को शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन से जोड़ते हुए कहता है कि 'शारीरिक शिक्षा में गतिविधियाँ, व्यायाम, योग, खेल आदि। ये गतिविधियाँ दृढ़ता, टीम भावना और भावनात्मक लचीलापन विकसित करती हैं"। हालाँकि, इन आदर्शों के क्रियान्वयन में कुछ स्पष्ट चुनौतियाँ भी हैं। सामाजिक-भावनात्मक लक्ष्यों का मूल्यांकन कैसे किया जाए, यह दस्तावेज में पर्याप्त स्पष्ट नहीं है। समावेशन के सिद्धांत को व्यवहार में लाने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधन, कक्षा-आकार का प्रबंधन और अवसंरचना जैसे मुद्दों का समाधान आवश्यक है। साथ ही, परीक्षा-केंद्रित शैक्षिक संस्कृति में सामाजिक-भावनात्मक और शारीरिक कार्यक्रमों को उचित प्राथमिकता दिलवाना कठिन हो सकता है। इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का दृष्टिकोण व्यापक और संतुलित है, किंतु इसकी सफलता तभी सुनिश्चित होगी जब स्पष्ट लक्ष्य-निर्धारण, आकलन मानदंड, संसाधन-आधारित योजनाएँ और

शिक्षक-सक्षमकरण जैसी व्यावहारिक रणनीतियाँ सुदृढ़ रूप से लागू की जाएँ।

उप-विषय (ख)— अनुकूलनशील पाठ्यचर्या डिजाइन

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 पारंपरिक कठोर और एकसमान मॉडल को त्यागकर लचीलेपन और स्थानीय संदर्भों के अनुरूप अनुकूल मार्गदर्शन पर बल देता है। 'स्टेज डिजाइन' खंड में विद्यालयी शिक्षा को चार विकासात्मक स्तरों, आधारभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक, में विभाजित किया गया है और प्रत्येक स्तर के लिए उपयुक्त शिक्षण रणनीतियाँ व मूल्यांकन पद्धतियाँ सुझाई गई हैं। उदाहरणस्वरूप, आधारभूत स्तर में अनुभवात्मक और खेल-आधारित अधिगम को महत्व दिया गया है, जबकि मध्य और माध्यमिक स्तरों में संरचित तथा अन्वेषण-आधारित अधिगम को प्राथमिकता दी गई है। इसी प्रकार, 'शिक्षण सामग्री एवं परिवेश' खंड में कहा गया है कि 'शिक्षण एक ऐसा सुरक्षित, समावेशी और प्रोत्साहक परिवेश प्रदान करें जो प्रत्येक छात्र की भागीदारी और अधिगम को समर्थन दे'। यह कथन इस बात को रेखांकित करता है कि रूपरेखा विविध विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील है। हालाँकि, इस लचीलेपन और अनुकूलन की व्यावहारिकता पर कुछ प्रश्नचिह्न भी हैं। पहला, स्थानीय संदर्भों के अनुरूप पाठ्यचर्या का निर्माण तभी संभव होगा जब शिक्षक स्वयं सामग्री निर्माण और पद्धतिगत विविधता के लिए प्रशिक्षित व सक्षम हों, अन्यथा लचीलापन केवल दस्तावेजी प्रावधान तक सीमित रह सकता है। दूसरा, क्षेत्रीय विषमताएँ, जैसे— संसाधनों की कमी, कक्षा-आकार, भाषा विविधता और डिजिटल असमानता इस अनुकूलन को समान रूप से लागू होने से रोक सकती हैं। तीसरा, मूल्यांकन पद्धतियों में लचीलापन सराहनीय है, परंतु परीक्षा-प्रधान संस्कृति में वैकल्पिक आकलन की स्वीकृति और क्रियान्वयन एक बड़ी चुनौती बनी रहेगी। एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की अनुकूलनशील पाठ्यचर्या डिजाइन विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है, किंतु इसकी वास्तविक प्रभावशीलता शिक्षकों की तैयारी, संसाधनों की उपलब्धता और मूल्यांकन प्रणाली में ठोस सुधारों पर निर्भर करेगी।

विषय 2— समावेशिता और समानता

उप-विषय (क)— विविध विद्यार्थियों के लिए पहुँच

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 समाज के सभी वर्गों चाहे वे सामाजिक, आर्थिक, भाषायी या सांस्कृतिक रूप से विविध हों, के लिए गुणवत्तापूर्ण और समावेशी शिक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करता है। यह रूपरेखा 13 लाख से अधिक नागरिकों और विभिन्न हितधारकों से प्राप्त परामर्श पर आधारित है, जिससे पाठ्यचर्या में विविध आवाजों और दृष्टिकोणों का समावेश हो सका है। प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया है, ताकि विद्यार्थी अपनी पहचान से जुड़ सकें और हाशिए पर जाने से बचें। 'विद्यालयों में समावेशन' खंड में यह स्पष्ट कहा गया है कि "शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त करने का सबसे बड़ा उपकरण है। समावेशी और समान शिक्षा, जहाँ यह अपने आप में एक लक्ष्य है, वहीं यह एक समावेशी और समान समाज प्राप्त करने के लिए भी आवश्यक है"। इसके

अतिरिक्त, यह दस्तावेज सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों की चुनौतियों को रेखांकित करता है और उनके लिए लक्षित सहायता का सुझाव देता है। यह पहल दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अनुरूप भी है, जिसमें दिव्यांग बच्चों के लिए सुगम अवसंरचना और समावेशी शिक्षण संसाधनों की आवश्यकता बताई गई है। हालाँकि, इस दृष्टि के व्यावहारिक क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं। सबसे बड़ी समस्या यह है कि क्षेत्रीय असमानताओं और संसाधनों की कमी के कारण सभी राज्यों और विद्यालयों में एकसमान स्तर पर समावेशन लागू कर पाना कठिन है। यद्यपि मातृभाषा आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कही गई है, लेकिन बहुभाषी कक्षाओं, प्रवासी आबादी और संसाधनों की कमी वाले क्षेत्रों में इसे लागू करना एक जटिल कार्य होगा। इसी प्रकार, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम के अनुरूप दिव्यांग छात्रों के लिए अवसंरचना उपलब्ध कराने का प्रावधान सराहनीय है, परंतु सरकारी और निजी विद्यालयों में इसके लिए पर्याप्त वित्तीय निवेश और प्रशासनिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक प्रशिक्षण और दृष्टिकोण में बदलाव भी अनिवार्य है, क्योंकि बिना प्रशिक्षित और संवेदनशील शिक्षकों के समावेशन की अवधारणा केवल दस्तावेजी प्रावधान बनकर रह सकती है। इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 विविध विद्यार्थियों के लिए समावेशी शिक्षा की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है, लेकिन इसकी सफलता पर्याप्त संसाधनों, शिक्षक-सक्षमकरण और क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने वाली ठोस रणनीतियों पर निर्भर करेगी।

उप-विषय (ख)— लिंग और सामाजिक समावेशन

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 स्पष्ट रूप से लिंग समानता और हाशिए पर पड़े समुदायों के समावेशन को अपनी प्राथमिकता मानता है। यद्यपि विस्तृत दिशानिर्देश भाग B (क्रॉस-कटिंग थीम्स— विद्यालय में समावेशन या विद्यालयी समावेशन) में दिए गए हैं, लेकिन प्रारंभिक अध्यायों में ही यह रेखांकित कर दिया गया है कि प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर मिलना चाहिए। यह रूपरेखा सहभागी शिक्षण और समावेशी कक्षा संस्कृति को प्रोत्साहित करती है, ताकि जाति, लिंग, धर्म या आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर मौजूद पूर्वाग्रहों को कम किया जा सके। विशेष रूप से भाषा और सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों में सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी शिक्षण को महत्व दिया गया है। दस्तावेज में कहा गया है— "विद्यालयों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि शारीरिक और पाठ्यचर्यात्मक संसाधनों तक पहुँच समान और भेदरहित हो... विद्यालयों को जाति, लिंग, धर्म, सामाजिक-आर्थिक स्थिति या शारीरिक विशेषताओं के आधार पर असमानता को सक्रिय रूप से हतोत्साहित करना चाहिए"। इसी क्रम में, प्रारंभिक शिक्षा में घर की भाषा और क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग की अनुशंसा की गई है, ताकि विविध भाषायी पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी मुख्यधारा से बाहर न हों। साथ ही, सुरक्षित शिक्षण वातावरण पर जोर देते हुए यह कहा गया है— "विद्यालयों में डराने-धमकाने, उत्पीड़न और अपमान को सक्रिय रूप से रोका जाना चाहिए, ताकि सभी विद्यार्थियों के लिए एक सुरक्षित अधिगम परिवेश सुनिश्चित हो सके"। हालाँकि, इन

आदर्शों के व्यावहारिक कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ मौजूद हैं। भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में जाति और लिंग-आधारित भेदभाव सामाजिक संरचनाओं में गहराई से जड़े हुए हैं, इसलिए केवल नीतिगत प्रावधान पर्याप्त नहीं हैं। विद्यालय स्तर पर सुरक्षित और समावेशी माहौल बनाने के लिए निरंतर शिक्षक प्रशिक्षण, संवेदनशीलता कार्यक्रम और सामुदायिक भागीदारी की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, संसाधनों और बुनियादी ढाँचे की असमान उपलब्धता भी समान अवसरों की राह में बाधा बन सकती है। मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने का विचार सराहनीय है, लेकिन प्रवासी विद्यार्थियों और बहुभाषी कक्षाओं में इसे लागू करना कठिन साबित हो सकता है। समग्र रूप से, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 शिक्षा प्रणाली में लिंग और सामाजिक समावेशन को सैद्धांतिक रूप से मजबूत आधार देता है, किंतु इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि विद्यालय स्तर पर इन प्रावधानों को किस हद तक व्यावहारिक रूप में उतारा जा सके और सामाजिक पूर्वाग्रहों से जूझ रहे विद्यार्थियों के लिए वास्तव में समान और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जा सके।

विषय 3— विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र

उप-विषय (क)— वैयक्तिकृत अधिगम रणनीतियाँ

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 पारंपरिक एकरूप शिक्षण से हटकर वैयक्तिकृत अधिगम की दिशा में स्पष्ट परिवर्तन प्रस्तुत करता है, जहाँ विद्यार्थियों की गति, रुचि और शैली को मान्यता दी जाती है। 'परिचय' खंड में यह स्पष्ट किया गया है कि 'एक ही प्रकार की शिक्षा सभी के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती', जिससे यह संकेत मिलता है कि शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत और लचीला बनाया जाना चाहिए। 'स्टेज डिजाइन' के तहत, सीखने की प्रक्रिया में चरणबद्ध विकास दिखता है, जो प्रारंभिक वर्षों में खेल-आधारित अधिगम से शुरू होकर आगे संरचित और अन्वेषण-आधारित शिक्षण की ओर बढ़ता है। इसी क्रम में, डिजिटल उपकरणों और अनुकूलनशील रणनीतियों को विशेष रूप से 'भाषायी शिक्षा' और 'गणितीय शिक्षा' में अपनाने की अनुशंसा की गई है। दस्तावेज इस आदर्श को रेखांकित करता है— "एक अच्छा शैक्षणिक संस्थान वह है जहाँ प्रत्येक छात्र को स्वागत और देखभाल का अनुभव हो, जहाँ एक सुरक्षित और प्रेरक अधिगम परिवेश हो, और जहाँ विविध अधिगम अनुभव प्रदान किए जाते हों"। साथ ही 'शिक्षण विधि और मूल्यांकन' खंड में यह भी जोड़ा गया है कि "प्रभावी शिक्षाशास्त्र को रटंत अधिगम से आगे बढ़ते हुए संकल्पनात्मक समझ, समस्या समाधान और समूह चर्चा पर केंद्रित होना चाहिए"। हालाँकि, इस वैयक्तिकृत और विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण के व्यावहारिक कार्यान्वयन में कुछ गंभीर चुनौतियाँ हैं। सबसे पहले, भारत जैसे विशाल और विविध शिक्षा-तंत्र में कक्षाओं का आकार प्रायः बड़ा होता है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी की व्यक्तिगत गति और रुचि को ध्यान में रखना शिक्षकों के लिए अत्यंत कठिन हो सकता है। दूसरा, डिजिटल उपकरणों और अनुकूलनशील शिक्षण का विचार यथार्थवादी तभी है जब सभी विद्यालयों में पर्याप्त तकनीकी संसाधन और प्रशिक्षण उपलब्ध हों, जबकि ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में यह अभी भी सीमित है। तीसरा, शिक्षकों

को इस बदलाव के अनुरूप प्रशिक्षित करना एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है; बिना शिक्षक-सक्षमकरण के, विद्यार्थी-केंद्रितता केवल सैद्धांतिक आदर्श रह सकती है। इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षाशास्त्र की ओर एक सराहनीय दृष्टि प्रस्तुत करता है, किंतु इसकी वास्तविक प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि शिक्षा प्रणाली शिक्षक प्रशिक्षण, संसाधनों और मूल्यांकन सुधारों के माध्यम से इन आदर्शों को व्यवहार में उतारने की कितनी तैयारी कर पाती है।

उप-विषय (ख)— विद्यार्थी सहभागिता और सशक्तीकरण

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का एक केंद्रीय उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने अधिगम में सक्रिय भागीदार बनाना है। यह रूपरेखा अन्वेषण-आधारित, चर्चा-केंद्रित और परियोजना-आधारित विधियों को प्रोत्साहित करती है, ताकि सहयोगी और सहभागी कक्षाओं का निर्माण हो सके। 'पर्यावरणीय प्रथाएँ और सांस्कृतिक' खंड में छात्रों को विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने और खुले संवाद में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया है। इसी तरह, 'कला और शारीरिक शिक्षा' तथा 'व्यावसायिक शिक्षा' खंडों में व्यावहारिक परियोजनाओं और वास्तविक जीवन की समस्याओं के समाधान पर बल दिया गया है। दस्तावेज में यह भी स्पष्ट किया गया है— "विद्यार्थियों को यह अनुभव होना चाहिए कि वे बौद्धिक जोखिम लेने, गलती करने और प्रयोग करने के लिए सुरक्षित हैं— बिना उपहास या दंड के भय के"। साथ ही, यह भी जोड़ा गया है कि "खेलकूद और शारीरिक शिक्षा में नियमित भागीदारी दृढ़ता, टीम भावना और लचीलापन विकसित करती है, जो शैक्षणिक और व्यक्तिगत सफलता के लिए आवश्यक हैं"। इसके अतिरिक्त, विद्यालय और समुदाय के संबंध को मजबूत करने पर जोर देते हुए कहा गया है— "विद्यालयों को स्थानीय समुदायों से सक्रिय रूप से जुड़ना चाहिए, क्योंकि कोई भी शैक्षणिक संस्थान अपने परिवेश से कटा हुआ रहते हुए प्रभावशाली रूप से कार्य नहीं कर सकता"।

हालाँकि, विद्यार्थी सहभागिता और सशक्तीकरण की यह अवधारणा व्यावहारिक स्तर पर कई चुनौतियों का सामना करती है। पहला, भारत की परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली में अन्वेषण और परियोजना-आधारित अधिगम को पर्याप्त समय और महत्व देना कठिन हो सकता है। दूसरा, बड़ी कक्षाओं में प्रत्येक विद्यार्थी को सक्रिय रूप से शामिल करना शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण है, विशेषकर तब जब संसाधन और शिक्षण सामग्री सीमित हों। तीसरा, शिक्षकों के दृष्टिकोण में भी बदलाव आवश्यक है; पारंपरिक शिक्षक-नियंत्रित कक्षाओं से विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण की ओर संक्रमण के लिए व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण और मानसिकता में परिवर्तन जरूरी है। चौथा, सामुदायिक सहभागिता की बात तो की गई है, लेकिन कई बार स्थानीय समुदायों की अपनी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक बाधाएँ विद्यालयों के साथ सक्रिय जुड़ाव को सीमित कर सकती हैं। इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 विद्यार्थी सहभागिता और सशक्तीकरण की दिशा में एक प्रगतिशील दृष्टि

प्रस्तुत करता है, किंतु इसकी वास्तविक सफलता तभी संभव है जब शिक्षण संस्कृति, मूल्यांकन प्रणाली और विद्यालय-समुदाय संबंधों में ठोस और सतत बदलाव लाए जाएँ।

चर्चा

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का विश्लेषण यह दर्शाता है कि भारतीय शिक्षा नीति लगातार बदलते सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य के अनुरूप विकसित होती रही है। साहित्य समीक्षा से स्पष्ट हुआ कि पूर्ववर्ती ढाँचों, विशेषकर एन.सी.एफ. 2005 और एन.ई.पी. 2020, ने समावेशी, मूल्य-आधारित और गतिविधि-केंद्रित शिक्षण को प्रोत्साहित किया, किंतु अवसंरचना, संसाधनों और शिक्षक प्रशिक्षण की कमी ने इनके प्रभावी क्रियान्वयन को सीमित किया। हाल के अध्ययनों ने एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के विभिन्न आयामों, जैसे— करियर मार्गदर्शन, शारीरिक शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण और अनुभवात्मक अधिगम, को उजागर किया है, किंतु अधिकांश शोध एकल पहलुओं पर केंद्रित रहे हैं। इस स्थिति ने एक समग्र सैद्धांतिक और दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित किया। इसी संदर्भ में, प्रस्तुत विश्लेषण चार सैद्धांतिक दृष्टिकोणों (रचनावाद, पाठ्यचर्या सिद्धांत, शिक्षाशास्त्र और मानव पूंजी सिद्धांत) के आधार पर एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 को समझने का प्रयास करता है। रचनावाद के आलोक में यह रूपरेखा चरणबद्ध संरचना और खेल-आधारित अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करती है। पाठ्यचर्या सिद्धांत इस दस्तावेज को केवल दिशानिर्देश न मानकर एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करता है जो शिक्षा को न्याय और समानता की दिशा में रूपांतरित करने का प्रयास करता है। शिक्षाशास्त्र के दृष्टिकोण से यह समावेश, विविधता और सुरक्षित कक्षा संस्कृति की वकालत करता है, ताकि हाशिए पर पड़े विद्यार्थी भी शिक्षा में बराबर भागीदारी कर सकें। वहीं मानव पूंजी सिद्धांत दक्षता-आधारित शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और 21वीं सदी के कौशलों को राष्ट्र के आर्थिक विकास से जोड़ता है। प्रस्तुत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 कई स्तरों पर, जैसे संज्ञानात्मक और सामाजिक-भावनात्मक विकास, मानकीकरण और स्थानीय लचीलापन, परंपरा और आधुनिकता, तथा आदर्श और व्यवहार के बीच, संतुलन साधने का प्रयास करता है, परंतु फिर भी, कार्यान्वयन की चुनौतियाँ गंभीर हैं। मूल्यांकन प्रणाली में सामाजिक-भावनात्मक लक्ष्यों को मापने की अस्पष्टता, संसाधनों और अवसंरचना की असमानता, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और परीक्षा-प्रधान संस्कृति इसके प्रभावी क्रियान्वयन में बाधक हो सकती है।

इस प्रकार, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक दूरदर्शी और बहु-आयामी रूपरेखा है, किंतु इसकी सफलता नीति के आदर्शों और व्यावहारिक यथार्थों के बीच की खाई को पाटने पर निर्भर करेगी। यह अध्ययन दर्शाता है कि जब तक शिक्षक-सक्षमकरण, मूल्यांकन सुधार और संसाधन वितरण को प्राथमिकता नहीं दी जाती, तब तक दस्तावेज की आकांक्षाएँ पूर्ण रूप से साकार नहीं हो पाएँगी।

अनुशंसाएँ

- शिक्षकों को नियमित और प्रभावी प्रशिक्षण तथा सतत व्यावसायिक विकास प्रदान किया जाना चाहिए, ताकि वे एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के नवीन शिक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोणों को सजीव रूप में अपनाने में सक्षम हों।
- विद्यालयों की संसाधन-संपन्नता और अवसंरचना को मजबूती से विकसित किया जाना चाहिए, ताकि सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा, शारीरिक गतिविधियाँ और डिजिटल अधिगम सुचारु और प्रभावी ढंग से लागू हो सकें।
- मूल्यांकन प्रणाली को इस तरह पुनर्गठित किया जाना चाहिए कि यह केवल संज्ञानात्मक उपलब्धियों तक सीमित न रहे, बल्कि सहानुभूति, सहयोग, रचनात्मकता और समस्या-समाधान जैसी महत्वपूर्ण दक्षताओं का भी सटीक आकलन कर सके।
- शिक्षा को स्थानीय संस्कृति और समुदाय से घनिष्ठ रूप से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि यह केवल सैद्धांतिक आदर्श न रहकर सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में प्रासंगिक और व्यावहारिक बन सके।
- माध्यमिक स्तर पर करियर मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं को व्यापक और सुलभ रूप से उपलब्ध कराया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अपनी रुचियों और कौशलों के अनुरूप संतुलित और भविष्य-उन्मुख निर्णय ले सकें।

निष्कर्ष

एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 भारतीय शिक्षा में एक व्यापक और दूरदर्शी दस्तावेज के रूप में उभरता है, जो संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक आयामों को संतुलित करने का प्रयास करता है। यह स्पष्ट है कि यह रूपरेखा एन.ई.पी. 2020 के उद्देश्यों को मूर्त रूप देती है और विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक सफलता तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें सहानुभूति, नैतिकता, लचीलापन और जीवन कौशल से संपन्न बनाने का प्रयास करती है। साहित्य से मिले निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 एक बहु-आयामी दृष्टि प्रस्तुत करती है, चाहे वह अनुभवात्मक अधिगम हो, करियर मार्गदर्शन हो, शारीरिक शिक्षा हो या भारतीय ज्ञान प्रणालियों का एकीकरण, परंतु फिर भी चुनौतियाँ गंभीर बनी हुई हैं। मूल्यांकन प्रणाली में सामाजिक-भावनात्मक उद्देश्यों की अस्पष्टता, संसाधनों और अवसंरचना की असमानता, तथा शिक्षक प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी इसके सफल क्रियान्वयन को सीमित कर सकती है। परीक्षा-प्रधान संस्कृति और पारंपरिक शिक्षण पद्धतियाँ भी नई रणनीतियों को हाशिए पर धकेल सकती हैं। अतः दस्तावेज की सफलता केवल इसके आदर्शों पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक कार्यान्वयन और ठोस नीतिगत सहयोग पर निर्भर करेगी। यदि शिक्षक-सक्षमकरण, संसाधन वितरण और मूल्यांकन सुधार को प्राथमिकता दी जाए, तो एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 भारतीय शिक्षा को अधिक समावेशी, न्यायसंगत और भविष्य-उन्मुख बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ

कुमार, एस. 2023. विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 : करियर मार्गदर्शन अभ्यास के निहितार्थ. *इंडियन जर्नल ऑफ करियर एंड लाइवलीहुड प्लानिंग*. 12(1), पृ.सं. 58–78.

गोस्वामी, वाई. 2023. राजस्थान में शिक्षक-शिक्षार्थी शिक्षकों की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के प्रति जागरूकता पर एक अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन अकैडमिक वर्ल्ड*. 2(11), पृ.सं. 50–52.

प्रजापति, ए.बी. 2025. टीचिंग एप्टीट्यूड फॉर फोस्टरिंग 21st सेंचुरी स्किल्स इन एन.सी.एफ.-एस.ई. क्लासरूम्स. अंक : अप्रैल. एस.एस.आर.एन., एल्सेवियर. 10.2139/ssrn.5132472

मेहरा, एस. और एम. सिंह. 2025. अनुभवात्मक अधिगम : एन.सी.एफ. 2023 में प्रभावी शिक्षण के लिए एक रूपरेखा. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी*. 13(1), पृ.सं. 2960–2964.

रा.शै.अ.प्र.प. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शर्मा, एम. 2023. मनोवैज्ञानिक स्तंभ : शिक्षा परिवर्तन में एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ. 2023 का सेतु. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज*. पृ.सं. 368–371.

शांडिल्य, एस. 2025. भारतीय ज्ञान प्रणाली (आई.के.एस.) मूल्यों का स्कूल शिक्षा में वैचारिक समावेशन : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का एक नीतिगत विश्लेषण. *एजुकेशनल क्वेस्ट : इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड एप्लाइड सोशल साइंसेज*. 16(1), पृ.सं. 9–15. https://doi.org/10.30954/2230-7311.1.2025.2

शुक्ला, टी., एम. प्राची और आर. नेगी. 2024. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.एफ. 2023 : शारीरिक शिक्षा का एकीकरण और प्रभाव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी, एक्सरसाइज एंड फिजिकल एजुकेशन*. 6(2), पृ.सं. 36–38. https://doi.org/10.33545/26647249.2024.v6.i2a.115

8

‘वीणा’— कक्षा 4 के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तक की समालोचनात्मक समीक्षा

जावेद खान*
डोरी लाल**
नसरीन***

29 जुलाई 2025 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के क्रियान्वयन को पाँच वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इसी नीति के शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 का निर्माण किया गया। इन अनुशंसाओं के आधार पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) ने अप्रैल 2024 में कक्षा 4 के लिए हिंदी पाठ्यपुस्तक ‘वीणा’ का सृजन किया, जिसे सत्र 2025–26 से विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जा चुका है। 1961 से ही रा.शै.अ.प्र.प. भारतीय विद्यालयी शिक्षा में समयानुकूल परिवर्तनों का सूत्रधार रही है और बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रमों का निर्माण करती रही है। हिंदी पाठ्यपुस्तक ‘वीणा’ इन्हीं सतत परिवर्तनों और शैक्षिक नवाचारों का परिणाम है। यह शोध-पत्र ‘वीणा’ का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के मानदंडों के आधार पर इसकी पाठ्यचर्या, विषयवस्तु, शिक्षण विधियाँ, साहित्यिक गुणवत्ता तथा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का गहन अध्ययन किया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा कक्षा 4 के लिए प्रकाशित हिंदी पुस्तक ‘वीणा’ प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण संसाधन है। यह पुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के दिशानिर्देशों के अनुसार तैयार की गई है, जो समग्र और मूल्य-आधारित शिक्षा पर केंद्रित है। पुस्तक के प्रमुख उद्देश्य भाषा कौशलों के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक जागरूकता और रचनात्मकता को बढ़ावा देना है। इसमें कहानियाँ, कविताएँ, पत्र-लेखन, नाटक पहेलियाँ और चित्र निरूपण आदि भी शामिल हैं। ‘वीणा’ का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियों में विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने, पढ़ने और लिखने की

**सहायक आचार्य*, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली 110 025
***सह-आचार्य*, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली 110 025
****आचार्या*, शिक्षा विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ 202 002

क्षमता, व्यापक शब्द-भंडार, और पुस्तक पढ़ने में रुचि विकसित करना है। कुल मिलाकर, यह पुस्तक विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए हिंदी शिक्षा को प्रभावी और रुचिकर बनाती है।

रा.शै.अ.प्र.प. की कक्षा 4 की हिंदी पुस्तक का नाम 'वीणा' केवल एक शीर्षक नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक, साहित्यिक और प्रतीकात्मक महत्व का एक गहरा प्रतीक है। 'वीणा' एक प्राचीन भारतीय वाद्य यंत्र है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा माना जाता है। यह ज्ञान, कला और सृजनात्मकता की देवी माँ सरस्वती का प्रतीक है, जिन्हें वीणावादिनी के रूप में भी पूजा जाता है। माँ सरस्वती शिक्षा, ज्ञान, प्रज्ञान और बुद्धि की देवी हैं। शास्त्रीय श्लोकों में वीणा को ज्ञान और संगीत की प्रेरणा माना गया है। उदाहरण के लिए, 'वीणावादिनि विद्या या त्वं बुद्धिप्रदायिनी। सङ्गीतं साहित्यं च सर्वं त्वं प्रेरति प्रभो॥' श्लोक यह दर्शाता है कि वीणा विद्या, बुद्धि, संगीत और साहित्य की उत्पत्ति का स्रोत है। इस प्रकार, पुस्तक का नामकरण 'वीणा' पुस्तक के उद्देश्य को सार्थक सिद्ध करता है।

पुस्तक का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ संरेखण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के समग्र और मूल्य-आधारित दृष्टिकोण पर विशेष जोर दिया गया है, जिसमें भारतीय संस्कृति, परंपराओं और स्थानीय ज्ञान को संरक्षित करने (4.4 एन.ई.पी., 2020, पृ.सं.14) एवं प्रोत्साहित करने की बात कही गई है। इसी संदर्भ में यह हिंदी पाठ्यपुस्तक शिक्षा नीति के उद्देश्यों की प्रासंगिकता के अनुरूप है। पुस्तक विद्यार्थियों को उनकी संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करती है, जिससे वे अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व महसूस करें। यह पुस्तक शिक्षा को केवल शैक्षणिक ज्ञान के रूप में नहीं, बल्कि एक समग्रता के रूप में प्रस्तुत करती है, जो विद्यार्थियों में रचनात्मकता, संवेदनशीलता और सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित कर सके। प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों में न केवल भाषायी कौशलों को विकसित करने का प्रयास करती है, अपितु नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी विकसित करती है, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति के समग्र शिक्षण आयाम के अनुरूप है। पुस्तक में शामिल कहानियाँ, कविताएँ और गतिविधियाँ, जैसे 'चिड़िया का गीत' और 'बगीचे का घोंघा', न केवल भाषा कौशलों को विकसित करते हैं, बल्कि पर्यावरणीय जागरूकता, नैतिकता और सृजनात्मकता की क्षमता का विकास करते हैं।

पुस्तक का भौतिक आवरण

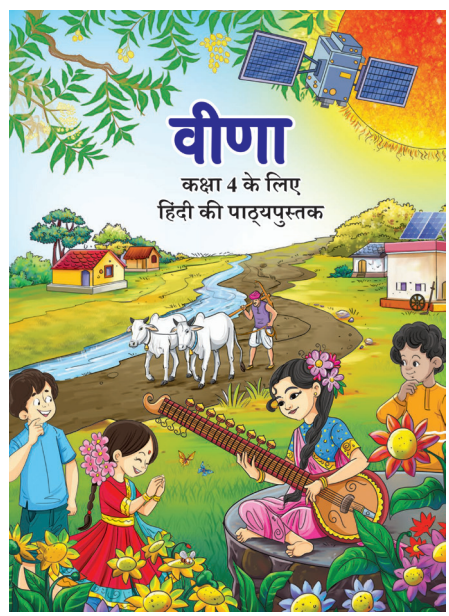

'वीणा' शीर्षक विद्यार्थियों के लिए अत्यंत जिज्ञासापूर्ण और प्रेरणादायक है, क्योंकि यह ज्ञान की ओर अग्रसर होने की सकारात्मक दिशा और मधुर छवि को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है। पाठ्यपुस्तक का आवरण पृष्ठ भारतीय संस्कृति, ज्ञान और आधुनिकता का संतुलित चित्र प्रस्तुत करता है। शीर्षक बड़े और मोटे अक्षरों में लिखा गया है, जिससे पुस्तक की पहचान तुरंत हो जाती है। आवरण पृष्ठ के केंद्र में वीणा बजाती एक छोटी लड़की है जो ज्ञान, सृजनात्मकता और देवी सरस्वती के प्रतीक से जुड़ती है। उसके आस-पास चित्रित बच्चे अलग-अलग गतिविधियों में संलग्न हैं, जो विद्यार्थियों की सक्रियता और बाल-सुलभ जिज्ञासा को दर्शाते हैं। पृष्ठभूमि में ग्रामीण परिदृश्य— हरे खेत, नदी, रंगीन छतों वाले घर और बैलगाड़ी आदि भारतीयता से जोड़ने का सक्रिय प्रयास हैं। साथ ही, पेड़-पौधे, फूल, तितलियाँ और मधुमक्खियाँ प्रकृति और पर्यावरण चेतना के प्रतीक हैं। इसके विपरीत, ऊपरी कोने में बना उपग्रह का प्रतिबिंब आधुनिक तकनीक और प्रगति का द्योतक है। हरा, नीला, पीला और लाल जैसे जीवंत रंग आवरण पृष्ठ को आकर्षक बनाते हैं। आवरण पृष्ठ के पीछे वर्णित 'ई-पाठशाला' डिजिटल संसाधनों को अभिभावकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए सुलभ बनाता है। इसमें क्यू.आर. कोड व ऑनलाइन लिंक के माध्यम से सामग्री प्राप्त करने की जानकारी दी गई है। यह विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावकों के लिए उपयोगी है, उन्हें तकनीक से जोड़कर 'डिजिटल सहायक' की भूमिका निभाने में मदद करता है। पृष्ठ पर दी गई गतिविधियाँ अभिभावकों और विद्यार्थियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देती हैं, जिससे घर का माहौल भी शिक्षाप्रद और सकारात्मक होने में सहायक होगा। समग्र रूप से यह आवरण भारतीय विरासत और एन.ई.पी. 2020 में निहित सांस्कृतिक जड़ों को सशक्त रूप से दर्शाता है

विषयवस्तु का अनुक्रमण

पाठ्यपुस्तक में पारंपरिक विषय-सूची या अनुक्रमणिका के स्थान पर 'कहाँ क्या है' शीर्षक दिया गया है। इसमें पाठों के नाम चित्रों के साथ प्रदर्शित किए गए हैं, जो लिखित सामग्री को स्पष्ट करने में सहायक सामग्री का कार्य करते हैं। पुस्तक में रंगों और आकर्षक चित्रों का प्रयोग इसे सरल, रोचक और दर्शनीय बनाता है। बड़े आकार के अक्षरों और जीवंत रंगों का उपयोग इसे आंशिक दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से उपयोगी बनाता है। साथ ही, चित्रों के माध्यम से वाक्यों और पहेलियों को अधिक स्पष्ट और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। विषयवस्तु की क्रमबद्धता को विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल रखने का प्रयास किया गया है। जिसमे हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं का सम्मिश्रण किया गया है।

पुस्तक की विषयवस्तु

'वीणा' पुस्तक की विषयवस्तु विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, अभिव्यक्तिपरक, कौशलों के विकास के साथ-साथ भाषायी कौशलों, तार्किकता, रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता पर आधारित है। पुस्तक में कुल 13 पाठ तथा हर पाठ के साथ सहायक (सूक्ष्म) पाठ भी शामिल हैं, जो कहानियों, कविताओं, पत्रों और संवादों जैसे विविध साहित्यिक रूपों को समाहित करते हैं।

प्रत्येक पाठ को कक्षा 4 के विद्यार्थियों (9–10 वर्ष की आयु) की बौद्धिक और भावनात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। पाठ्यचर्या का आधार एन.ई.पी. 2020 के सिद्धांत हैं, जो भाषा शिक्षण में रचनात्मकता, नैतिकता, और सांस्कृतिक जड़ों को जोड़ने पर जोर देते हैं (4.18 एन.ई.पी. 2020, पृ.सं. 16)। पुस्तक का प्रारूप एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 के दिशानिर्देशों का पालन करता है, जो समावेशी और समग्र शिक्षा को प्राथमिकता देता है (एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023, पृ.सं. 45)। प्रत्येक पाठ के अंत में अभ्यास प्रश्न, रचनात्मक गतिविधियाँ और समूह चर्चाएँ शामिल हैं, जो शिक्षण प्रक्रिया को संवादात्मक और रुचिकर बनाती हैं। पुस्तक की सामग्री विद्यार्थियों की आयु और समझ के स्तर के अनुरूप है। पाठों की भाषा सरल, सहज और बोधगम्य है, जिससे विद्यार्थी विषयों को आसानी से समझ पाते हैं। उदाहरण के लिए, 'चिड़िया का गीत' कविता में छोटे छंद और सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है, जो कविता को न केवल समझने में, बल्कि याद रखने में भी सहायक बनाते हैं। साथ ही, पुस्तक में नैतिक मूल्यों, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समरसता जैसे विषयों को शामिल किया गया है, जो विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'बगीचे का घोंघा' कहानी में घोंघे के जीवन को मानवीय भावनाओं से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में सहानुभूति और संवेदनशीलता जैसे भाव विकसित होते हैं।

विषयवस्तु के आधार पर पुस्तक को पाँच आयामों में बाँटा जा सकता है—

आयाम	पाठ	पृष्ठ संख्या
भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति व पर्यावरण	ऐसा वर दो, चिड़िया का गीत, नीम (कविता), बागीचे का घोंघा, कविता का कमाल, शतरंज की मात, उदाहरण के लिए वामन अवतार की कथा आदि	1, 2, 27, 17, 127, 139, 104
स्वास्थ्य एवं आहार	हमारा आहार, गोलगप्पा, मिठाइयों का सम्मेलन, जलेबी	40, 76, 105, 115
भौगोलिक व सांस्कृतिक विविधता	ओणम के रंग, जयपुर से पत्र, चेरापूंजी के मेहमान	90, 62, 60
वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति	हमारा आदित्य, एल-1, मति की उड़ान	154, 16
मनोरंजन व जिज्ञासा	आसमान गिरा, सुन इमली के दाने सुन, हवा और धूल, कैमरा	51, 125, 89, 116

गतिविधियाँ और स्वयं मूल्यांकन

'वीणा' में प्रत्येक पाठ के साथ अभ्यास प्रश्न, रचनात्मक गतिविधियाँ और समूह चर्चाएँ शामिल हैं, जो पढ़ने, लिखने, और बोलने के कौशलों को विकसित करती हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता और सहभागिता को बढ़ावा देती हैं। कुछ प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं—

- चित्र-आधारित गतिविधियाँ— 'सीखो' में चित्रों के आधार पर कहानी पूर्ण करने की गतिविधि विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता को प्रोत्साहित करती है (पृ.सं. 123)।

- समूह चर्चाएँ— 'बगीचे का घोंघा' में विद्यार्थियों से अपने अनुभव साझा करने को कहा जाता है, जो सामाजिक कौशल को बढ़ावा देता है।
- कविता और अभिनय— कविताओं को गाने या अभिनय के माध्यम से सीखने की गतिविधियाँ, जैसे 'चिड़िया का गीत' से भाषा को सीखने के प्रति रुचि जागृत होती हैं।
- रचनात्मकता और सहभागिता— गतिविधियाँ विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से पाठ में संलग्न करती हैं। उदाहरण के लिए, 'कविता का कमाल' में विद्यार्थियों से अपनी कविता लिखने को कहा जा सकता है, जो रचनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करेगा।
- पुस्तक में 'करें' या 'चुनौती' नामक गतिविधियों का यथोचित समावेश है, जिनमें विद्यार्थियों से अपने कार्य की समीक्षा करने को कहा गया है। ये गतिविधियाँ मौखिक, लिखित या रचनात्मक अभिव्यक्ति पर आधारित हैं, और विद्यार्थियों को यह जाँचने के लिए निर्देशित करती हैं कि क्या उन्होंने सभी चरण को सही प्रकार से पूरा किया है।
- मूल्य-आधारित शिक्षण गतिविधियाँ नैतिक मूल्यों, जैसे— सहानुभूति, सहयोग और पर्यावरण संरक्षण को सुदृढ़ करती हैं, जो एन.ई.पी. 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप है।
- कुछ अध्यायों में 'मैंने क्या सीखा?' या 'मैं बेहतर कैसे कर सकता हूँ?' जैसे प्रश्न हैं, जो विद्यार्थियों को सीखे ज्ञान का स्व-मूल्यांकन करने और भविष्य के लिए लक्ष्य निर्धारित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।
- कुछ गतिविधियाँ विद्यार्थियों में अपने सहपाठियों के साथ काम करने और एक-दूसरे की रचनात्मकता को जाँचने का मौका देती हैं, जो स्वयं और सहपाठी मूल्यांकन पर बल देता है। साथ ही विद्यार्थी अपनी और अपने साथी की प्रगति की तुलना भी कर सकते हैं। अध्याय 5 'आसमान गिरा' में गतिविधि है— चित्रों के अनुसार शिक्षक की सहायता से कागज की पुतलियाँ बनाकर इस कहानी का अभिनय कक्षा में कीजिए, यह बहुत ही रोचक और प्रासंगिक है।

भाषा और साहित्यिक गुणवत्ता

- **भाषायी विशेषताएँ**— 'वीणा' की भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहमयी है, जो कक्षा 4 के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है। पाठों में प्रयुक्त शब्दावली और वाक्य संरचना विद्यार्थियों की समझ के स्तर के अनुरूप हैं। 'हमारा आहार' कविता सरल तथा मनोरंजक भाषा में प्रस्तुत की गई है। भाषा में लय और प्रवाह है, जो विद्यार्थियों में पढ़ने की रुचि का विकास करने में सहायक है।

- **बहुभाषावाद को बढ़ावा**— 'वीणा' के पाठ और गतिविधियाँ विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा और हिंदी के बीच सेतु का कार्य करते हैं, जिससे वे बहुभाषी परिवेश को स्वीकार करें। उदाहरण के लिए, पृष्ठ संख्या 101 में मलयालम लोक गीत का हिंदी रूपांतरण दिया गया है, साथ ही साथ मलयालम भाषा में लोकगीत लिखा गया है जो बहुभाषावाद को बढ़ावा देता है।

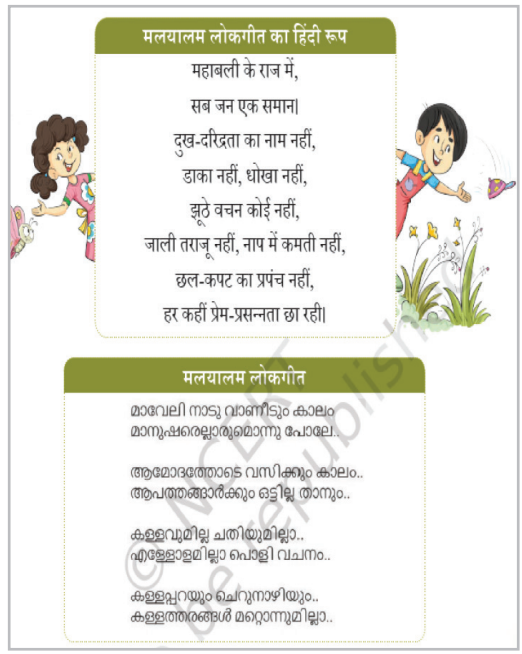

- शिक्षक पुस्तक का उपयोग करके कक्षा में बहुभाषी गतिविधियाँ आयोजित करा सकते हैं, जैसे—
  - विभिन्न भाषाओं में शब्दकोश बनाना।
  - स्थानीय लोककथाओं का हिंदी में अनुवाद।
  - कक्षा में बहुभाषी कविता पाठ या कहानी सत्र।

- **साहित्यिक गुणवत्ता**— पुस्तक में शामिल कहानियाँ और कविताएँ प्रसिद्ध लेखकों और कवियों द्वारा लिखी गई हैं, जो साहित्यिक मूल्यों में वृद्धि करने में सहायक हैं। पाठों में नैतिकता, हास्य और भावनात्मक गहराई का समावेश है। कविता 'कैमरा' में लय और ताल विद्यार्थियों में भाषा की लयबद्धता को समझने में मदद करती हैं (पृ.सं. 20)।

© NCERT not to be republished

- **भाषा का सरल और आकर्षक स्वरूप**— विद्यार्थियों के लिए समझने योग्य भाषा और रोचक कथानक पाठों को मनोरंजक बनाते हैं। उदाहरण के लिए, 'कविता का कमाल' पाठ में सरल वाक्य और प्रेरणादायक संदेश विद्यार्थियों को कविता लिखने के लिए आत्मविश्वास प्रदान करते हैं।
- **नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य**— पाठों में नैतिकता और भारतीय संस्कृति को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है।
- **शब्दावली विकास**— प्रत्येक पाठ के अंत में नए शब्द और उनके अर्थ दिए गए हैं, जो विद्यार्थियों की शब्दावली को समृद्ध करते हैं। उदाहरण के लिए, 'नकली हीरे' में शब्द जैसे 'निस्संदेह' और 'श्रेष्ठ' को समझाया गया है (पृ.सं. 82)।

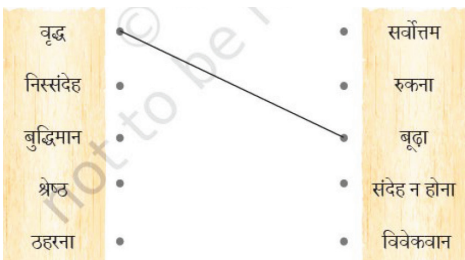

सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व

पुस्तक भारतीय संस्कृति और परंपराओं को प्रस्तुत करती है, जैसे— त्योहारों, परिवार और सामुदायिक जीवन पर आधारित पाठ। उदाहरण के लिए, कुछ पाठों में भारतीय परिवारों की एकता और सामुदायिक सहयोग को दर्शाया गया है, जो विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है (पृ.सं. 50)।

- **सामाजिक समरसता**— पाठों में सामाजिक समरसता और सहयोग को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल का विकास होगा।

- **पर्यावरणीय जागरूकता**— कई पाठ पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देते हैं, जो वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है। उदाहरण के लिए, 'आसमान गिरा' विद्यार्थियों को प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का भाव सिखाता है।
- **सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव**— पुस्तक भारतीय संस्कृति और परंपराओं को विद्यार्थियों तक पहुँचाती है, जिससे विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान सबल होगी।

शिक्षक सहायता

'वीणा' के साथ उपलब्ध रा.शै.अ.प्र.प. समाधान शिक्षकों के लिए उपयोगी हैं। ये समाधान प्रत्येक पाठ के प्रश्नों के उत्तर और व्याख्याएँ प्रदान करते हैं, जो शिक्षण प्रक्रिया को सुगम बनाते हैं। उदाहरण के लिए, 'बगीचे का घोंघा' के समाधान में प्रश्नों के उत्तर के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की व्याख्या भी दी गई है। इस पुस्तक में प्रत्येक अध्याय की शुरुआत में स्पष्ट उद्देश्य दिए गए हैं, जो शिक्षकों को साप्ताहिक या दैनिक योजना बनाने में सहायता करते हैं। इससे समय की बचत होती है और कक्षा शिक्षण अधिक

संरचित बनता है। पाठों में बहु-विषयी दृष्टिकोण (जैसे— भाषा, विज्ञान, नैतिक शिक्षा) अपनाया गया है, जिससे एकीकृत शिक्षण को बढ़ावा मिलता है। प्रत्येक अध्याय के अंत में 'करें' या 'चर्चा करें' जैसी गतिविधियाँ दी गई हैं, जो समूह कार्य, अभिनय और रचनात्मक लेखन पर आधारित हैं। ये गतिविधियाँ शिक्षकों को पारंपरिक निष्क्रिय शिक्षण से हटाकर सक्रिय शिक्षण की दिशा में ले जाती हैं। इसके अतिरिक्त, बहुविकल्पीय प्रश्न, लघु उत्तर और रचनात्मक लेखन जैसे अभ्यास शिक्षकों को रचनात्मक मूल्यांकन में मदद करते हैं। उदाहरणस्वरूप, पाठ 4 'हमारा आहार' में विद्यार्थियों से 'स्वस्थ भोजन के तीन उदाहरण' लिखने को कहा गया है (पृ.सं. 49)। इसका मूल्यांकन शिक्षक रूब्रिक के अनुसार कर सकते हैं— जैसे सामग्री के 5 अंक और भाषा के 3 अंक। इससे शिक्षकों को विद्यार्थियों की समझ का त्वरित फीडबैक मिलता है और जरूरतमंद विद्यार्थियों को अतिरिक्त अभ्यास भी सुझाया जा सकता है।

कुल मिलाकर, यह पुस्तक शिक्षकों के लिए एक बहुउपयोगी उपकरण है, जो केवल पाठ्यसामग्री ही नहीं, बल्कि कक्षा को अधिक जीवंत, सहभागी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने के व्यावहारिक सुझाव भी प्रदान करती है। इससे शिक्षण अधिक प्रभावी बनता है और शिक्षकों का कार्यभार भी कम होता है।

अभिभावक सहायता

अभिभावकों के लिए भी समाधान और गतिविधियाँ विद्यार्थियों के गृहकार्य में सहायता करती हैं। पुस्तक में शामिल गतिविधियाँ, जैसे— 'चित्र-आधारित लेखन' या 'समूह चर्चाएँ', अभिभावकों और विद्यार्थियों के बीच संवाद को बढ़ावा देती हैं। पुस्तक में 'करें' या 'बनाएँ' जैसी सामूहिक तथा घरेलू गतिविधियाँ हैं, जो अभिभावकों को भी बच्चे के रचनात्मक विकास में सहयोग को प्रोत्साहन का अवसर देती दिखती है। ये गतिविधियाँ दैनिक सामग्री (जैसे— कागज, रंग) पर आधारित हैं, जिससे अभिभावक बिना अतिरिक्त खर्च के बच्चे की रुचि सीखने में बनाए रख सकते हैं। साथ ही अभिभावक बच्चे की प्रगति का मूल्यांकन भी कर सकते हैं जिससे घर और विद्यालय के मध्य सामंजस्य स्थापित होगा।

पुस्तक में रंगीन चित्रों, कॉमिक्स और कार्टून का सम्मिश्रण हैं, जो अभिभावकों के लिए भी समझने में आसान प्रतीत होता है। अभिभावक इनका उपयोग कर बच्चों को कथा, कहानी सुना सकते हैं या परिचर्चा शुरू कर सकते हैं, विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए जो पढ़ाई से ऊब जाते हैं। पुस्तक को डिजिटल संसाधनों (जैसे— यूट्यूब वीडियो) से जोड़ना अभिभावकों के लिए उपयोगी हैं। पाठ 5 'आसमान गिरा' (कहानी) में डर और साहस की कथा है। अभिभावक विद्यार्थियों से प्रश्न जैसे 'कहानी से क्या सीख मिली?' पूछकर चर्चा कर सकते हैं और बच्चों के उत्तरों के आधार पर प्रगति जाँच सकते हैं। यदि अभिभावक यूट्यूब या रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट का उपयोग कर सकने में सक्षम हैं तो विद्यार्थियों का बेहतरीन मार्गदर्शन कर सकते हैं। इस हेतु यह पुस्तक आवश्यकता अनुरूप दिशानिर्देश भी देती दिखती है।

पुस्तक का शैक्षिक प्रभाव

- **भाषायी कौशलों का विकास**— 'वीणा' विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के चार प्रमुख कौशलों— सुनना, बोलना, लिखना और पढ़ना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पाठों में शामिल अभ्यास और गतिविधियाँ इन कौशलों को संतुलित रूप से बढ़ावा देती हैं। उदाहरण के लिए, 'सीखो' में विद्यार्थियों से पत्र-लेखन की गतिविधि कराई जाती है, जो लिखित अभिव्यक्ति को विकसित करती है (पृ.सं. 49)।
- **नैतिक और सामाजिक विकास**— पुस्तक में नैतिक मूल्यों, जैसे— सहानुभूति, दयालुता और सामाजिक समरसता पर जोर दिया गया है। यह विद्यार्थियों में नैतिक समझ और सामाजिक जिम्मेदारी को विकसित करता है। उदाहरण के लिए, 'बगीचे का घोंघा' विद्यार्थियों को जीव-जंतुओं के प्रति दयालुता का महत्व सिखाता है।
- **सांस्कृतिक जागरूकता**— पुस्तक भारतीय संस्कृति और परंपराओं को विद्यार्थियों तक पहुँचाती है। यह विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने में मदद करती है, जो एन.ई.पी. 2020 के सांस्कृतिक शिक्षा के लक्ष्यों के अनुरूप है (4.18 एन.ई.पी. 2020, पृ.सं. 22)।

निष्कर्ष

रा.शै.अ.प्र.प. की कक्षा 4 की हिंदी पुस्तक 'वीणा' प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण के लिए एक प्रभावी और समग्र संसाधन है। यह सरल भाषा, रुचिकर सामग्री और मूल्य-आधारित शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों में भाषायी कौशल, नैतिक समझ और सांस्कृतिक जागरूकता को विकसित करती है। पाठों में शामिल कहानियाँ, कविताएँ और गतिविधियाँ विद्यार्थियों को रचनात्मकता और सहभागिता के लिए प्रेरित करती हैं। 'वीणा' न केवल भाषा शिक्षण का साधन है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक और सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। वीणा के लेखन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 की अनुशंसाओं का पूर्ण रूप से पालन किया गया है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2003. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_2023.pdf

———. 2025. *'वीणा'— कक्षा 4 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.p

9

परियोजना आधारित विज्ञान शिक्षा प्राथमिक स्तर पर शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

आशुतोष प्रभाकर*

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की 'विज्ञान शिक्षा की उपलब्धि पर परियोजना आधारित शिक्षण यानि पी.बी.एल. के प्रभाव का अध्ययन' करना है। जिसमें विशेष रूप से, थीम 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' के प्रभाव की जांच और विज्ञान उपलब्धि, लैंगिक आधार और उपलब्धि स्तर के आधार पर की गई है। इस प्रयोगात्मक शोध में एकल-समूह, पूर्व-परीक्षण-उत्तर-परीक्षण अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में बिहार राज्य के गया जिले के टेकारी प्रखंड स्थित रामेश्वर मध्य विद्यालय, सलेमपुर से कक्षा सातवीं के कुल 44 विद्यार्थियों (31 छात्राएँ और 13 छात्र) का चयन किया गया। आँकड़ों के संकलन के लिए एक स्व-निर्मित विज्ञान उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसकी विश्वसनीयता 0.81 (क्रोनबैक अल्फा) पाई गई। विद्यार्थियों को 10 दिनों तक पी.बी.एल. आधारित शिक्षण प्रदान किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि पी.बी.एल. के छात्रों की विज्ञान उपलब्धि पर सकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव पड़ा। समग्र रूप से, पूर्व-परीक्षण और उत्तर-परीक्षण के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर ($t = 11.37$, $p < .001$) पाया गया। छात्राओं के प्राप्तांकों में महत्वपूर्ण वृद्धि (पूर्व-परीक्षण माध्य = 60.56, उत्तर-परीक्षण माध्य = 83.18, $t = 14.26$) देखी गई। इसी प्रकार, छात्रों के प्राप्तांकों में भी सार्थक सुधार (पूर्व-परीक्षण माध्य = 8.54, उत्तर-परीक्षण माध्य = 12.92, $t = 6.89$) पाया गया। दोनों समूहों में मानक विचलन में कमी ने सीखने की प्रक्रिया में एकरूपता को दर्शाया है। यह अध्ययन विज्ञान शिक्षण में पी.बी.एल.की प्रभावशीलता को प्रमाणित करता है और भविष्य में इसके व्यापक प्रयोग की संभावनाओं को इंगित करता है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों और शिक्षा नीति-निर्माताओं के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करते हैं।

**शिक्षक*, रामेश्वर मध्य विद्यालय सलेमपुर, टेकारी, बिहार 824 236

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विज्ञान शिक्षण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक चिंतन के विकास में सहायक होता है। वर्तमान में विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जा रहा है (कुमार और सिंह, 2021)। इन विधियों में से एक महत्वपूर्ण विधि परियोजना आधारित शिक्षण (पी.बी.एल.) है, जो विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़कर सक्रिय रूप से सीखने का अवसर प्रदान करती है (शर्मा, 2023)। परियोजना आधारित शिक्षण विधि विद्यार्थियों को समस्या समाधान, रचनात्मक चिंतन और टीम वर्क जैसे महत्वपूर्ण कौशलों को विकसित करने में सहायता करती है (पटेल और जोशी, 2022)। यह विधि विशेष रूप से विज्ञान जैसे विषयों में प्रभावी है, जहाँ सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ना आवश्यक होता है (गुप्ता और राव, 2023)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी अनुभवात्मक शिक्षण और कौशल विकास पर विशेष बल दिया गया है, जिसमें पी.बी.एल. एक प्रभावी माध्यम हो सकता है (वर्मा और कुमार, 2022)।

शैक्षिक अनुसंधानों से यह स्पष्ट हुआ है कि परंपरागत शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ विकसित करने में पूर्णतः सफल नहीं हो पाती हैं। विशेषकर प्राथमिक स्तर पर, जहाँ विद्यार्थी जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं से परिचित होते हैं, वहाँ एक प्रभावी शिक्षण विधि की आवश्यकता होती है (मिश्रा और राव, 2024)। पी.बी.एल. विधि इस संदर्भ में विशेष महत्व रखती है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने का अवसर प्रदान करती है। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए विद्युत उपकरणों से संबंधित विषयवस्तु को समझना विशेष महत्व रखता है, क्योंकि यह उनके दैनिक जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। इस संदर्भ में, 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' थीम पर आधारित पी.बी.एल. का प्रयोग विद्यार्थियों को विद्युत के सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप से समझने में सहायक हो सकता है (मिश्रा और राव, 2024)। विभिन्न अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि पी.बी.एल. का प्रभाव विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों पर अलग-अलग हो सकता है (सिंह और यादव, 2023)। शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में जेंडर-आधारित अंतर एक महत्वपूर्ण शोध का विषय रहा है। कुछ अध्ययनों में से यह पाया गया है कि विज्ञान विषय में छात्र और छात्राओं की उपलब्धि में अंतर हो सकता है (मेहता और दास, 2022)। पी.बी.एल. जैसी नवीन शिक्षण विधियाँ इस अंतर को कम करने में सहायक हो सकती हैं (शर्मा और अन्य, 2023)। इसी प्रकार, उच्च और निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों पर भी पी.बी.एल. का प्रभाव भिन्न-भिन्न हो सकता है (कुमार और गुप्ता, 2024)।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर पी.बी.एल. धारित थीम का प्रभाव जानने का प्रयास किया गया है। साथ ही, विभिन्न उपलब्धि स्तर के विद्यार्थियों और लिंग के आधार पर इस प्रभाव की तुलनात्मक जाँच की गई है। यह अध्ययन विज्ञान शिक्षण में पी.बी.एल. के प्रभावी उपयोग के लिए महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। विशेष रूप से, यह अध्ययन शिक्षकों को विभिन्न समूहों के विद्यार्थियों

की आवश्यकताओं के अनुरूप पी.बी.एल. का प्रयोग करने में मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

शोध का औचित्य

शिक्षा में नवाचार और प्रभावी शिक्षण विधियों की खोज निरंतर जारी है। विज्ञान शिक्षण में परियोजना आधारित शिक्षण (पी.बी.एल.) एक महत्वपूर्ण नवाचार है, जिसने पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित किया है। विभिन्न शोध अध्ययनों से पता चला है कि पी.बी.एल. विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक सार्थक और प्रभावी बनाता है (कुमार और सिंह, 2022)। हालाँकि, भारतीय संदर्भ में, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण में पी.बी.एल. के प्रभाव पर सीमित शोध कार्य हुआ है। वर्तमान शैक्षिक परिवेश में, विद्युत से संबंधित अवधारणाओं को समझना और उनका व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना महत्वपूर्ण है। अध्ययनों से पता चला है कि विद्यार्थियों को विद्युत से संबंधित अवधारणाओं को समझने में कठिनाई होती है (मेहता और राव, 2023)। इस संदर्भ में, पी.बी.एल. एक प्रभावी समाधान हो सकता है, क्योंकि यह सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ता है।

शोध अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि विभिन्न शैक्षिक स्तर के विद्यार्थियों पर शिक्षण विधियों का प्रभाव अलग-अलग होता है (शर्मा और अन्य, 2023)। हालाँकि, उच्च और निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों पर पी.बी.एल. के प्रभाव की तुलनात्मक जाँच पर बहुत कम शोध कार्य हुआ है। यह एक महत्वपूर्ण शोध अंतराल है, जिसे भरने की आवश्यकता है। जेंडर-आधारित शैक्षिक अंतर भी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय रहा है। कुछ अध्ययनों से पता चला है कि विज्ञान विषय में छात्र और छात्राओं की उपलब्धि में अंतर होता है (गुप्ता और दास, 2024)। यह अंतर विशेष रूप से विद्युत जैसे तकनीकी विषयों में अधिक स्पष्ट होता है। हालाँकि, पी.बी.एल. जैसी नवीन शिक्षण विधियों का इस अंतर पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस पर पर्याप्त शोध नहीं हुआ है। वर्तमान शोध में प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण में पी.बी.एल. की प्रभावशीलता को समझने में योगदान करेगा। इस प्रकार, यह शोध न केवल शैक्षिक ज्ञान में वृद्धि करेगा, बल्कि व्यावहारिक शिक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। विशेष रूप से, यह विज्ञान शिक्षण को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने में सहायक होगा (वर्मा और कुमार, 2023)।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक स्तर पर विज्ञान में विद्यार्थियों की उपलब्धि पी.बी.एल. आधारित थीम — 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' के प्रभाव की जाँच करना।
2. पी.बी.एल. आधारित थीम — 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' के प्रभाव की तुलना विद्यार्थियों की उपलब्धि पर — (i) जेंडर (छात्र और छात्राओं) के संबंध में करना।

परिकल्पनाएँ

1. (H_0) — प्राथमिक स्तर पर विज्ञान में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पी.बी.एल. आधारित थीम 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

2. (H_0) — उच्च और निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि पर पी.बी.एल. आधारित थीम 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध कार्यविधि

शोध अध्ययन, जिसका शीर्षक 'प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर परियोजना आधारित थीम — हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण का विज्ञान उपलब्धि में प्रभाव' है, एक प्रयोगात्मक शोध है जिसमें 'एकल-समूह पूर्व-परीक्षण उत्तर-परीक्षण अभिकल्प' का प्रयोग किया गया है। यह शोध विधि, जो यह सुनिश्चित करती है कि विद्यार्थियों को समतुल्य समूहों में विभाजित किया जाए, शोध के लिए एक सुदृढ़ दृष्टिकोण है। इस अध्ययन में स्वतंत्र चर 'पी.बी.एल. आधारित गतिविधि रणनीति' है और आश्रित चर 'विज्ञान में विद्यार्थी उपलब्धि' है। पूर्व-परीक्षण उत्तर-परीक्षण समूह अभिकल्प प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान उपलब्धि में प्रगति का निर्धारण पूर्व-परीक्षण और उत्तर-परीक्षण प्राप्तांकों के बीच अंतर की गणना करके करता है।

समूह	पूर्व-परीक्षण	प्रक्रिया	उत्तर-परीक्षण
G	O1	X	O2
	विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पर आधारित हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण	विषय पर प्रक्रिया पी.बी.एल. आधारित शिक्षण गतिविधियाँ — 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण'	विज्ञान उपलब्धि परीक्षण पर आधारित 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण'

विद्यार्थियों के प्रथम समूह को पी.बी.एल. आधारित थीम 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' पर आधारित विज्ञान उपलब्धि परीक्षण दिया गया, जिससे विद्युत उपकरणों और उनके कार्य से संबंध की उनकी समझ का आकलन किया जा सके (पूर्व-परीक्षण)। पूर्व-परीक्षण के बाद, इस समूह को नियमित कक्षा परिवेश में 20 दिनों का उपचार दिया गया। इन गतिविधियों का केंद्र विद्युत उपकरणों की समझ, उनके संबंध और कार्यप्रणाली पर था। विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों में शामिल किया गया, जिससे उन्हें यह बेहतर समझने में मदद मिली कि विद्युत उपकरण कैसे काम करते हैं, उनके लिए किन सामग्रियों की आवश्यकता होती है आदि। 20 दिनों के शिक्षण के बाद, विद्यार्थियों को वही विज्ञान उपलब्धि परीक्षण (उत्तर-परीक्षण) दिया गया, जिससे प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जा सके।

अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या में बिहार राज्य के दक्षिणी क्षेत्र के गया जिले के प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित थे।

अध्ययन का न्यादर्श/प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन का न्यादर्श बिहार राज्य के दक्षिणी क्षेत्र के गया जिले के टेकारी प्रखंड के सलेमपुर स्थित रामेश्वर प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों से लिया गया। अध्ययन के लिए रामेश्वर प्राथमिक विद्यालय, सलेमपुर, टेकारी, गया की कक्षा सातवीं के 44 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस स्तर के विद्यार्थियों का चयन इसलिए किया गया, क्योंकि यह माना जाता

है कि इस स्तर तक विद्यार्थियों ने परीक्षण में सम्मिलित विज्ञान उपलब्धि से संबंधित प्रश्नों से निपटने के लिए आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर लिया होता है।

परियोजना आधारित चरणबद्ध गतिविधियाँ

परिचय और खोज

गतिविधि 1 — समूह-निर्माण

- विद्यार्थियों को 4–5 के समूहों में बाँटें, प्रत्येक समूह को एक नाम दें, समूह के सदस्यों में भूमिकाएँ बाँटें।

गतिविधि 2 — उपकरण अध्ययन

- घर से लाए गए विद्युत उपकरणों का निरीक्षण, उपकरणों के मुख्य भागों की पहचान, माइंड मैप का निर्माण

गतिविधि 3 — प्रस्तुतिकरण

- प्रत्येक समूह अपनी खोज प्रस्तुत करें, अन्य समूहों से प्रश्न और चर्चा
- पहले दिन की गतिविधि विद्युत उपकरणों से परिचय पर केंद्रित होती है। विद्यार्थियों को 4–5 के समूहों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक समूह घर से लाए गए विद्युत उपकरणों का अध्ययन करता है। वे उपकरणों के विभिन्न भागों की पहचान करते हैं, एक माइंड मैप बनाते हैं। इस माइंड मैप में वे उपकरण के मुख्य पुर्जे, उनके कार्य और आपसी संबंध दर्शाते हैं। सभी समूह अपनी खोज और समझ को कक्षा में प्रस्तुत करते हैं। इससे विद्यार्थियों में विद्युत उपकरणों की बुनियादी समझ विकसित होती है।

बुनियादी परिपथ

गतिविधि 1 — सामग्री परिचय

- बैटरी, एल.ई.डी., तार, स्विच का परिचय, सुरक्षा नियमों की जानकारी, उपकरणों के उपयोग का प्रदर्शन

परिपथ निर्माण

- सरल विद्युत परिपथ बनाना, कनेक्शन की जाँच, स्विच का परीक्षण

प्रयोग लेखन

- कार्यविधि लिखना, चित्र बनाना, परिणाम नोट करना

दूसरे दिन विद्यार्थी सरल विद्युत परिपथ बनाने का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं। शिक्षक सबसे पहले सुरक्षा नियमों की जानकारी देते हैं और एक सरल परिपथ बनाकर दिखाते हैं। फिर प्रत्येक समूह को बैटरी, एल.ई.डी. बल्ब, कनेक्टिंग तार और स्विच दिए जाते हैं। विद्यार्थी इनसे एक कार्यशील परिपथ बनाते हैं। वे स्विच को ऑन-ऑफ करके परिपथ का परीक्षण करते हैं और अपने प्रयोग को विज्ञान की कॉपी में लिखते हैं।

परियोजना योजना

गतिविधि 1 — उपकरण चयन

- उपलब्ध परियोजनाओं की सूची — टेबल लैंप, छोटा पंखा, डोरबेल, नाइट लाइट

गतिविधि 2 — डिजाइन

- उपकरण का चित्र बनाना, आवश्यक सामग्री की सूची, कार्य योजना तैयार करना

गतिविधि 3 — योजना प्रस्तुति

- डिजाइन दिखाना, कार्य विधि समझाना, फीडबैक लेना

तीसरे दिन परियोजना की योजना बनाने पर ध्यान दिया जाता है। प्रत्येक समूह को चार विकल्पों — टेबल लैंप, छोटा पंखा, डोरबेल या नाइट लाइट में से एक चुनना होता है। वे अपने चुने हुए उपकरण का विस्तृत डिजाइन बनाते हैं, जिसमें सभी आवश्यक पुर्जों को दर्शाया जाता है। साथ ही वे आवश्यक सामग्री की सूची और निर्माण की क्रमबद्ध योजना तैयार करते हैं। दिन के अंत में सभी समूह अपनी योजना प्रस्तुत करते हैं।

निर्माण कार्य

गतिविधि 1 — सामग्री

- आवश्यक उपकरण लेना, सामग्री की जाँच, कार्यस्थल तैयार करना

गतिविधि 2 — उपकरण निर्माण

- योजना के अनुसार निर्माण, कनेक्शन जोड़ना, प्रारंभिक परीक्षण

गतिविधि 3 — दस्तावेजीकरण

- निर्माण प्रक्रिया लिखना, चित्र/फोटो लेना, समस्या और समाधान नोट करना

चौथे दिन वास्तविक निर्माण कार्य होता है। विद्यार्थी अपनी योजना के अनुसार उपकरण बनाना शुरू करते हैं। शिक्षक की निगरानी में वे सभी विद्युत कनेक्शन जोड़ते हैं और परिपथ का परीक्षण करते हैं। सफल परीक्षण के बाद वे अपने उपकरण को आकर्षक बनाने के लिए सजावट करते हैं। प्रत्येक समूह अपनी निर्माण प्रक्रिया को चित्रों या फोटो के माध्यम से दर्ज करता है और आने वाली समस्याओं और उनके समाधान को नोट करता है।

प्रदर्शन और प्रस्तुति

गतिविधि 1 — अंतिम परीक्षण

- उपकरण की जाँच, आवश्यक सुधार, प्रदर्शन की तैयारी

गतिविधि 2 — प्रस्तुतिकरण

- उपकरण का प्रदर्शन, कार्यविधि की व्याख्या, प्रश्नोत्तर

गतिविधि 3 — मूल्यांकन

- साथियों से फीडबैक, स्व-मूल्यांकन, शिक्षक का मूल्यांकन

अंतिम दिन प्रदर्शन और मूल्यांकन का होता है। सभी समूह सबसे पहले अपने उपकरणों का अंतिम परीक्षण करते हैं और यदि कोई समस्या है तो उसे ठीक करते हैं। फिर वे अपने उपकरण की कार्यप्रणाली समझाने के लिए एक छोटी प्रस्तुति तैयार करते हैं। प्रत्येक समूह को अपना उपकरण कक्षा में प्रदर्शित करने, उसकी विशेषताएँ बताने और साथियों के प्रश्नों के उत्तर देने का अवसर मिलता है। शिक्षक विद्यार्थियों के कार्य का मूल्यांकन निर्धारित मानदंडों के आधार पर करते हैं।

पूरी परियोजना के दौरान सुरक्षा सर्वोपरि रहती है। शिक्षक सभी विद्युत कनेक्शन की निगरानी करते हैं, सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थी केवल कम वोल्टेज की बैटरियों का उपयोग करें और औजारों को सही तरीके से संभालें। विद्यार्थी अपना कार्यस्थल साफ रखते हैं और जरूरत पड़ने पर सुरक्षा उपकरण पहनते हैं। पूरी प्रक्रिया का मूल्यांकन भागीदारी, विद्युत अवधारणाओं की समझ, निर्माण की सफलता,

प्रस्तुतिकरण कौशल और समस्या समाधान क्षमता के आधार पर किया जाता है।

उद्देश्यपूर्ण खोज

विज्ञान उपलब्धि में पी.बी.एल. थीम — 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' पर आधारित विद्यार्थियों के पूर्व-परीक्षण और उत्तर-परीक्षण प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यार्थियों के पूर्व-परीक्षण और उत्तर-परीक्षण प्राप्तांकों के बीच का अंतर दर्शाता है कि हस्तक्षेप का उनकी विज्ञान उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। विद्यार्थी समूह के पूर्व-परीक्षण और उत्तर-परीक्षण प्राप्तांकों की गणना की गई तथा उनके माध्य और मानक विचलन की तुलना की गई।

तालिका 1.0 में परिकलित 't' मान और उनके संगत सार्थकता परीक्षणों को प्रस्तुत किया गया है। तालिका 1.0 में प्रदर्शित आँकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि पी.बी.एल. आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की विज्ञान उपलब्धि पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। परिणामों से यह ज्ञात होता है कि कुल 44 विद्यार्थियों के पूर्व-परीक्षण का माध्य प्राप्तांक 68.32 (मानक विचलन = 7.35) था, जो उत्तर-परीक्षण में बढ़कर 92.23 (मानक विचलन = 5.42) हो गया। माध्य प्राप्तांकों में यह 23.91 अंकों की उल्लेखनीय वृद्धि पी.बी.एल. के प्रभावी होने का स्पष्ट संकेत है। सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त t-मान 11.37 ($df = 43$, $p < .001$) 0.01 स्तर पर सार्थक है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि प्राप्तांकों में हुई वृद्धि यादृच्छिक नहीं है। साथ ही, मानक विचलन में कमी (7.35 से 5.42) यह दर्शाती है कि उत्तर-परीक्षण में विद्यार्थियों का प्रदर्शन अधिक समरूप रहा। इस प्रकार, प्राप्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि पी.बी.एल. आधारित शिक्षण विधि न केवल विद्यार्थियों की विज्ञान उपलब्धि को बढ़ाने में सफल रही है, बल्कि उनके सीखने के स्तर में भी एकरूपता लाने में सहायक सिद्ध हुई है।

पी.बी.एल. आधारित थीम — 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' के प्रभाव की तुलना छात्राओं की उपलब्धि के संबंध में करना

तालिका 1.0 — प्रीटेस्ट-पोस्ट टेस्ट के परिणाम विद्यार्थियों के अंक

परीक्षण	संख्या	मध्य	मानक विचलन	t-मान	विचलन	p-मान	टिप्पणी
पूर्व-परीक्षण	44	68.32	7.35	11.37	43	.000	प्रभावशाली या सार्थक
उत्तर-परीक्षण	44	92.23	5.42				

तालिका 1.1 — प्रीटेस्ट-पोस्ट टेस्ट के परिणाम छात्राओं के अंक

समूह	परीक्षण	संख्या	मध्य	मानक विचलन	t-मान	विचलन	p-मान	टिप्पणी
छात्राएँ	पूर्व-परीक्षण	31	60.56	6.85	14.26	30	.000	सार्थक
	उत्तर-परीक्षण	31	83.18	5.69				

तालिका 1.1 में प्रस्तुत आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि छात्राओं की विज्ञान उपलब्धि पर पी.बी.एल. आधारित शिक्षण का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कुल 31 छात्राओं के समूह का पूर्व-परीक्षण में माध्य प्राप्तांक 60.56 (मानक विचलन = 6.85) था, जो उत्तर-परीक्षण में बढ़कर 83.18 (मानक विचलन = 5.69) हो गया। माध्य प्राप्तांकों में यह 22.62 अंकों की महत्वपूर्ण वृद्धि दर्शाती है कि पी.बी.एल. आधारित शिक्षण छात्राओं की विज्ञान उपलब्धि को बढ़ाने में प्रभावी रहा है। सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त t-मान 14.26 (df = 30, p < .001) सांख्यिकीय रूप से 0.01 स्तर पर सार्थक है, जो दर्शाता है कि प्राप्तांकों में हुई वृद्धि यादृच्छिक नहीं है। साथ ही, मानक विचलन में कमी (6.85 से 5.69) यह भी दर्शाती है कि उत्तर-परीक्षण में छात्राओं का प्रदर्शन अधिक समरूप रहा। इस प्रकार, प्राप्ता परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि पी.बी.एल. आधारित शिक्षण विधि छात्राओं की विज्ञान उपलब्धि में सार्थक सुधार लाने में सफल रही है।

उपलब्धि पर पी.बी.एल. आधारित शिक्षण का सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कुल 13 छात्रों के समूह का पूर्व-परीक्षण में माध्य प्राप्तांक 8.54 (मानक विचलन = 1.3) था, जो उत्तर-परीक्षण में बढ़कर 12.92 (मानक विचलन = 0.94) हो गया। माध्य प्राप्तांकों में यह 4.38 अंकों की वृद्धि पी.बी.एल. आधारित शिक्षण के प्रभावी होने का स्पष्ट संकेत है।

सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त t-मान 6.89 (df = 12, p < .001) 0.01 स्तर पर सार्थक है, जो दर्शाता है कि प्राप्तांकों में हुई वृद्धि यादृच्छिक नहीं है। साथ ही, मानक विचलन में कमी (1.3 से 0.94) यह भी दर्शाती है कि उत्तर-परीक्षण में छात्रों का प्रदर्शन अधिक समरूप रहा। इस प्रकार, प्राप्त परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि पी.बी.एल. आधारित शिक्षण विधि छात्रों की विज्ञान उपलब्धि को बढ़ाने में सफल रही है और उनके सीखने के स्तर में एकरूपता लाने में भी सहायक सिद्ध हुई है।

तालिका 1.2 — प्रीटेस्ट-पोस्ट टेस्ट के परिणाम छात्रों के अंक

समूह	परीक्षण	संख्या	मध्य	मानक विचलन	t-मान	विचलन	p-मान	टिप्पणी
छात्र	पूर्व-परीक्षण	13	8.54	1.3	6.89	12	.000	सार्थक
	उत्तर-परीक्षण	13	12.92	.94				

पी.बी.एल. आधारित थीम — 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' के प्रभाव की तुलना छात्रों की उपलब्धि के संबंध में करना

तालिका 1.2 में प्रस्तुत आँकड़ों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की विज्ञान

निष्कर्ष एवं परिचर्चा

प्रस्तुत शोध अध्ययन विज्ञान शिक्षण में पी.बी.एल. की प्रभावशीलता को प्रमाणित करता है। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि थीम 'हम बनाएँगे अपना विद्युत उपकरण' पर आधारित

पी.बी.एल. का प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की विज्ञान उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यह निष्कर्ष कुमार और सिंह (2022) के अध्ययन से भी समर्थित होता है, जिन्होंने पाया कि पी.बी.एल. विज्ञान शिक्षण को अधिक प्रभावी और रुचिकर बनाता है। समग्र विश्लेषण से प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों के पूर्व-परीक्षण और उत्तर-परीक्षण के प्राप्तांकों में महत्वपूर्ण अंतर है। पूर्व-परीक्षण में प्राप्त माध्य 68.32 (मानक विचलन = 7.35) से बढ़कर उत्तर-परीक्षण में 92.23 (मानक विचलन = 5.42) हो गया। यह वृद्धि सांख्यिकीय रूप से सार्थक ($t = 11.37$, $p < .001$) पाई गई, जो वर्मा और कुमार (2023) के निष्कर्षों से संबंध दर्शाता है। उन्होंने भी अपने अध्ययन में पाया कि पी.बी.एल. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सुधार लाता है।

लैंगिक संदर्भ में विश्लेषण करने पर पाया गया कि छात्राओं के प्राप्तांकों में उल्लेखनीय वृद्धि (60.56 से 83.18, $t = 14.26$, $p < .001$) हुई। मानक विचलन में कमी (6.85 से 5.69) यह दर्शाती है कि पी.बी.एल. ने छात्राओं के सीखने को अधिक समरूप बनाया। इसी प्रकार, विद्यार्थियों के प्राप्तांकों में भी महत्वपूर्ण वृद्धि (8.54 से 12.92, $t = 6.89$, $p < .001$) देखी गई, और मानक विचलन में कमी (1.3 से 0.94) ने सीखने की प्रक्रिया में एकरूपता को दर्शाया। यह निष्कर्ष मेहता और दास (2022) के अध्ययन से समर्थित होता है, जिन्होंने पाया कि पी.बी.एल. लैंगिक अंतर को कम करने में प्रभावी होता है।

विद्युत उपकरणों से संबंधित विषयवस्तु के शिक्षण में पी.बी.एल. की विशेष प्रभावशीलता गुप्ता और राव (2023) के अध्ययन से भी पुष्ट होती है। उन्होंने पाया कि जब विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़कर सिखाया जाता है, तो उनकी समझ अधिक गहरी और स्थायी होती है। प्रस्तुत अध्ययन में भी विद्यार्थियों ने विद्युत उपकरणों की कार्यप्रणाली को बेहतर ढंग से समझा और उससे संबंधित व्यावहारिक ज्ञान प्राप्ता किया। शर्मा और अन्य (2024) ने अपने शोध में पाया कि पी.बी.एल. न केवल शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है, बल्कि विद्यार्थियों में समस्या समाधान, रचनात्मक चिंतन और सहयोगात्मक कार्य जैसे महत्वपूर्ण कौशलों का भी विकास करता है। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम इस निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं, क्योंकि विद्यार्थियों ने विद्युत उपकरणों से संबंधित परियोजनाओं पर कार्य करते हुए इन कौशलों का प्रदर्शन किया।

शैक्षणिक निहितार्थों की दृष्टि से यह अध्ययन कई महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करता है। प्रथम, विज्ञान शिक्षण में पी.बी.एल. का व्यापक प्रयोग किया जाना चाहिए, विशेषकर उन विषयों में जो विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। द्वितीय, शिक्षकों को पी.बी.एल. आधारित गतिविधियों के निर्माण और क्रियान्वयन में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। तृतीय, पाठ्यचर्या में पी.बी.एल.को एक अनिवार्य घटक के रूप में एकीकृत किया जाना चाहिए। मिश्रा और राव (2024) के अनुसार, पी.बी.एल. की सफलता के लिए उचित योजना, संसाधन और शिक्षक प्रशिक्षण आवश्यक है। इस संदर्भ में, विद्यालयों को आवश्यक भौतिक और शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए।

साथ ही, शिक्षकों को नियमित रूप से कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

भविष्य में शोध की संभावनाओं की दृष्टि से, विभिन्न विषयों में पी.बी.एल. की प्रभावशीलता का अध्ययन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पी.बी.एल. के दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन, विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर इसके प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन और पी.बी.एल. के माध्यम से विकसित होने वाले विभिन्न कौशलों का विस्तृत अध्ययन भी आवश्यक है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि पी.बी.एल. एक प्रभावी शिक्षण विधि है, जो न केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाती है, बल्कि सीखने की प्रक्रिया को अधिक सार्थक और रुचिकर भी बनाती है। यह विधि विशेष रूप से विज्ञान जैसे विषयों में, जहाँ सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ना आवश्यक होता है, अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

संदर्भ

कुमार, ए. और आर. सिंह. 2021. विज्ञान शिक्षण में परियोजना आधारित अधिगम की प्रभावशीलता : एक मेटा-विश्लेषण. *एजुकेशनल स्टडीज इन साइंस*. 15(4), पृ.सं. 156–170. स्प्रिंगर.

——— और पी. सिंह. 2022. परियोजना आधारित अधिगम : विज्ञान उपलब्धि बढ़ाने का एक साधन. *साइंस एजुकेशन रिव्यू*. 12(2), पृ.सं. 78–92. टेलर एंड फ्रांसिस.

कुमार, वी. और एम. गुप्ता. 2024. पीबीएल के माध्यम से विज्ञान शिक्षा में उपलब्धि अंतराल का विश्लेषण. *कंटेम्पोरेरी एजुकेशनल साइकोलॉजी*. 42(1), पृ.सं. 45–59. एल्सेवियर.

गुप्ता, आर. और ए. दास. 2024. विज्ञान अधिगम में लैंगिक अंतर : नवाचारी शिक्षण विधियों की भूमिका. *जर्नल ऑफ साइंस एजुकेशन*. 18(2), पृ.सं. 89–102. स्प्रिंगर नेचर.

गुप्ता, ए. और एम. राव. 2023. माध्यमिक स्तर पर विज्ञान उपलब्धि में परियोजना आधारित शिक्षण का प्रभाव. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*. 45(3), पृ.सं. 234–248. एल्सेवियर.

पटेल, के. और आर. जोशी. 2022. भारतीय संदर्भ में परियोजना आधारित अधिगम : अवसर और चुनौतियाँ. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन*. 32(2), पृ.सं. 145–158. नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग, नई दिल्ली.

मिश्रा, ए. और ए. राव. 2024. भारतीय कक्षाओं में पीबीएल के क्रियान्वयन की रणनीतियाँ. *टीचिंग एंड टीचर एजुकेशन*. 52(1), पृ.सं. 123–137. एल्सेवियर.

मेहता, आर. और के. दास. 2022. भारतीय विद्यालयों में विज्ञान उपलब्धि का लैंगिक आधार पर विश्लेषण. *एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन*. 28(4), पृ.सं. 312–326. स्प्रिंगर.

मेहता, ए. और पी. राव. 2023. विद्युत अवधारणाओं की समझ : चुनौतियाँ और समाधान. *जर्नल ऑफ साइंस टीचिंग*. 25(3), पृ.सं. 167–182. नेशनल साइंस टीचर्स एसोसिएशन.

वर्मा, ए. और आर. कुमार. 2023. नवाचारी विधियों के माध्यम से समावेशी विज्ञान शिक्षा. *जर्नल ऑफ इनक्लूसिव एजुकेशन*. 15(2), पृ.सं. 112–126. टेलर एंड फ्रांसिस.

——— और ए. कुमार. 2022. भारतीय विद्यालयों में परियोजना आधारित अधिगम : एक व्यवस्थित समीक्षा. *एजुकेशनल रिसर्च रिव्यू*. 28(4), पृ.सं. 189–204. एल्सेवियर.

शर्मा, ए., आर. कुमार और ए. वर्मा. 2024. परियोजना आधारित अधिगम और 21वीं सदी के कौशलों का विकास. *लर्निंग एंड इंस्ट्रक्शन*. 35(1), पृ.सं. 78–93. एल्सेवियर.

शर्मा, एम. 2023. विज्ञान शिक्षण में नवाचारी दृष्टिकोण : एक भारतीय परिप्रेक्ष्य. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल इनोवेशन*. 22(4), पृ.सं. 201–215. सेज पब्लिकेशंस.

शर्मा, पी., आर. सिंह और ए. कुमार. 2023. पीबीएल के माध्यम से विज्ञान शिक्षा में लैंगिक समानता. *जेंडर एंड एजुकेशन*. 31(2), पृ.सं. 178–192. टेलर एंड फ्रांसिस.

सिंह, एम. और आर. यादव. 2023. छात्र उपलब्धि पर पीबीएल के विभेदक प्रभाव. *रिसर्च इन साइंस एजुकेशन*. 38(3), पृ.सं. 267–281. स्प्रिंगर.

10

कक्षा में आनंद— सीखने का जीवंत अनुभव

पद्मा यादव*

कक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के सर्वांगीण विकास और सक्रिय अधिगम का केंद्र होती है। लेख मे बताया गया है कि कक्षा में आनंद तब उत्पन्न होता है जब वहाँ सुरक्षा, स्वच्छता, पर्याप्त रोशनी और बाल-अनुकूल फर्नीचर उपलब्ध हो। कक्षा का वातावरण आकर्षक, प्रेरक और बच्चों की रुचियों के अनुसार सजाया जाता है, जिसमें उनके स्वयं के कार्य, चित्र, चार्ट और थीम आधारित सामग्री शामिल होती है। शिक्षक की पेडागॉजी बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक, समावेशी और संवेदनशील होती है। वे सरल, स्नेहपूर्ण और बहुभाषी-अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं, जिससे बच्चे बिना डर और बाधा के सीखने में सक्रिय रहते हैं। मूल्यांकन सहयोगात्मक, सतत और सकारात्मक होता है, जिसमें बच्चों की गलतियों को सीखने का अवसर माना जाता है। शिक्षक बच्चों को आत्म-मूल्यांकन और सहपाठी मूल्यांकन के अवसर भी देते हैं। इसके साथ ही, माता–पिता और समाज की सहभागिता आवश्यक है। घर और विद्यालय का संबंध, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और सामुदायिक परियोजनाएँ सीखने को वास्तविक जीवन से जोड़ती हैं। इस प्रकार, आनंददायी शिक्षा बच्चों को सक्रिय, आत्मविश्वासी और सीखने के लिए उत्साहित बनाती है।

कक्षा में आनंद आधुनिक शिक्षा की केंद्रीय अवधारणा है, जो यह मानती है कि सीखना तभी प्रभावी, स्थायी और सार्थक होता है जब बच्चा आनंद, सुरक्षा और आत्मविश्वास से भरे वातावरण में सीखता है। कक्षा केवल विषयवस्तु के हस्तांतरण का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक विकास का साझा मंच है। जब कक्षा में आनंद होता है तब सीखना बोझ नहीं रह जाता, बल्कि बच्चों के लिए एक स्वाभाविक, जीवंत और उत्साहपूर्ण अनुभव बन जाता है।

कक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के लिए आनंद, सुरक्षा और आत्मविश्वास से भरपूर वातावरण भी होनी चाहिए। जब कक्षा में सीखने की प्रक्रिया आनंदपूर्ण होती है, तब बच्चे स्वाभाविक रूप से सक्रिय, जिज्ञासु और रचनात्मक बनते हैं। ऐसी कक्षा में भय, दबाव और प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग, संवाद और सहभागिता का माहौल होता है।

आनंदपूर्ण कक्षा का निर्माण शिक्षक की सकारात्मक भूमिका से होता है। शिक्षक यदि बच्चों

**आचार्या*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110 016

की भावनाओं को समझते हुए, प्रेमपूर्ण व्यवहार अपनाते हैं और सीखने को खेल, गतिविधियों, कहानियों व अनुभवों से जोड़ते हैं, तो बच्चे सीखने को बोझ नहीं, बल्कि उत्सव के रूप में स्वीकार करते हैं। इसके साथ ही, बच्चों को अपनी बात कहने, प्रश्न पूछने और गलती करने की स्वतंत्रता देना भी कक्षा में आनंद का महत्वपूर्ण आधार है।

अतः कक्षा में आनंद केवल हँसी-मजाक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ हर बच्चा सम्मानित, सुरक्षित और प्रेरित महसूस करता है। ऐसी आनंदपूर्ण कक्षा ही समग्र विकास, सार्थक अधिगम और जीवनभर सीखने की नींव रखती है।

कक्षा में आनंद स्थापित करने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक केवल विषय का ज्ञाता नहीं, बल्कि बच्चों के सीखने के सहयात्री होते हैं। जब शिक्षक बच्चों की भावनाओं को समझते हैं, उनकी रुचियों और क्षमताओं का सम्मान करते हैं तथा स्नेहपूर्ण और संवेदनशील व्यवहार अपनाते हैं, तब कक्षा में एक सकारात्मक माहौल बनता है। शिक्षक का मुस्कराता चेहरा, प्रोत्साहन भरे शब्द और धैर्यपूर्ण सुनना बच्चों के भीतर विश्वास और आनंद का संचार करता है। कक्षा में आनंद स्थापित करना प्रभावी शिक्षण-अधिगम की मूल शर्त है। इसके लिए शिक्षक की भूमिका, कक्षा का वातावरण और सीखने की प्रक्रिया— तीनों का संतुलित होना आवश्यक है।

कक्षा में आनंद स्थापित करने की रणनीतियाँ

आनंदपूर्ण कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया बाल-केंद्रित होती है। यहाँ पाठ्यपुस्तक शिक्षा का एकमात्र स्रोत नहीं होती, बल्कि खेल, गतिविधियाँ, प्रयोग, कहानियाँ, नाटक, गीत और वास्तविक जीवन के अनुभव सीखने के माध्यम बनते हैं। जब बच्चे खेलते हुए सीखते हैं, तब उनका मन सीखने में स्वतः रम जाता है। गतिविधि-आधारित और अनुभवात्मक अधिगम बच्चों को सक्रिय बनाता है तथा उनके भीतर जिज्ञासा और खोज की भावना को प्रोत्साहित करता है।

कक्षा में आनंद स्थापित करने हेतु निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं—

1. *सकारात्मक और सुरक्षित वातावरण का निर्माण*— कक्षा में भयमुक्त, अपनत्वपूर्ण और सम्मानजनक वातावरण बनाया जाए, जहाँ प्रत्येक बच्चा स्वयं को सुरक्षित और स्वीकार्य महसूस करे।
2. *गतिविधि-आधारित एवं खेल-आधारित शिक्षण*— पाठ्यवस्तु को खेल, प्रयोग, नाटक, कहानी और समूह गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करने पर सीखना आनंददायक बनता है।
3. *बच्चों की सक्रिय सहभागिता*— बच्चों को प्रश्न पूछने, विचार व्यक्त करने और निर्णय लेने के अवसर दिए जाएँ। उनकी भागीदारी से कक्षा जीवंत बनती है।
4. *विविध शिक्षण विधियों का प्रयोग*— गीत, कविता, चित्र, टी.एल.एम., डिजिटल साधन और स्थानीय संसाधनों का उपयोग कर सीखने में रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

5. *शिक्षक-विद्यार्थी के बीच स्नेहपूर्ण संबंध*— शिक्षक का सहानुभूतिपूर्ण, संवेदनशील और प्रेरक व्यवहार बच्चों में आत्मविश्वास और आनंद को बढ़ाता है।
6. *गलतियों को सीखने का अवसर मानना*— बच्चों की गलतियों पर दंड के बजाय मार्गदर्शन दिया जाए, ताकि वे बिना डर के सीख सकें।
7. *सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देना*— समूह कार्य और सहपाठी सीखने से आपसी सहयोग, संवाद और आनंद विकसित होता है।
8. *उत्सव, उपलब्धियों और प्रयासों की सराहना*— बच्चों के प्रयासों और छोटी-छोटी सफलताओं की प्रशंसा करने से उनमें प्रसन्नता और सीखने की प्रेरणा बढ़ती है।

इस प्रकार, उपयुक्त रणनीतियों के माध्यम से कक्षा को केवल अध्ययन का स्थान न बनाकर एक आनंदपूर्ण, जीवंत और समावेशी रूप से सीखने का अनुभव बनाया जा सकता है।

आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष कैसे होते हैं?

आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष केवल बैठकर पढ़ने का स्थान नहीं, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास और सक्रिय अधिगम का जीवंत केंद्र होते हैं। ऐसे कक्षा-कक्ष में भौतिक, भावनात्मक और शैक्षिक— तीनों पक्षों का संतुलित समावेश दिखाई देता है। कक्षा-कक्ष सुरक्षित, स्वच्छ, हवादार और पर्याप्त रोशनी वाला होता है, जहाँ फर्नीचर बच्चों की आयु, कद और आवश्यकता के अनुरूप होता है, ताकि वे सहज और आरामदायक महसूस करें। वातावरण आकर्षक और प्रेरक होता है— दीवारों पर बच्चों के अपने कार्य, चित्र, चार्ट, कविताएँ और सीखने से जुड़े पोस्टर लगे होते हैं, जो कक्षा को बच्चों की अपनी जगह बनाते हैं और उनमें गर्व व आत्मविश्वास जगाते हैं।

आनंददायी कक्षा-कक्ष में बैठने की व्यवस्था लचीली होती है, जहाँ पंक्तिबद्ध बैठने के साथ-साथ समूह में बैठने, फर्श पर गतिविधियाँ करने और आपसी चर्चा की पूरी सुविधा होती है। ऐसे कक्षा-कक्ष में पठन कोना, कला कोना, गणित/खेल कोना जैसे सीखने के कोने बनाए जाते हैं, जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से खोजने, प्रयोग करने और सीखने के अवसर देते हैं। यह कक्षा-कक्ष भयमुक्त और भावनात्मक रूप से सुरक्षित होता है, जहाँ बच्चे निडर होकर अपनी बात रख सकते हैं, प्रश्न पूछ सकते हैं और गलती को सीखने की प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा मान सकते हैं।

आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष सहभागिता को प्रोत्साहित करने वाले होते हैं। यहाँ संवाद, सहयोग और सामूहिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त स्थान और अवसर उपलब्ध होते हैं। स्थानीय संदर्भों से जुड़ी शिक्षण सामग्री, खेल-खिलौने, टी.एल.एम. और डिजिटल साधनों का संतुलित उपयोग सीखने को जीवन से जोड़ता है और बच्चों की रुचि को बनाए रखता है। आनंददायी शिक्षा के कक्षा-कक्ष ऐसे होते हैं जो बच्चों को सुरक्षित, सम्मानित और प्रेरित अनुभव कराते हुए उन्हें सक्रिय, आत्मविश्वासी और आनंद के साथ सीखने वाला बनाते हैं।

आनंददायी कक्षा की दीवारें कैसी होती हैं?

आनंददायी कक्षा की दीवारें केवल सजावट के लिए नहीं होतीं, बल्कि वे बच्चों के लिए मौन शिक्षक की

भूमिका निभाती हैं। ऐसी दीवारें बच्चों को बिना दबाव के देखने, पढ़ने, सोचने और सीखने के अवसर देती हैं। जब कक्षा की दीवारें बाल-अनुकूल, सुव्यवस्थित और अर्थपूर्ण होती हैं, तब वे सीखने की प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप से आनंददायी बना देती हैं।

आनंददायी कक्षा की दीवारों के रंग हल्के, शांत और आँखों को सुकून देने वाले होते हैं, जिससे बच्चों का ध्यान भटके बिना सीखने पर केंद्रित रहता है। दीवारें साफ-सुथरी और संतुलित रूप से सजी होती हैं; उन पर अनावश्यक या अत्यधिक सामग्री नहीं होती। दीवारों पर प्रदर्शित सभी सामग्री बच्चों की आँखों की ऊँचाई पर होती है, ताकि बच्चे स्वयं उन्हें देख सकें, पढ़ सकें और उनसे संवाद स्थापित कर सकें। ऐसी कक्षा की दीवारों पर बच्चों का स्वयं का कार्य प्रमुख रूप से प्रदर्शित होता है, जैसे— उनके बनाए चित्र, लेखन, गणितीय कार्य, शिल्प और रचनाएँ। इससे बच्चों में गर्व, आत्मसम्मान और कक्षा से जुड़ाव की भावना विकसित होती है। इसके साथ ही, सीखने से जुड़े सरल और स्पष्ट चार्ट तथा पोस्टर भी लगाए जाते हैं, जिनमें अक्षर, शब्द, संख्या, आकृतियाँ, पर्यावरण और नैतिक मूल्यों से संबंधित सामग्री शामिल होती है।

आनंददायी कक्षा की दीवारों पर थीम आधारित प्रदर्शन भी किया जाता है, जो पाठ्यक्रम या वर्तमान विषय के अनुसार समय-समय पर बदलता रहता है। इससे कक्षा में नवीनता बनी रहती है और सीखना जीवंत होता है। भाषा और गणित के कोने में शब्द भंडार, छोटी कविताएँ, पहेलियाँ, संख्या रेखा और पैटर्न जैसी सामग्री प्रदर्शित की जाती है, जो बच्चों को स्वतंत्र रूप से देखने और सोचने के लिए प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त, दीवारों पर मूल्य और व्यवहार से जुड़े छोटे-छोटे संदेश और चित्र होते हैं, जैसे— सहयोग, स्वच्छता, समय पालन, दया और साझा करने की भावना। स्थानीय संदर्भों और संस्कृति को दर्शाने वाले चित्र, लोककला, त्योहार और दैनिक जीवन से जुड़ी सामग्री बच्चों को अपने परिवेश से जोड़ती है और सीखने को अर्थपूर्ण बनाती है। इस प्रकार से आनंददायी कक्षा की दीवारें जब सोच-समझकर और बाल-केंद्रित दृष्टि से सजाई जाती हैं, तो वे बच्चों के लिए निरंतर सीखने, प्रेरणा और आनंद का सशक्त माध्यम बन जाती हैं।

आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड/ग्रीन बोर्ड का प्रयोग कैसे होता है?

आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड या ग्रीन बोर्ड केवल लिखने का साधन नहीं होता, बल्कि यह शिक्षक और बच्चों के बीच संवाद का सशक्त माध्यम बनता है। जब बोर्ड का स्वरूप बाल-अनुकूल होता है और उसका उपयोग उद्देश्यपूर्ण ढंग से किया जाता है, तब सीखना सरल, स्पष्ट और आनंदपूर्ण हो जाता है। इन कक्षाओं में प्रयुक्त ब्लैकबोर्ड/ग्रीन बोर्ड साफ, चिकना और बिना दरार का होता है, ताकि लिखावट स्पष्ट दिखाई दे। बोर्ड का आकार और ऊँचाई ऐसी होती है कि कक्षा के अंतिम पंक्ति में बैठा बच्चा भी उसे आसानी से देख सके। इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि बोर्ड पर तेज रोशनी का प्रतिबिंब न पड़े, जिससे बच्चों की आँखों पर जोर न पड़े। अच्छी गुणवत्ता की, कम धूल उड़ाने वाली चॉक या सुरक्षित मार्कर का प्रयोग किया जाता है, ताकि बच्चों का स्वास्थ्य सुरक्षित रहे।

ऐसी कक्षा में बोर्ड पर लिखावट स्पष्ट, बड़े और सुंदर अक्षरों में होती है। शब्दों और पंक्तियों के बीच पर्याप्त दूरी रखी जाती है, जिससे बच्चे आसानी से पढ़ और समझ सकें। बोर्ड पर अनावश्यक जानकारी नहीं भरी जाती; केवल वही बिंदु, शब्द, चित्र या उदाहरण लिखे जाते हैं जो सीखने के उद्देश्य से सीधे जुड़े हों। इससे बच्चों का ध्यान केंद्रित रहता है और भ्रम की स्थिति नहीं बनती।

आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड/ग्रीन बोर्ड का उपयोग केवल लेखन तक सीमित नहीं रहता। शिक्षक बोर्ड पर छोटे-छोटे चित्र, रेखाचित्र, आरेख और तालिकाएँ बनाकर अवधारणाओं को स्पष्ट करते हैं। रंगीन चॉक या मार्कर का सीमित और संतुलित प्रयोग मुख्य बिंदुओं को उभारने में सहायक होता है और सीखने को रोचक बनाता है। यहाँ महत्वपूर्ण यह भी है कि बच्चों को बोर्ड के प्रयोग में सहभागी बनाया जाए। बच्चों को बोर्ड पर लिखने, चित्र बनाने, उत्तर हल करने या अपने विचार प्रस्तुत करने के अवसर दिए जाते हैं। इससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनते हैं। शिक्षक बोर्ड को एक साथ पूरा न भरकर, विषय को चरणबद्ध ढंग से विकसित करते हैं, ताकि बच्चे सीखने की प्रक्रिया के साथ-साथ चल सकें।

पाठ या गतिविधि के अंत में बोर्ड की नियमित सफाई की जाती है, जिससे अगली गतिविधि के लिए स्पष्टता बनी रहती है। इस प्रकार, आनंददायी कक्षा में ब्लैकबोर्ड या ग्रीन बोर्ड का विवेकपूर्ण और सहभागितापूर्ण उपयोग कक्षा को अधिक संवादात्मक, प्रभावी और सीखने के लिए प्रेरक बनाता है।

शिक्षक पढ़ाते कैसे हैं कि बच्चे आनंदित रहते हैं?

शिक्षक की पेडागॉजी केवल पढ़ाने की विधि नहीं, बल्कि बच्चों को समझने, उनके साथ सीखने और उन्हें आगे बढ़ने में सहायक बनने की कला है। प्रभावी पेडागॉजी वह होती है जो बाल-केंद्रित, समावेशी और आनंदपूर्ण अधिगम को बढ़ावा दे।

आनंददायी कक्षा में शिक्षक की पेडागॉजी के प्रमुख गुण

शिक्षक की पेडागॉजी यह निर्धारित करती है कि कक्षा में सीखना बोझ बनेगा या आनंद का अनुभव। आनंददायी शिक्षा में शिक्षक केवल ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि बच्चों के साथ सीखने की यात्रा का सहयात्री होता है। ऐसी पेडागॉजी बच्चों के मन, अनुभव और गति को समझते हुए सीखने की प्रक्रिया को अर्थपूर्ण बनाती है। इस प्रकार आनंददायी कक्षा में शिक्षक की पेडागॉजी सर्वप्रथम बाल-केंद्रित होती है। शिक्षण बच्चों की रुचि, आवश्यकता, पूर्व ज्ञान और सीखने की गति के अनुसार योजनाबद्ध किया जाता है, न कि केवल पाठ्यपुस्तक या पाठ्यक्रम को पूरा करने के उद्देश्य से।

दूसरा प्रमुख गुण अनुभवात्मक और गतिविधि-आधारित शिक्षण है। शिक्षक सीखने को गतिविधियों, प्रयोगों, खेलों, कहानियों और वास्तविक जीवन के अनुभवों से जोड़ता है, जिससे बच्चे सक्रिय रूप से सीखने में संलग्न होते हैं और ज्ञान स्थायी बनता है। एक प्रभावी पेडागॉजी समावेशी होती है, जहाँ सभी बच्चों को भिन्न क्षमताओं, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों और विभिन्न

भाषाओं वाले को भी बराबर सम्मान और सीखने के अवसर मिलते हैं। शिक्षक विविधताओं को चुनौती नहीं, बल्कि संसाधन के रूप में देखता है।

आनंददायी कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया संवादात्मक और सहभागितापूर्ण होती है। एकतरफा व्याख्यान के स्थान पर प्रश्न-उत्तर, चर्चा, समूह कार्य और सहयोगात्मक गतिविधियों को महत्व दिया जाता है, जिससे बच्चों की सोच और अभिव्यक्ति विकसित होती है। ऐसी पेडागॉजी भयमुक्त और संवेदनशील होती है। बच्चों की गलतियों को दंड का कारण नहीं, बल्कि सीखने का अवसर माना जाता है। शिक्षक बच्चों की भावनाओं, कठिनाइयों और प्रयासों के प्रति संवेदनशील रहता है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया स्थानीय संदर्भों से जुड़ी हुई होती है। उदाहरण, गतिविधियाँ और भाषा बच्चों के परिवेश, संस्कृति और दैनिक जीवन से संबंधित होती हैं, जिससे सीखना स्वाभाविक और अर्थपूर्ण बनता है। इसके साथ ही, शिक्षक की पेडागॉजी निरंतर और सहायक आकलन पर आधारित होती है। पारंपरिक परीक्षा-केंद्रित आकलन के बजाय अवलोकन, संवाद, पोर्टफोलियो और रूब्रिक्स का प्रयोग किया जाता है, ताकि बच्चों की प्रगति को समग्र रूप से समझा जा सके।

सबसे महत्वपूर्ण यह कि ऐसी पेडागॉजी आनंद और कल्याण को प्राथमिकता देने वाली होती है। कक्षा में सकारात्मक संबंध, भावनात्मक सुरक्षा और सीखने का आनंद बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला बनते हैं। इस प्रकार, जब शिक्षक की पेडागॉजी बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक, समावेशी और संवेदनशील होती है, तब कक्षा वास्तव में सीखने का एक सार्थक, आनंदपूर्ण और जीवनोपयोगी अनुभव बन जाती है।

आनंददायी कक्षा में शिक्षक की भाषा-शैली और बहुभाषी बच्चों का ध्यान

आनंददायी शिक्षा में शिक्षक की भाषा-शैली कक्षा के वातावरण, बच्चों की समझ और उनके आत्मविश्वास को सीधे प्रभावित करती है। विशेष रूप से बहुभाषी कक्षाओं में, शिक्षक की संवेदनशील और लचीली भाषा-शैली बच्चों को सीखने में सहज, सक्रिय और आत्मविश्वासी बनाती है। उनकी भाषा-शैली सरल, स्पष्ट और स्नेहपूर्ण होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि शब्द और वाक्य बच्चों की आयु, समझ और स्तर के अनुसार हों और भाषा में अपनत्व और सम्मान झलके। इससे बच्चे बिना डर के अपनी बात रख सकते हैं और संवाद में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। भाषा प्रोत्साहन देने वाली होनी चाहिए; कठोर या आदेशात्मक शैली के बजाय सकारात्मक, प्रेरक और आश्वस्त करने वाले शब्दों का प्रयोग करें।

आनंददायी कक्षा में शिक्षक की भाषा संवादात्मक होती है। शिक्षक केवल बोलने वाला नहीं होता, बल्कि बच्चों की बातों को ध्यान से सुनता है और उनकी जिज्ञासा, शंका या विचारों का सम्मान करता है। भाषा लचीली और अनुकूलनीय होनी चाहिए, ताकि आवश्यकता अनुसार शब्दावली, उदाहरण और समझाने का तरीका बदलकर बच्चों की समझ सुनिश्चित की जा सके। इसके साथ ही, भाषा अहिंसक और गैर-आलोचनात्मक होनी चाहिए; बच्चों की भाषा या उच्चारण का उपहास न किया जाए और

हमेशा सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग हो। बहुभाषी बच्चों का ध्यान रखने के लिए शिक्षक विशेष उपाय अपनाता है। सबसे पहले, बच्चों की मातृभाषा या स्थानीय भाषा का सम्मान और उपयोग किया जाता है, ताकि यह सीखने की बाधा न बने, बल्कि संसाधन के रूप में काम करे। शिक्षक आवश्यकतानुसार कोड-स्विचिंग और कोड-मिक्सिंग का विवेकपूर्ण प्रयोग कर सकते हैं, जिससे अर्थ स्पष्ट होता है और बच्चे आसानी से सीख पाते हैं। इसके साथ ही, शिक्षक दृश्य और क्रियात्मक सहायक सामग्री, जैसे— चित्र, संकेत, हाव-भाव, टी.एल.एम. और गतिविधियों का उपयोग करके समझ बढ़ाते हैं। बच्चों को सहपाठी सहायता के माध्यम से जोड़ी या समूह में काम करने के अवसर दिए जाते हैं, जिससे वे एक-दूसरे से सीख सकें और सामाजिक सहयोग विकसित हो।

शिक्षक धीरे-धीरे बच्चों को साधारण भाषा से अकादमिक भाषा की ओर ले जाते हैं, जिससे उन्हें समय और अवसर मिलते हैं कि वे नई भाषा को समझें और प्रयोग करें। कक्षा में भाषायी विविधता का उत्सव मनाया जाता है तथा अलग-अलग भाषाओं के शब्द, गीत, कहानियाँ और अनुभव साझा करने के अवसर दिए जाते हैं। आनंददायी शिक्षा में शिक्षक की संवेदनशील और बहुभाषी-अनुकूल भाषा-शैली कक्षा को समावेशी बनाती है और प्रत्येक बच्चे को बिना डर और बाधा के सीखने का अवसर प्रदान करती है।

आनंदपूर्ण शिक्षा में शिक्षक और बच्चों का मूल्यांकन

आनंदपूर्ण शिक्षा में मूल्यांकन केवल अंक या परीक्षा तक सीमित नहीं रहता। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों की सीख को समझना, उनकी क्षमताओं और प्रयासों की पहचान करना और उन्हें आगे बढ़ने में सहयोग देना होता है। जब मूल्यांकन प्रक्रिया सहयोगात्मक, सतत और बाल-केंद्रित होती है, तब यह बच्चों के लिए बोझ नहीं, बल्कि सीखने का आनंददायी अनुभव बन जाती है।

आनंदपूर्ण कक्षा में शिक्षक सतत एवं समग्र मूल्यांकन करते हैं। इसका अर्थ है कि मूल्यांकन केवल अंत-वार्षिक परीक्षा तक सीमित न रहकर, रोजमर्रा की गतिविधियों, खेल, चर्चा, चित्रकला और समूह कार्य के दौरान निरंतर किया जाए। शिक्षक बच्चों को गतिविधियों में शामिल होते देख, उनकी भागीदारी, प्रयास, भाषा प्रयोग, सोचने और सहयोग करने की क्षमता का अवलोकन करते हैं। शिक्षक खेल और गतिविधि-आधारित मूल्यांकन का भी उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, कहानी सुनाने, नाटक, चित्र बनाना, प्रयोग करना या समूह कार्य करना बच्चों की समझ और रचनात्मकता को परखने का अवसर देता है। इससे मूल्यांकन रोचक, सक्रिय और आनंदपूर्ण बनता है। रूब्रिक्स का प्रयोग भी आनंदपूर्ण मूल्यांकन में किया जाता है। शिक्षक सरल और स्पष्ट मानदंड तैयार करके बच्चों को यह बताते हैं कि उनसे क्या अपेक्षित है। इससे बच्चे अपनी प्रगति समझ पाते हैं और मूल्यांकन को चुनौती या दंड नहीं, बल्कि सीखने का मार्ग मानते हैं।

शिक्षक बच्चों को आत्म-मूल्यांकन और सहपाठी मूल्यांकन के अवसर भी देते हैं। बच्चे अपने काम पर सोचते हैं, सुधार करते हैं और सहपाठियों के कार्य को देखकर सीखते हैं। इससे

उनकी आत्म-जागरूकता और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं।

गुणात्मक प्रतिक्रिया आनंदपूर्ण मूल्यांकन का अहम हिस्सा है। शिक्षक केवल अंक देने के बजाय मौखिक या लिखित सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं, जैसे— 'तुमने अच्छा प्रयास किया', 'तुम्हारा विचार रोचक है'। गलतियों को सीखने का अवसर माना जाता है, न कि दंड का कारण। अंततः शिक्षक बच्चों की उपलब्धियों और प्रयासों का उत्सव मनाते हैं। छोटे-छोटे प्रयासों और प्रगति की सराहना से बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ता है और सीखने की प्रेरणा कायम रहती है।

आनंदपूर्ण शिक्षा में शिक्षक का मूल्यांकन सहयोगात्मक, निरंतर, सहायक और सकारात्मक होता है, जिससे बच्चे सीखने के अनुभव को आनंददायी, उत्साहपूर्ण और सार्थक मानते हैं।

आनंददायी शिक्षा में माता-पिता और समाज की सहभागिता

आनंददायी शिक्षा में बच्चों का समग्र विकास तभी संभव है जब विद्यालय, माता-पिता और समाज मिलकर साझेदारी की भावना के साथ काम करें। सिर्फ शिक्षक और कक्षा तक सीमित शिक्षा से बच्चे पूरी तरह सक्रिय और आत्मविश्वासी नहीं बन पाते। इसलिए माता-पिता और समाज को शिक्षा प्रक्रिया में सम्मानपूर्वक शामिल करना आवश्यक है, जिससे सीखना अधिक सार्थक और आनंददायी बनता है। माता-पिता को शामिल करने के लिए शिक्षक नियमित संवाद और विश्वासपूर्ण संबंध स्थापित करते हैं। इसके लिए बैठकों, व्यक्तिगत चर्चा, फोन, डायरी या डिजिटल माध्यमों का प्रयोग किया जाता है, ताकि बच्चों की प्रगति, उनकी रुचियों और आवश्यकताओं पर लगातार जानकारी साझा की जा सके। केवल बच्चों की कमियों पर ध्यान न देकर, उनकी रुचि, प्रयास और प्रगति को सकारात्मक ढंग से साझा किया जाता है।

शिक्षक घर-विद्यालय कड़ी को भी मजबूत करते हैं। इसके अंतर्गत बच्चों के लिए सरल घरेलू गतिविधियाँ, कहानी सुनाना, खेल और बातचीत सुझाई जाती हैं, जो सीखने को घर से जोड़ती हैं। माता-पिता को कक्षा गतिविधियों, उत्सवों, प्रदर्शनी, पठन दिवस और खेल दिवस में सहभागी बनाया जाता है, जिससे वे बच्चों की शिक्षा और सीखने की प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बन सकें। इसके साथ ही, शिक्षक माता-पिता को बाल विकास, सकारात्मक अनुशासन, भाषा विकास और भावनात्मक सहयोग पर छोटे मार्गदर्शन सत्र भी प्रदान करते हैं। समाज को शामिल करने के लिए विद्यालय स्थानीय संसाधनों का उपयोग करता है। कारीगर, किसान, डॉक्टर, कलाकार या बुज़ुर्ग बच्चों के लिए शिक्षा में जीवन के अनुभव जोड़ने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं। स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है, जैसे— लोककथाएँ, त्योहार, गीत, खेल और कला। शिक्षक बच्चों को समुदाय आधारित परियोजनाओं में शामिल करते हैं, जैसे— स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण पर सामूहिक गतिविधियाँ। विद्यालय को सामुदायिक केंद्र बनाया जाता है, जहाँ बैठकें, प्रदर्शनियाँ और सामाजिक संवाद आयोजित किए जाते हैं। समाज

को केवल सहायक नहीं, बल्कि शिक्षा का सहभागी और सह-निर्माता माना जाता है।

आनंददायी शिक्षा में माता-पिता और समाज की सक्रिय सहभागिता से विद्यालय एक जीवंत सीखने का समुदाय बनता है, जहाँ बच्चों का समग्र विकास साझा उत्तरदायित्व के रूप में सुनिश्चित होता है और सीखना उनके लिए आनंददायी बन जाता है।

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा में आनंद, सुरक्षा और आत्मविश्वास बच्चों के सीखने के केंद्र में होते हैं। आनंददायी कक्षा केवल विषयवस्तु का स्थान नहीं, बल्कि बच्चों के भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक विकास का साझा मंच होती है। ऐसी कक्षा में बच्चे निडर, सक्रिय और रचनात्मक बनते हैं, जहाँ सहयोग, संवाद और सहभागिता का माहौल होता है। शिक्षक की भूमिका इस प्रक्रिया में केंद्रीय है। बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक, समावेशी और संवेदनशील पेडागॉजी के माध्यम से शिक्षक सीखने को अर्थपूर्ण, रोचक और आनंदपूर्ण बनाते हैं। शिक्षक की भाषा सरल, स्पष्ट, स्नेहपूर्ण और बहुभाषी-अनुकूल होती है, जिससे सभी बच्चे बिना डर और बाधा के सीखने में सहभागी बनते हैं। मूल्यांकन केवल अंक देने तक सीमित नहीं, बल्कि सहयोगात्मक, सतत, सकारात्मक और बच्चों के प्रयासों को मान्यता देने वाला होता है, जिससे सीखना उत्साहपूर्ण और सार्थक बनता है।

आनंददायी शिक्षा में माता-पिता और समाज की सहभागिता भी अनिवार्य है। नियमित संवाद, घर और विद्यालय का संबंध, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और सामुदायिक परियोजनाओं के माध्यम से शिक्षा का अनुभव साझा और समग्र बनता है। अतः आनंददायी शिक्षा वह है जो बच्चों को सुरक्षित, प्रेरित, सक्रिय और आत्मविश्वासी बनाती है; शिक्षक, माता-पिता और समाज की सहभागिता के माध्यम से सीखने को जीवनोपयोगी, सार्थक और आनंदपूर्ण अनुभव में परिवर्तित करती है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023* (अंतिम संस्करण). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

11

प्राथमिक विद्यालय के तीसरी कक्षा के बच्चों द्वारा पूर्ण संख्या घटाव का त्रुटि पैटर्न एक विश्लेषण

चन्द्रा तिवारी*

गणित की प्रकृति में उपस्थित अमूर्तता, तार्किकता, विशिष्टता, क्रमबद्धता, सत्यता, प्रतीक आदि विशिष्टताओं को सही प्रकार से न समझ पाने और जीवन में गणितीय तरीके से चीजों को न सोच-समझ पाने के कारण इस विषय को एक बड़े विद्यार्थी समूह द्वारा एक अप्रिय आवश्यकता मात्र माना जाता है जिसे उन्हें 10वीं कक्षा तक इस विषय को पढ़ने की अनिवार्यता होने के कारण किसी भी प्रकार संपन्न करना ही पड़ता है। यह अनिवार्यता किसी भी प्रकार से विद्यार्थियों की गणित विषय के प्रति दृष्टिकोण को बदलने अथवा उनकी रुचि को बढ़ाने मे कारगर साबित नही हो पाई है। इस कारण हमारी शिक्षा-व्यवस्था अवश्य ही विचारणीय श्रेणी में आ गई है। राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 बताती है की कक्षा 3 तक आते-आते बच्चों में गणित को न हल कर सकने का भाव आ जाता है। गणित में असफलता और व्यग्रता, गणित पढ़ने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण है। गणित में असफलता का एक कारण गणित में होने वाली गलतियाँ भी हो सकती हैं। शिक्षक गलतियों का विश्लेषण कर विद्यार्थियों को गणित सीखने में मदद कर सकते हैं। यह शोध-पत्र गणित में प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 3 द्वारा घटाव करते समय की जाने वाली त्रुटियों के विश्लेषणों के उपचार की चर्चा करता है।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 को अधिक समावेशी, लचीले और विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण की ओर बदलाव को प्रोत्साहित करके, गणित पाठ्यक्रम सहित शैक्षिक ढाँचे पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है (भारद्वाज और अन्य, 2024)। नीति का उद्देश्य विभिन्न शिक्षण दृष्टिकोणों को एकीकृत करना, समावेशिता और गुणवत्ता पर जोर देना और रटने की विधियों से हटकर उन विधियों को अपनाना है जो आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित करती हैं (सुमोल वी.आर., 2025)। यह परिवर्तन प्राथमिक शिक्षा में एक समग्र विकास दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है, जो घटाव एल्गोरिथम जैसी गणितीय अवधारणाओं में त्रुटियों को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण है। इस परिवर्तन में कई चुनौतियाँ मौजूद हैं, विशेष रूप से कक्षाओं में पाठ्यक्रम सुधारों को कैसे लागू किया जाता है, इसे

**सहायक आचार्या*, गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110 049

लेकर शिक्षकों की शैक्षणिक मान्यता इस प्रक्रिया को बहुत प्रभावित करती है। अक्सर, शिक्षा सुधारों के बीच भी, शिक्षक नए शैक्षणिक रुझानों की तुलना में अपनी मान्यताओं से जुड़ी पारंपरिक विधियों पर अधिक भरोसा कर सकते हैं, जिससे नवीन दृष्टिकोणों को अपनाना जटिल हो जाता है (हैंडल और हैरिंगटन, 2003)। इस प्रकार, यदि शिक्षक एन.ई.पी. 2020 के लक्षणों के अनुरूप नई नीतियों को पूरी तरह से नहीं अपनाते हैं, तो गणित में घटाव जैसी त्रुटियाँ बनी रह सकती हैं।

गणित शिक्षा में त्रुटि विश्लेषण सीखने की प्रक्रियाओं की जटिलता को रेखांकित करता है। यह दर्शाता है कि त्रुटियाँ अर्थगत भाषागत अंतर, संज्ञानात्मक कमियों और गलत रणनीति अनुप्रयोगों के कारण उत्पन्न होती हैं (राडत्ज, 1979)। ऐसी अंतर्दृष्टि या ऐसी शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता का सुझाव देते हैं जो व्यक्तिगत सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली विभेदित सीखने की रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करके इन बहुआयामी मुद्दों का समाधान करती हैं।

प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में घटाव एल्गोरिथम त्रुटियों को कम करने के लिए, एन.ई.पी. 2020 रटने की बजाय विद्यार्थियों के बीच एक गहरी वैचारिक समझ विकसित करने के महत्व पर जोर देता है। सक्रिय सीखने की रणनीतियों, जैसे सहयोगात्मक कार्य और व्यावहारिक गतिविधियों का उपयोग इस समझ को शामिल करने में मदद कर सकता है (बेल और बाबा, 2023)। इसके अतिरिक्त, आभासी और संवर्धित वास्तविकता अनुप्रयोगों जैसे उपकरणों के माध्यम से प्रौद्योगिकी को शामिल करने से विद्यार्थियों को गणितीय अवधारणाओं को अधिक प्रभावी ढंग से देखने की अनुमति देकर गणितीय समझ में सुधार हो सकता है (डेमिट्रियाडौ और अन्य, 2019)।

संक्षेप में, एन.ई.पी. 2020 शैक्षिक परिदृश्य को बदलने के उद्देश्य से एक मजबूत ढाँचा प्रदान करता है, जिसमें प्राथमिक शिक्षा में गणित पढ़ाना भी शामिल है। यह व्यापक सुधारों और नवीन शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, ताकि सीखने की चुनौतियों, जैसे घटाव एल्गोरिथम में त्रुटियों का प्रभावी ढंग से समाधान किया जा सके। ये परिवर्तन कक्षा की प्रथाओं को विद्यार्थी-केंद्रित और गुणवत्ता-संचालित शैक्षिक प्रणाली के नीतिगत दृष्टिकोण के साथ संरेखित करने के लिए आवश्यक हैं। हालाँकि मैं एक पूर्ण शोध लेख नहीं लिख सकता, यह अवलोकन एन.ई.पी. 2020 के गणित पाठ्यक्रम पर प्रभावों और घटाव एल्गोरिथम में त्रुटियों को कम करने की नीतियों की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

उद्देश्य

इस अनुसंधान के तीन विशिष्ट उद्देश्य हैं। पहला उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के कक्षा 3 के विद्यार्थियों द्वारा पूर्ण संख्या के घटाव में किए जाने वाले त्रुटियों की पहचान कर उन्हें एकत्रित करता है। दूसरा, कारणों के आधार पर सभी त्रुटियों का वर्गीकरण करता है। तीसरा उद्देश्य त्रुटियों के संभावित विचार प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध एक संघर्ष क्षेत्र के एक गतिशील सामाजिक संदर्भ में कक्षा 3 के विद्यार्थियों से संबंधित है। जिसके लिए शोधार्थी ने गुणात्मक शोध दर्शन

का चयन किया है। गुणात्मक शोध दर्शन एक ऐसा ही शोध दर्शन है जो शोधार्थी को शोध क्षेत्र की गतिशीलता और परिवर्तनशीलता के अंतर्गत मानवीय व्यवहारों और विचारों के संदर्भ में अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है।

शोध विधि के रूप में शोधार्थी वैयक्तिक अध्ययन विधि का चयन किया है जिसके अंतर्गत संरचित साक्षात्कार और गहन अवलोकन प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

साहित्य की समीक्षा

किसी भी अवधारणा को सीखने के लिए कुछ पूर्व ज्ञान की आवश्यकता होती है जैसे संख्या लिखने से पहले पूर्ण संख्या अवधारणा के ज्ञान की आवश्यकता होती है। गणित में अवधारणाओं को सिलसिलेवार तरीकों से सिखा जाता है और यदि विद्यार्थी ने एक अवधारणा को नही सीखा तो उसके बाद या उस पर आधारित अन्य अवधारणाओं को सीखने में उसे कठिनाई होती है जिससे उस अवधारणा से जुड़ी गलतियाँ अधिक होती है।

गणित विषय में बच्चों द्वारा घटाव के सवाल में किए जाने वाले त्रुटियों के अनेक कारण हो सकते हैं जिनमें से एक मुख्य कारण घटाव की अवधारणा से पूर्व आने वाली अवधारणा जो संख्याओं के स्थानीय मान की अवधारणा का सही ज्ञान न होना हो सकता है। उदाहरण— बच्चों से 20013 में 2 के स्थानीय मान के बारे में पूछे जाने पर उसे 2 सौ, 2 हजार, 2 लाख अथवा 2 करोड़ कहना। अत: संख्या के स्थानीय मान का ज्ञान ना होना इस अवधारणा पर आधारित अन्य गणितीय अवधारणाओं को प्रभावित करता है। घटाव करते समय बच्चों को केवल उसकी एक निश्चित प्रक्रिया का ज्ञान होना और उसका बिना सोचे समझे अनुसरण करना बच्चों के द्वारा की जाने वाली त्रुटियों का मुख्य कारण होती हैं। इन त्रुटियों के पीछे के कारणों को जानने समझने के बजाय हम वयस्क बच्चों के प्रति कई बार अपना निंदनीय व्यवहार दिखाते हैं। अत: हमें चाहिए कि हम त्रुटियों के पीछे की वजह को जान पाएँ। इन त्रुटियों की वजह ये भी हो सकती है के बच्चे को उस अवधारणा से जुड़े पर्याप्त अनुभव नही दिए गए हों या फिर यह भी हो सकता है कि जो बच्चे को इन अवधारणा से अवगत करा रहा है उसे खुद उन अवधारणा से संबंधित पर्याप्त समझ न हो।

सर्वप्रथम तो वयस्कों को जो बच्चों को गणितीय अवधारणाओं से अवगत करा रहे हैं उन्हें इन अवधारणाओं का भलीभाँति ज्ञान होना चाहिए। यदि हम स्थानीय मान के संदर्भ मे बात करे और इस सिद्धांत पर आधारित इन चार गणितीय अवधारणाओं (जमा, घटा, गुणा और भाग) के संदर्भ मे बात करे तो हमें यह मालूम होना चाहिए कि हमारा स्थानीय मान का सिद्धांत दशमलव प्रणाली पर आधारित है जिसके अंकों को संक्षेप में केवल 10 प्रतीक द्वारा दर्शाया जाता है (0,1,2,3,4,5,6,7,8,9) जिन्हें हम अंक कहते हैं। इस प्रणाली मे हर अंक का स्थानीय मान उसके दाई और अंक के स्थानीय मान का 10 गुना होता है इसलिए 1420 मे 4 का स्थानीय मान 4×100 या 400 होगा। इसी प्रकार यदि हम एक ऐसी अंक प्रणाली में काम कर रहे हैं जिसका आधार 7 है तो उस स्थिति में 1420 मे 4 का स्थानीय मान 4×49 यानी 196 होगा।

इसके साथ ही वयस्कों को यह समझना चाहिए के किसी भी गणितीय समस्या का समाधान निकालने के लिए और कोई प्रक्रिया नहीं है जो सही हो सकती है। किसी भी अवधारणा के विषय में यदि हम उससे संबंधित कुछ तथ्यों को जान समझ लें तो हम अनेकों नई-नई प्रक्रियाओं का विकास कर सकते हैं, जिससे उन पर आधारित सवालों का हल हम खोज सकते हैं। किसी भी अवधारणा के मूल में कुछ अपरिवर्तनीय गुणों का सेट शामिल होता है जो उस अवधारणा को परिभाषित करते हैं, उदाहरण— यदि हम जोड़ने की अवधारणा के कुछ अपरिवर्तनीय गुणों की बात करें तो वे हैं सहायता, क्रमविनिमेयता आदि। उस अवधारणा से जुड़े कुछ सांकेतिक सेट होते हैं जो उस अवधारणा का प्रतीकात्मक रूप होते हैं। एक गणितीय अवधारणा को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाने के लिए हम लेखांकन, समीकरण, चिह्न या प्राकृतिक भाषा आदि का उपयोग करते हैं, उदाहरण— (-) का चिह्न उन स्थितियों में उपयोग करते हैं जिसमें हम कुछ लेते हैं, एक ऋण का वर्णन करते हैं, एक तुलना करते हैं अथवा शून्य से नीचे के तापमान का उल्लेख करते हैं।

एक अवधारणा को परिभाषित करने में परिस्थितियों का एक सेट है जो उस संकल्पना को अर्थ देता है, उदहारण— छोटे बच्चे (लगभग 6 वर्ष के) जोड़ के मूल गुणों को समझ सकते हैं और समस्याओं को हल करने में उनका उपयोग कर सकते हैं। लेकिन उनके अनुसार जिन स्त्रियों में जोड़ लागू किया जाता है, उनका सेट सीमित हो जाता है।

उदाहरण के लिए, समस्या 'मदन के पास 3 कंचे हैं; उसके पास पिंटू से 9 केले कम हैं; पिंकी के पास कितने कंचे हैं?' छोटे बच्चे यह देखने मे असफल होते हैं की इस प्रकार की समस्या का समाधान जोड़ की अवधारणा से प्राप्त किया जा सकता है।

केरियर और शिलमैन ने 1985 में इस पर एक शोध किया जिसमें उन्होंने अलग अलग परिस्थितियों में व्यक्ति किस प्रकार अवधारणा को सीखता है जो व्यक्तिगत भिन्नता का कारण बनती है, इसको जाँचा। इसमें एक ग्रुप के बच्चे कुछ अनौपचारिक व्यवसाय से जुड़े थे, जैसे— फल सब्जी या पॉपकॉर्न आदि बेचते थे जहाँ वे ग्राहकों द्वारा खरीदे गए सामान का हिसाब मौखिक ही कर लेते थे। उदाहरण— 500–345 में बकाया पैसे वापस करने का लिया वे 345 में 5 रुपये देकर 350 बनते हैं फिर 50 और मिलकर 400 करते हैं और फिर 100 ओर लेकर पूरे 500 कर देते हैं। यह बच्चे एक संख्या को उन भागों से बना मानते हैं जिन्हें कुल मूल्य में बदलाव किए बिना अलग किया जा सकता है; फिर अंतिम परिणाम को प्रभावित किए बिना इन अंगों पर जोड़ और घटाव निकाला जा सकता है।

दूसरे समूह में यह बच्चे विद्यालयों में, इसके विपरीत, लिखित गणना प्रणाली का प्रयोग करते हैं। ये दो सामाजिक स्थिति में— स्ट्रीट वेंडिंग और विद्यालय-संचार के लिए किस प्रकार के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व का उपयोग किया जाता है, यह निर्धारित करने में भूमिका निभाती है।

इस शोध में यह पाया गया कि बच्चा जिस सहजता से मौखिक रूप में समस्याओं का हल निकाल पाता है वह लिखित रूप अर्थात एल्गोरिथम प्रक्रिया में संख्या का अर्थ न समझ

पाने के कारण उसे करने में जटिलता का अनुभव करता है। विभिन्न गणितज्ञों ने भी इस बात पर जोर दिया है कि बच्चों को पारंपरिक तरीकों से, केवल रटाकर और बिना समझ के अंक सिखाना उचित नहीं है। प्राय: उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे किसी भी प्रश्न का हल निकालने के लिए एक निश्चित प्रक्रिया का ही पालन करें। परिणामस्वरूप, इस पद्धति में बच्चे नियमों का आँख बंद करके पालन करते हैं, जिससे उनकी अवधारणाएँ अधूरी और अस्पष्ट रह जाती हैं।

इसके विपरीत, शिक्षक का कर्तव्य है कि वह विद्यार्थियों को अवधारणाएँ समझने के लिए ठोस वस्तुओं और वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

निष्कर्ष और परिचर्चा

परीक्षण, अवलोकन, साक्षात्कार और शोध क्रिया के परिणाम पर विश्लेषण के परिणाम को ध्यान में रखते हुए, मैंने यह पाया कि प्राथमिक विद्यालय के तीसरी कक्षा के द्वारा पूर्ण संख्या घटाव ऑपरेशन में किए गए त्रुटि पैटर्न में मुख्यतः निम्नलिखित त्रुटियाँ शामिल हैं— (1) मानक प्रक्रिया से संबंधित त्रुटियाँ, (2) घटाव की अवधारणा से जुड़ी त्रुटियाँ, (3) पढ़ने और लिखने संबंधी त्रुटियाँ, (4) इकाई, दहाई, सैकड़ा और हजारों अंकों को एक अंक से घटाना, (5) अधूरा एल्गोरिथ्म, (6) यादृच्छिक त्रुटि, (7) स्थानीय मान, (8) मूल तथ्य, (9) छोटी संख्या के साथ बड़ी संख्या घटाई जाती है, (10) 0 का त्रुटि पैटर्न - ए = 0, (11) ए - बी = 0 का त्रुटि पैटर्न, यदि ए < बी और (12) घटाना भूल जाता है हासिल के बाद। इस बीच, त्रुटि के कारण हैं— (1) संख्या और उसके प्रतीक की अपर्याप्त महारत, (2) घटाव अवधारणा की पर्याप्त महारत, (3) बुनियादी घटाव तथ्य की पर्याप्त महारत, (4) स्थानीय मूल्य की अपर्याप्त महारत, (5) चलने की तकनीक में पर्याप्त निपुणता, (6) लापरवाही और अचूकता, (7) अनुमान उत्तर का उपयोग नहीं करना।

मानक प्रक्रिया से संबंधित गलतियाँ

घटाव के मूल तथ्य या घटाव करने की प्रक्रिया का सही समझ न होना, बच्चे के सवाल की समझ और संरचना में बाधा उत्पन्न करता है।

उदाहरण—

2222	5637
–1869	–342
1647	2217
400	400
–163	–163
363	300

मानक प्रक्रिया से जुड़ी गलतियों का विश्लेषण करने के पश्चात यह पाया गया कि इस प्रकार की त्रुटियों का एक मुख्य कारण बच्चों को केवल एक प्रक्रिया जो पारंपरिक कक्षाओं में सिखाई जाती है, उसका बिना सोचे-समझे अनुसरण करना है अथवा अन्य अनौपचारिक प्रक्रियाओं (मानसिक रणनीतियों) को कक्षा मे प्रोत्साहन न देना है।

अपने शोध प्रक्रिया में बच्चों से सवाल को मानसिक चुनौतियों के द्वारा हल करने के लिए प्रोत्साहित करने पर मैंने पाया कि बच्चों ने इन समस्याओं के शीघ्र और सटीक उत्तर निकाले। बच्चों ने उन्हें कई अलग-अलग प्रक्रियाओं का उपयोग कर

हल ढूँढ़ा। उदाहरण— 78–53, इस समस्या को बच्चे ने विघटन विधि द्वारा हल किया। जिसमें पहले बच्चे ने 70–50=30 किया और फिर 8–3=5 किया, फिर बच्चे ने उत्तर 30+5=35 बताया।

दूसरे बच्चे ने इसे पूरक विधि से किया था जहाँ उसने 78+2=80 किया फिर उसने 80–53 =27 किया फिर उसने 27–2=25 लिखा। इसी प्रकार एक बच्चे ने इसे अनुक्रमण विधि द्वारा किया था। वहाँ उसने एक संख्या को स्थिर रखा और दूसरे को विघटित कर उत्तर निकाला। 78–50=28, 28–3=25

इस प्रकार बच्चों ने विभिन्न मानसिक रणनीतियों का उपयोग कर एक ही समस्या का समाधान निकाला।

अवधारणा संबंधित गलतियाँ

घटाव को जोड़ने के विपरीत नहीं देख पाया

____+18=35

बच्चे ने इसे 35–18 न करके 18 में पहले 15 जोड़कर देखा फिर देखा कि ये कितना कम है। उसने पाया कि 2 कम था तो उसने 15 मे 2 जोड़ा ओर 17 उत्तर निकाला। यह उसने इसलिए किया था, क्योंकि उसे घटाव को जोड़ के विरुद्ध होने का ज्ञान नही था।

अनुमान लगाने से जुड़ी समस्या

उदाहरण— 315–21=141

यह गलती बच्चे ने इसलिए किया है, क्योंकि बच्चे घटाव की अवधारणा को अनुमानित उत्तर के माध्यम से नहीं समझते। अवधारणा संबंधी गलतियों के लिए मैंने घटाव की अवधारणा से पूर्व आने वाली अवधारणाएँ जैसे संख्या तथा उनके बीच के संबंधों का ज्ञान, संख्या के स्थानीय मान का ज्ञान न होना आदि को इसका मुख्य कारण पाया। बच्चों का इन अवधारणाओं में महारत न होना उनकी गलतियों की मूल वजह बनी।

पूर्व ज्ञान का अभाव

बच्चों द्वारा घटाव करते समय त्रुटि करने का एक मुख्य कारण घटाव की अवधारणा से पूर्व आने वाली अवधारणाओं में महारत हासिल किए बिना ही उन पर आधारित अवधारणा को करना। घटाव करते समय भी मैंने यह पाया के बच्चों को इससे जुड़ी बुनियादी अवधारणाओं, जैसे— (1) संख्या लिखने और पढ़ने से जुड़ी समस्या। (2) संख्याओं के स्थानीय मान की समझ पूर्ण रूप से नहीं थी।

संख्या लिखने और पढ़ने से जुड़ी समस्या की बात करें तो जब मैंने उन्हें दो सौ पाँच में से साठ बताने को बोला तो बच्चे ने बोला तो सात सौ पाँच पर अंकों में उसे पचहत्तर लिखा और उसे साठ से घटाकर उत्तर पंद्रह बताया। उदाहरण— बच्चे को घटाव का एक समस्या मैंने अंकों को शब्दों में लिखकर दिया वहाँ से शब्दों को अंकों में लिखकर फिर उसका हल निकाला था।

दो हजार छह सौ आठ में से एक हजार तीन सौ तीन को घटाएँ।

बच्चे ने इसे इस प्रकार लिखा—

```
  2 6 8
–1 3 3
-------
  1 3 5
```

इसी प्रकार संख्या का स्थानीय मान हमे संख्या का मात्रात्मक मूल्य बताता है, जबकि संख्या को पूर्ण रूप में देखने में हमारी मदद करता है और यही कारण है जब मैंने बच्चों को मुँह-जबानी 283 में से 162 बताने को बोला तो उन्होंने इसे 200–100, 80–60

और 3–2 के रूप में समझा और उत्तर 121 बताया। यह मानसिक गणना रणनीति के अंतर्गत आता है जिससे बच्चा संख्याओं का विघटन कर उसका हल निकालता है। यह परंपरागत रूप से कक्षा में कराए जाने वाले एल्गोरिथम प्रक्रिया जो कलम मूल्य पर आधारित होती है, उससे भिन्न है।

पढ़कर डिकोड करने संबंधी गलतियाँ

भाषा की जटिलता

घटाव करते समय गलतियाँ करने का एक कारण मैंने भाषा की जटिलता को पाया। जहाँ बच्चे की अपनी भाषा की समझ और सवाल की भाषा अलग होने के कारण उसे वह जटिल लगता है।

यहाँ मैंने बच्चे को यह सवाल किया जो अंग्रेजी में था।

Find the difference between 7864 and 5673.

बच्चे को यह समझ नहीं आया और बच्चे ने मुझसे कई सवाल पूछे, जैसे इसमें करना क्या है?

घटाव के संदर्भ में अंग्रेजी भाषा मे घटाव को 'difference' कहना बच्चों के लिए सही समझ नहीं बना पाता। भाषा में जहाँ difference का अर्थ होता है भेद— किन्हीं दो वस्तुओं का (रंग के आधार पर या आकृति के आधार पर) वह गणित में गैर-कार्डिनल में (सम/विषम) हो सकता है। अत: इसे संख्याओं के घटाव के रूप में समझना थोड़ा मुश्किल है।

अत: इसके लिए तुलना 'comparison' शब्द का उपयोग करना चाहिए।

इसी प्रकार अंकों को शब्दों मे लिखकर दी गई समस्या को लिखने ओर उसका हल ढूँढ़ने में भी बच्चे ने गलतियाँ की। उदहारण— दो हजार बासठ मे से एक हजार साठ को घटाने के लिए बोलने पर बच्चे ने इसे इस प्रकार लिखा और हल किया—

$$\begin{array}{r} 2\,6\,2 \\ -\,1\,6\,0 \\ \hline 1\,0\,2 \end{array}$$

इसी प्रकार शब्द समस्या के इस सवाल को पढ़कर समझने मे बच्चे को काफी मुश्किलात हुए—

प्राची के पास कुछ कंचे हैं। मीना ने उसे 12 कंचे और दिए, अब टीना के पास कुल 25 कंचे हो गए। बताएँ की टीना के पास शुरू में कितने कंचे थे? इस प्रकार की समस्या का हल ढूँढ़ते समय बच्चों को खासी दिक्कत महसूस हो रही थी, क्योंकि यहाँ अमूर्तता का तत्व सबसे ज्यादा था।

संभावित उपचार

अनौपचारिक प्रक्रिया (मानसिक चुनौतियों) को महत्व देना।

बच्चों को संख्या मान का संपूर्ण ज्ञान देना। संख्या का स्थानीय मान हमें संख्या के मात्रात्मक मूल्य के विषय पर बताता है। वह कॉलम मान संख्या का संख्या मान दर्शाता है जो संख्या को पूर्ण रूप से देखने में हमारी मदद नहीं करता और हम गलती कर बैठते हैं। भाषा के दोहरे रूप का प्रयोग न करके उसको सरल रूप में बच्चों के सामने प्रस्तुत किया जा सकता है। शब्द समस्याओं को हल करने के लिए हम बच्चों को समस्या के प्रासंगिक और अप्रासंगिक तत्वों के विषय में बता सकते हैं जिससे उन्हें समस्या को हल करने की नीतियों के विषय में समझ आ सके।

निष्कर्ष

मैंने पाया कि औपचारिक लिखित एल्गोरिथम से अनौपचारिक (मानसिक रणनीतियाँ) विधियाँ ज्यादा लचीली होती हैं, जो बच्चो को विभिन्न तरीकों से सोचने-समझने और गणित के मर्म को समझने में, बच्चो को संख्याओं को तोड़-मरोड़कर न देखने-समझने, बल्कि उनके बीच के संबंध को समझने के लिए उनके साथ खेलने के लिए प्रोत्साहित करती है। बुनियादी अवधारणाओं को जानें-समझे बिना उन पर आधारित अवधारणाओं को समझना, अधूरा ज्ञान होता है जो अनेक प्रकार की त्रुटियों का कारण बनता है।अत: घटाव से पूर्व संख्या-ज्ञान और संख्या के स्थानीय मान की अवधारणा को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। शब्द-समस्या का उद्देश्य गणित के अमूर्त अवधारणाओं को निजी जीवन से जोड़कर मूर्त बनाना है। अत: हमें इनकी भाषा को सरल रखना चाहिए और बच्चों को इन समस्याओं में न उलझकर समस्या से प्रासंगिक चीजों को छाँटकर समस्या को हल करने की कला से अवगत कराना चाहिए।

संदर्भ

थॉम्पसन, आई. 1994. जोड़ के लिए छोटे बच्चों के विशेष स्वभाव वाले लिखित एल्गोरिथम. *गणित में शैक्षिक अध्ययन*. 26(4), पृ.सं. 32–45

पुरपुरा, डी.जे. और सी.जे. लोनिगन. 2013. अनौपचारिक संख्यात्मक कौशल : पूर्वस्कूली में नंबरिंग, संबंध और अंकगणितीय संचालन के बीच संरचना और संबंध. *अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल*. 50(1), पृ.सं. 178–209.

बरमेजो, वी. और जे.जे. डियाज. 2007. जोड़ और घटाव की समस्याओं को हल करने में अमूर्तता की डिग्री. द *स्पैनिश जर्नल ऑफ साइकोलॉजी*. 10(2), पृ.सं. 285–293.

ब्रांट, सी.एफ., टी.एस. बसोई और ए.एल.पी. बेकन. 2016. 6वीं कक्षा के प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की चार बुनियादी मूलभूत संक्रियाओं को हल करने में कठिनाइयाँ : प्राकृतिक संख्याओं का जोड़, घटाव, गुणा और भाग. *क्रिएटिव एजुकेशन*. 7(13), पृ.सं. 18–20.

रेयस, आर.ई., बी.जे. रेयस, एन. नोहदा और एच. इमोरी. 1995. मानसिक संगणना प्रदर्शन और ग्रेड 2, 4, 6 और 8 में जापानी छात्रों की रणनीति का उपयोग. *गणित शिक्षा में शोध के लिए जर्नल*. 26(4), पृ.सं. 304 –326.

रोलैंड, टी. 2004. 'घटाव के रूप में अंतर' का प्रवचन. *गणित सीखने में अनुसंधान*.

विशेष

12

'वीणा' (कक्षा 5) हिंदी की पाठ्यपुस्तक के विषय में

प्रिय शिक्षक साथियो,

यह हर्ष का विषय है कि कक्षा 5 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक वीणा आपके हाथ में है। इसका निर्माण करते हुए मुख्य रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों को ध्यान में रखा गया है। भाषा सीखना विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 का महत्वपूर्ण पहलू है। भाषा के सहारे बच्चे अपने परिवार, परिवेश, संस्कृति और राष्ट्र से जुड़ते हैं। बच्चों में बुनियादी एवं संवैधानिक मूल्यों की स्थापना, स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति सतर्कता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम आदि को प्राप्त करने का माध्यम भाषा ही है। अतः यहाँ भाषा सीखने का तात्पर्य केवल पढ़ना और लिखना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों की जीवन-शैली में परिवर्तन होने के साथ-साथ उनमें अपेक्षित व्यवहारगत बदलाव होना भी शामिल है।

भाषा हमारी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण घटक है। किसी समाज और व्यक्ति के आचार-व्यवहार, खान-पान, सोच-समझ, लोक-संस्कृति आदि को जानना और समझना हो तो भाषा ही सहायक सिद्ध होती है। हमारी परंपरा और संस्कृति भी प्रधानतः भाषा के माध्यम से ही संरक्षित होती आ रही है। भाषा की इस प्रकृति एवं प्रकार्यों का सापेक्ष संबंध विद्यालयी शिक्षा से जुड़ता है। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों को अन्वेषण, सर्जनात्मक चिंतन और तार्किक चेतना के माध्यम से स्वयं ज्ञान सृजन के लिए प्रोत्साहित किया जाए। विद्यार्थी भाषा को केवल नियमबद्ध व्यवस्था के रूप में न देखें, अपितु इसके सौंदर्य-शास्त्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक पक्ष को भी समझें। इन बिंदुओं के आलोक में पाठ्यपुस्तक का निर्माण करते हुए मुख्य रूप से निम्नलिखित विचारों को ध्यान में रखा गया है—

- पुस्तक में कविता, कहानी, निबंध, पत्र, संवाद, नाटक, पहेली, चुटकुले व अन्य रचनाओं को रखा गया है, ताकि विद्यार्थी पिछली कक्षाओं में पढ़ी गई सामग्री की श्रृंखला में इसे देखें और इनसे अधिक गहराई से जुड़ें। पाठ्यपुस्तक में संयोजित सामग्री रुचिपूर्ण एवं पाठ्यचर्या के लक्ष्यों व सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखकर

चयनित की गई है तथा पाठाभ्यासों को कुछ इस प्रकार विकसित किया गया है जिससे विद्यार्थियों में भाषा-संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने संबंधी रुचि का विकास होगा।

- पुस्तक में पाठों के माध्यम से सरल भाषा में भारतीय पौराणिक कथा परंपरा से लेकर आधुनिक और तकनीकी रूप से विकसित हो रहे भारत की छवि को प्रस्तुत किया गया है।
- यह पुस्तक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश के इर्द-गिर्द अपना ताना-बाना रचती है। हिंदी भाषा सीखने-सिखाने के माध्यम से विद्यार्थियों में समावेशी दृष्टिकोण लाने और भारतीय संस्कृति की विविधता के प्रति सकारात्मक बोध विकसित करने के उद्देश्य को पुस्तक द्वारा पाने का प्रयास किया गया है।
- पुस्तक में विभिन्न भाषायी कौशलों, जैसे— समझ के साथ बोलने, सुनने, पढ़ने, लिखने आदि की प्रक्रिया की गतिशीलता को बनाए रखने के लिए विद्यार्थियों के जीवन और उनके आस-पास के परिवेश से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य

प्रारंभिक स्तर (प्रिपरेटरी स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 (विद्यालयी शिक्षा) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

पाठ्यचर्या लक्ष्य 1— विचारों को सुसंगतरूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 2— परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे— गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थ बोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 3— अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओं को लिखने की क्षमता विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 4— विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और विद्यालय के अनुभव) में व्यापक शब्द भंडार विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 5— पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में इन लक्ष्यों की प्राप्ति भी एक प्रमुख उद्देश्य है। पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को ही ध्यान में रखते हुए दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं और इन्हीं दक्षताओं की निरंतरता में सीखने के प्रतिफलतय किए गए हैं। यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित लक्ष्यों, दक्षताओं एवं सीखने के प्रतिफलों के समन्वितरूप को प्रतिबिंबित करती है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री का संयोजन

पुस्तक का आरंभ 'किरण' कविता से किया गया है। यह कविता सूर्य की किरणों के बारे में रोचक, सरल और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। 'सुंदरिया' (कहानी) में मानवीय भावनाओं को प्रस्तुत किया गया है। सुंदरिया, हीरा सिंह के परिवार के लिए केवल एक पशु नहीं है, बल्कि पारिवारिक सदस्य की तरह है। 'न्याय' (नाटक) में हंस को बचाने का करुणामय व्यवहार सिद्धार्थ द्वारा किया गया है।

ये दोनों रचनाएँ विद्यार्थियों को अपने परिवेश में अन्य प्राणियों को करुणा की दृष्टि से देखने और व्यवहार करने के लिए प्रेरित करेंगी। पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित 'न्याय की कुर्सी' तथा 'तीन मछलियाँ' कहानियाँ भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ व्यक्तित्व में विवेक, सत्यनिष्ठा और विनम्रता जैसे मानवीय गुणों की प्रेरणा देती है। हमारे देश में पंचतंत्र, जातक कथाएँ, हितोपदेश, सिंहासन बत्तीसी की कहानियाँ ज्ञानवर्धक, लोकप्रिय होने के साथ-साथ मूल्यों के संवर्धन के लिए उपयुक्त मानी जाती रही हैं।

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता तथा वैज्ञानिक प्रगति आधुनिक भारत की एक महत्वपूर्ण पहचान है। अतः पुस्तक में इन विशेषताओं को उद्घाटित करने वाले विभिन्न साहित्यिक विधा वाले पाठ लिए गए हैं। 'साङकेन' (निबंध), 'हमारे ये कलामंदिर' (निबंध), 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' (पत्र), 'गंगा की कहानी' (आत्मकथात्मक निबंध) और 'गगनयान' (विज्ञान कथा-संवाद) पाठ विद्यार्थियों में भारतीय भौगोलिक परिवेश और वैज्ञानिक तकनीकी प्रगति को जानने एवं भारतीयता को आत्मसात करने में सहायक होंगे।

बच्चे जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी दिनचर्या में आनंद और हास्य सहजता से शामिल होते हैं। 'चाँद काकुरता' (कविता), 'चतुर चित्रकार' (कविता), 'पेड़ का जादू' (लघुकथा), 'दो मेंढकों की यात्रा' (जापानी लोककथा) तथा 'मेरा बचपन' (संस्मरण) रचनाएँ विद्यार्थियों को हँसाने-गुदगुदाने का माध्यम बनेंगी और उन्हें खेल-भावना के लिए भी उत्प्रेरित करेंगी।

सारांशतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत पुस्तक, विद्यार्थियों में शब्द पहचान से लेकर पढ़ने, समझने, लिखने, वैज्ञानिक एवं तार्किक चिंतन विकसित करने, रचनात्मकता एवं कल्पनाशीलता को पोषित करने जैसी प्रवृत्तियों को पुष्पित-पल्लवित करने का अवसर प्रदान करेगी। समग्र रूप से इस पाठ्यपुस्तक में हमारी परंपरा और संस्कृति से 'गगनयान' तक की यात्रा को भाषा और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

मौखिक भाषा का विकास और लिखना

पाठ्यपुस्तक में विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने की दृष्टि से अभ्यास निर्मित किए गए हैं। हर पाठ की समाप्ति के बाद 'बातचीत के लिए' शीर्षक से कुछ प्रश्न दिए गए हैं जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी भाग ले सकता है और अपना अनुभव साझा कर सकता है। उदाहरण के लिए 'किरन' कविता में बातचीत के लिए दिए गए प्रश्नों में एक प्रश्न है— 'आपको कैसे पता चलता है कि सुबह हो गई है?' एक अन्य उदाहरण 'चाँद का कुर्ता' कविता से है— 'जब आप अपने अभिभावक के साथ कपड़े खरीदने जाते हैं, तब किन बातों का ध्यान रखते हैं?' इस प्रकार के प्रश्न प्रत्येक विद्यार्थी के लिए हैं। ऐसे प्रश्न सभी विद्यार्थियों को अपने-अपने अनुभवों के आधार पर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करते हैं।

बहुभाषिकता की भावना को पोषित करने की दृष्टि से भी ये प्रश्न उपयुक्त हैं। मौखिक भाषा के विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम, विद्यार्थियों को बिना किसी अवरोध के बोलने के अवसर प्रदान करना है।

पाठों के अभ्यास में विद्यार्थियों के लिए छोटे-छोटे वाक्य-निर्माण की गतिविधियाँ भी दी गई हैं। शब्द से वाक्य की ओर ले जाने से संबंधित गतिविधियों में यह ध्यान रखा गया है कि ये कठिन न हों। विद्यार्थी सरलता और आनंद के साथ इन अभ्यासों को करें। उदाहरण के लिए, 'हमारे ये कला मंदिर' पाठ में विद्यार्थियों को धन्यवाद कार्ड लिखने की तथा 'न्याय' नाटक में सपने में सिद्धार्थ और हंस की बातचीत की रुचिकर गतिविधियाँ दी गई हैं। अतः पाठ्यपुस्तक में, बोलने से लिखित भाषा की ओर विद्यार्थियों की भाषा-यात्रा सुगम और सरल हो, इसका ध्यान रखा गया है।

कल्पना, जिज्ञासा और रचनात्मकता

पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया में कल्पना विशेष स्थान रखती है। विद्यार्थी इस उम्र में कल्पना करने में पर्याप्त सक्रिय होते हैं। वे अपनी दिनचर्या में ढेरों कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ न कुछ सोचने और करने के प्रयोग करते रहते हैं। कुछ पाठों के अभ्यास में ऐसे प्रश्न दिए गए हैं जिससे विद्यार्थियों की कल्पना की दुनिया में विस्तार हो। ऐसे प्रश्न विद्यार्थियों पर सही अथवा गलत उत्तर का दबाव नहीं डालते। उदाहरण के लिए, 'न्याय की कुर्सी' पाठ के अभ्यास में एक प्रश्न है— 'आप में कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए जिससे आप कहानी के सिंहासन पर बैठ सकें?' इसी प्रकार 'चतुर चित्रकार' कविता में प्रश्न दिया गया है— 'कल्पना कीजिए कि चित्रकार ने जंगल में एक चित्र कला विद्यालय खोला है। आप इस विद्यालय का कोई नाम सुझाइए और इसके बारे में कुछ वाक्य अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।'

जिज्ञासा और खोजबीन करना बच्चों की मूल प्रवृत्तियों में से एक है। इसे ध्यान में रखते हुए संबंधित गतिविधियों को पाठों में शामिल किया गया है। उदाहरण के लिए, 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' पत्र के अभ्यास के एक प्रश्न में विद्यार्थियों को पक्षी अभ्यारण्य, उसकी स्थापना की आवश्यकता के कारण तथा भारत के प्रसिद्ध पक्षी अभ्यारण्यों के बारे में खोजबीन करने और पुस्तकालय की सहायता लेने वाली गतिविधियाँ रखी गई हैं। इसी पाठ के एक अन्य अभ्यास में भारत के मानचित्र में विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों को दर्शाकर प्रश्न पूछे गए हैं। विद्यार्थी इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए इन स्थानों के बारे में पढ़ेंगे और जानेंगे। इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों में खोजबीन करने की प्रवृत्ति को बढ़ाएँगे।

रचनात्मकता, मन की बात करने तथा रचने और लिखने का अवसर प्रदान करती है। पुस्तक में सृजनात्मकता और विद्यार्थी के बीच के संबंध को जोड़ने और प्रक्रिया को बनाए रखने हेतु ऐसी बहुत-सी गतिविधियाँ दी गई हैं जो रोचक हैं। उदाहरण के लिए, 'न्याय' नाटक के अभ्यास में कागज का पक्षी बनाने की गतिविधि दी गई है। 'साङकेन' पाठ में पत्तियों द्वारा अपने मनपसंद प्राणी की आकृति तथा 'काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की यात्रा' पाठ के अभ्यास में बादलों में पशुओं की आकृतियाँ बनाने की गतिविधियाँ दी गई हैं। ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता को उभारने का कार्य करेंगी। विद्यार्थियों का पुस्तक से जुड़ा व स्थापित करने में ये रचनात्मक गतिविधियाँ सहायक सिद्ध होंगी। इस पुस्तक में रचनात्मक अभिव्यक्ति के

लिए भी स्थान रखा गया है। 'खट्टे हैं अंगूर' शीर्षक के माध्यम से चित्र आधारित अभिव्यक्ति रखी गई है। पुस्तक का समापन भी चित्र आधारित अभिव्यक्ति के माध्यम द्वारा किया गया है।

परिवेश, संवेदनशीलता एवं समेकन

पाठ्यसामग्री का संयोजन करते हुए ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी इन सामग्रियों से जुड़कर अपने परिवेश के प्रति और भी संवेदनशील बनें। पाठों व अभ्यासों में पर्यावरण और विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने वाली विभिन्न गतिविधियाँ दी गई हैं। उदाहरण के लिए, 'चाँद का कुर्ता' कविता में 'सोचिए, समझिए और बताइए' शीर्षक में दिया गया प्रश्न है— 'मान लीजिए चाँद का एक मित्र है जो देख नहीं सकता। चाँद उसे अपने बदलते हुए आकार के बारे में कैसे समझाएगा?' इसी प्रकार के अन्य संवेदनशील प्रश्न भी पाठों में हैं। महिलाओं और पुरुषों की सार्थक और संतुलित भागीदारी से समाज और राष्ट्र निर्मित होता है। अतः पाठ्यपुस्तक में जेंडर संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए पाठों और चित्रों में संतुलित दृष्टि अपनाई गई है। इसके अतिरिक्त पाठ्यपुस्तक में भारतीय परंपरा एवं संस्कृति, विभिन्न अनुशासनों तथा कलाओं का पाठ्यसामग्री के साथ-साथ उपयुक्त शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि से समेकन भी किया गया है।

बहुभाषिकताऔर कक्षा-शिक्षण

बहुभाषिकता भारत की सामासिक संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा है। शिक्षण-अधिगम के क्षेत्र में बहुभाषिकता का उपयोग अलग-अलग तरीके से किया जाता है। दैनिक जीवन में मौजूद बहुभाषिकता के साथ-साथ पाठ्यसामग्री का भी बहुभाषिक होना आवश्यक होता है। विशेष रूप से छोटे विद्यार्थियों के लिए जब वे अपनी मातृभाषा से होते हुए हिंदी की समझ विकसित करने की कोशिश कर रहे होते हैं। इस पाठ्यपुस्तक में ऐसी गतिविधियाँ भी दी गई हैं जिसमें विद्यार्थी हिंदी के शब्दों के लिए अपनी-अपनी मातृभाषा में शब्द ढूँढ़ेंगे। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है— कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा बहुभाषिक शिक्षण पद्धति का उपयोग करना। अतः शिक्षकों से अनुरोध है कि वे पाठों को पढ़ाते हुए विद्यार्थियों को अपनी भाषा, परिवेश और संस्कृति से जोड़ते हुए शिक्षण कार्य करें। सहायता के लिए स्थान-स्थान पर शिक्षण-संकेतों की भी व्यवस्था की गई है।

अंत में यह कि पाठ्यपुस्तक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का आधार है, एकमात्र साधन नहीं। एक रचनात्मक एवं प्रतिबद्ध शिक्षक को निरंतर नवीन पाठ्य सामग्रियों का सहारा लेना ही पड़ता है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ शिक्षकों को अपने-अपने विद्यार्थियों का स्तर देखते हुए स्वयं ही तय करना पड़ता है कि उन्हें किस प्रकार की गतिविधियाँ और पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराई जाए। उद्देश्य तो अंततः अपेक्षित भाषायी कौशलों एवं दक्षताओं का विकास ही है। में पूर्ण विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक का निर्धारित उद्देश्यों और निर्देशों के अनुसार रचनात्मक उपयोग करेंगे जिससे शिक्षण-अधिगम प्रभावी होगा और विद्यार्थी आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

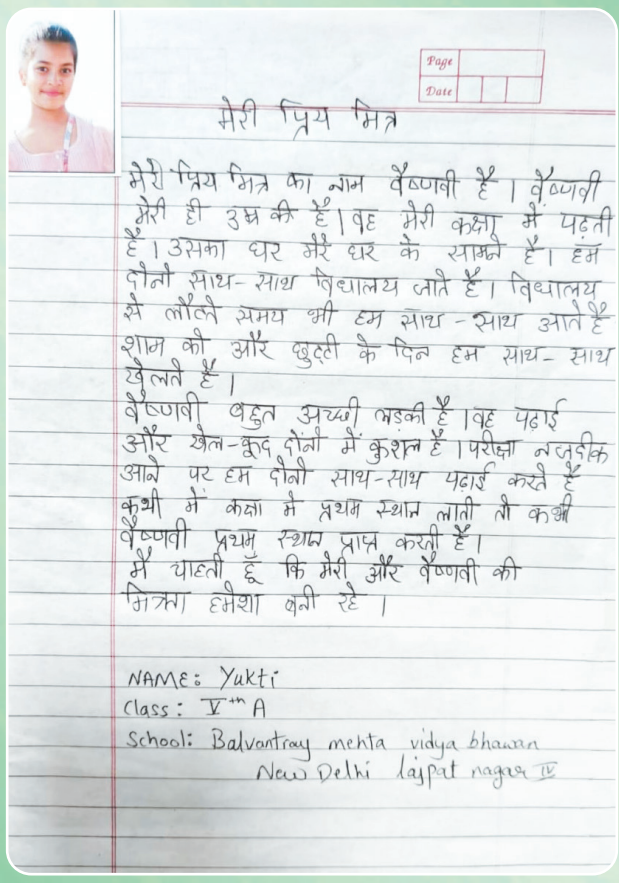

Page
Date

मेरी प्रिय मित्र

मेरी प्रिय मित्र का नाम वैष्णवी है। वैष्णवी मेरी ही उम्र की है। वह मेरी कक्षा में पढ़ती है। उसका घर मेरे घर के सामने है। हम दोनों साथ-साथ विद्यालय जाते हैं। विद्यालय से लौटते समय भी हम साथ-साथ आते हैं शाम को और छुट्टी के दिन हम साथ-साथ खेलते हैं।

वैष्णवी बहुत अच्छी लड़की है। वह पढ़ाई और खेल-कूद दोनों में कुशल है। परीक्षा नजदीक आने पर हम दोनों साथ-साथ पढ़ाई करते हैं कभी मैं कक्षा में प्रथम स्थान लाती तो कभी वैष्णवी प्रथम स्थान प्राप्त करती है।

मैं चाहती हूँ कि मेरी और वैष्णवी की मित्रता हमेशा बनी रहे।

NAME: Yukti
Class: V^th A
School: Balvantray mehta vidya bhawan
New Delhi lajpat nagar IV

कविता

14

एक अध्यापक की प्रेरणा

दिव्या राजपूत*

बच्चो, जागो!

सूरज निकला, भोर हुई,
बच्चो, जागो, है आज उमंग नई।
कल तक जो था, अब नहीं वो डर,
आज है आशा, हौंसला उस पर।

पढ़ना, लिखना, सीखना है खेल,
जिंदगी का ये अनमोल मेल।
प्यार से पढ़ो, मन लगाकर जानो,
अपने सपनों को पहचानों।

सपने देखो, दिल में जगाओ आग,
और करो मेहनत दिन रात।
सफलता मिलेगी जरूर, ये मेरा वादा है,
बस विश्वास रखो खुद पर, पक्का इरादा है।

रंग भरो तुम अपनी कल्पना में,
खो जाओ तुम सपनों की दुनिया में।
बनना है तुम्हें कुछ खास जरूर,
इसलिए मेहनत करो भरपूर।

तुम्हारे अंदर है वो शक्ति महान,
जो कर सकती है हर मुश्किल आसान।
खुद पर रखो विश्वास सदा,
चूमेगी तुम्हारे कदम सफलता।

किताबें हैं तुम्हारी दोस्त,
कलम है हथियार।
ज्ञान का उजाला फैलाओ,
मिटाओ सब अंधकार।

भविष्य तुम्हारा है उज्ज्वल देखो,
मेहनत से उसको तुम अब सींचो।
भारत माँ की शान बढ़ाओगे,
नाम अपना रौशन कर जाओगे।

देश को आगे ले जाना है साथ,
शिक्षा का उजाला फैलाना है हर हाथ।
बुराई से लड़ना, सच्चाई का पथ,
यही है तुम्हारा जीवन का सार, जान लो आज।

इसलिए उठो बच्चो, अब करो शुरुआत,
बनो अच्छे इंसान, बदलो ये हालात।
जिंदगी का हर पल, एक मौका है खास,
अपने देश और दुनिया के लिए बनो एक आस।

**कनिष्ठ परियोजना अध्येता,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली 110 016

About Our Journals and Magazine

भारतीय आधुनिक शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की त्रैमासिक पत्रिका है। यह पत्रिका शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थी-शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा पर अपने मौलिक शैक्षिक विचार रखने का एक मंच प्रदान करती है।

Indian Educational Review

A bi-annual journal which publishes articles and researches on educational policies, practices and values that are useful to practitioners in the contemporary times. The journal also provides a forum for teachers to share their experiences and concerns about schooling processes, curriculum, textbooks, teaching-learning and assessment practices.

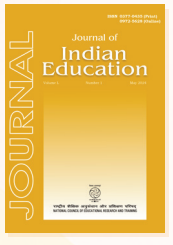

Journal of Indian Education

A quarterly periodical that provides a forum for teachers, teacher educators, educational administrators and researchers through presentation of novel ideas, critical appraisals of contemporary educational problems, and views and experiences on improved educational practices. The journal reviews educational publications other than textbooks.

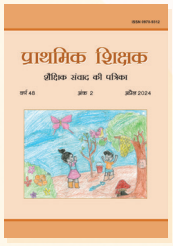

प्राथमिक शिक्षक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की इस त्रैमासिक पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है — शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देशभर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय-समय पर अवगत कराना। बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक सशक्त मंच प्रदान करती है।

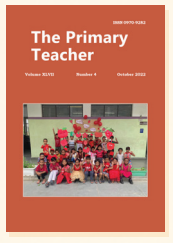

The Primary Teacher

A quarterly journal that carries articles and research papers on educational policies and practices, and material that is useful for practitioners in contemporary times. The journal also provides a forum to teachers and teacher educators to share their experiences and concerns about the schooling processes, curriculum, textbooks, teaching–learning, and assessment practices, particularly for the Foundational and Preparatory Stages.

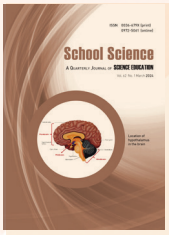

School Science

A peer-reviewed quarterly journal that aims to bring the recent developments in the areas of science, mathematics and environmental education within easy reach of teachers and students by serving as a platform to disseminate research findings, sharing innovative pedagogies, present theoretical work and report other advances towards improving teaching–learning in sciences.

Firkee Bachchon Ki

A half-yearly bilingual magazine (Hindi and English) consisting of poems, prose and activities, which appeal to children. It aims to develop reading culture among children at the Foundational Stage.

Indian Journal of Educational Technology

A bi-annual online peer-reviewed journal that aims at covering disciplinary areas of educational technology (ET) for school and teacher education. It also promotes research on the integration of technology in school and teacher education. The PDF format of the journal is available for free access on the NCERT portal.

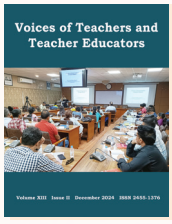

Voices of Teachers and Teacher Educators

A bi-annual peer-reviewed e-journal that highlights the vital role of teacher education in India. It aims to facilitate the dissemination of ideas of various stakeholders and make their engagement visible. It is a bilingual journal and the PDF format of the journal is available for free access on the NCERT portal.

Bank details for making payment through NEFT/RTGS

Account Number: 10137881342
Account Name: NCERT Publication Division
Bank Name: State Bank of India
Bank Location: NCERT, New Delhi
IFSC Code: SBIN0001690
GSTIN: 07AAOCS9078D2ZT
Pan No.: AAOCS9078D
E-mail: ncertpdacctts@gmail.com

Please take a printout of the proforma on the next page, fill and send it via post to the **Chief Business Manager, Publication Division, B.R. Ambedkar Khand, NCERT, New Delhi 110 016** or e-mail a scanned copy to **cbm.ncert@nic.in.**

The subscriber may intimate NCERT in case of change in address.

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी NCERT

Phone No.: 011- 26592345

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110 016

Subscription Form for NCERT Journal(s)

S. No.	Name of Journals	ISSN	Single Copy (₹)	Annual (₹)	Triennial (₹)
1.	भारतीय आधुनिक शिक्षा (A **Quarterly** Journal of Education in ***Hindi***) Print Month: January, April, July, October	0972-5636	**155** ☐	**620** ☐	**1860** ☐
2.	**Indian Educational Review** (A **Half-yearly** Research Journal in ***English***) Print Month: January, July	0019-4700 (Print) 0972-561X (Online)	**175** ☐	**350** ☐	**1050** ☐
3.	**Journal of Indian Education** (A **Quarterly** Journal of Education in ***English***) Print Month: February, May, August, November	0377-0435 (Print) 0972-5628 (Online)	**210** ☐	**840** ☐	**2520** ☐
4.	प्राथमिक शिक्षक (A **Quarterly** Journal for Primary Teachers in ***Hindi***) Print Month: January, April, July, October	0970-9312	**230** ☐	**920** ☐	**2760** ☐
5.	**The Primary Teacher** (A **Quarterly** Journal for Primary Teachers in ***English***) Print Month: January, April, July, October	0970-9282	**130** ☐	**520** ☐	**1560** ☐
6.	**School Science** (A **Quarterly** Journal for Secondary Schools in ***English***) Print Month: March, June, September, December	0036-679X (print) 0972-5061 (online)	**205** ☐	**820** ☐	**2460** ☐
7.	फिरकी बच्चों की/**Firkee Bachchon Ki** (A **Bilingual** (**Hindi** and **English**) **Half Yearly** Magazine) Print Month: June, December	2582-8606	**100** ☐	**200** ☐	**600** ☐

**Please tick the appropriate box(es) of the journal(s) you would like to subscribe.*

Particulars of Subscriber

Contact Person's Name: _____

Organisation: _____

_____

Designation: _____

Mailing Address: _____

_____ Pin Code/Digi PIN: _____

Phone (Office): _____ Phone (Residence): _____

E-mail: _____ Mobile: _____

Address for Dispatch: _____

_____

NEFT/RTGS Remittance Details

Bank Name: _____ Ref./UTR: _____

Amount: ₹ _____

Dated: _____

लेखकों के लिए दिशानिर्देश

- लेख सरल भाषा में तथा रोचक होना चाहिए।
- लेख की विषयवस्तु 2500 से 3000 या अधिक शब्दों में डबल स्पेस में टंकित होना वांछनीय है।
- चित्र कम से कम 300 DPI में होने चाहिए।
- तालिका, ग्राफ विषयवस्तु के साथ होने चाहिए।
- चित्र अलग से भेजे जाएँ तथा विषयवस्तु में उनका स्थान स्पष्ट रूप से अंकित किया जाना चाहिए।
- शोधपत्रों के साथ कम से कम सारांश भी दिया जाए।
- लेखक लेख के साथ अपना संक्षिप्त विवरण तथा अपनी शैक्षिक विशेषज्ञता अवश्य भेजें।
- शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ की सूची भी अवश्य दें।
- संदर्भ का प्रारूप रा.शै.अ.प्र.प. हाउस स्टाइल के अनुसार निम्नवत होना चाहिए—

  सेन गुप्त, मंजीत. 2013. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा*. पी.एच.आई. लर्निंग प्रा.लि., दिल्ली.

लेखक अपने मौलिक लेख या शोधपत्र सॉफ्टकॉपी (यूनिकोड में) के साथ निम्न पते पर या ई-मेल पर भेजें—

अकादमिक संपादक
प्राथमिक शिक्षक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016
ई-मेल – prathamik.shikshak@gmail.com

रजि. नं. 32427/76

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिकाओं के मूल्य

Rates of National Council of Educational Research and Training Journals and magazine

पत्रिका	प्रति कॉपी शुल्क	वार्षिक सदस्यता शुल्क	त्रैवार्षिक सदस्यता शुल्क
School Science (Quarterly) A Journal for Secondary Schools *स्कूल साइंस (त्रैमासिक)* *माध्यमिक विद्यालयों के लिए पत्रिका*	₹ 205.00	₹ 820.00	₹ 2,460
Indian Educational Review A Half-yearly Research Journal *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका)*	₹ 175.00	₹ 350.00	₹ 1,050
Journal of Indian Education (Quarterly) *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (त्रैमासिक)*	₹ 210.00	₹ 840.00	₹ 2,520
भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) *Bharatiya Aadhunik Shiksha (Quarterly)*	₹ 155.00	₹ 620.00	₹ 1,860
Primary Teacher (Quarterly) *प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)*	₹ 130.00	₹ 520.00	₹ 1,560
प्राथमिक शिक्षक (त्रैमासिक) *Prathmik Shikshak (Quarterly)*	₹ 230.00	₹ 920.00	₹ 2,760
फिरकी बच्चों की (अर्द्ध वार्षिक पत्रिका) *Firkee Bachchon Ki (Half-yearly)*	₹ 100.00	₹ 200.00	₹ 600

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की पत्रिकाओं की सदस्यता लेने हेतु शिक्षाविदों, संस्थानों, शोधार्थियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए पते पर संपर्क करें।

मुख्य प्रबंधक अधिकारी, प्रकाशन विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016
ई-मेल – bmsaleswing@gmail.com, फोन – 011-26562708, फैक्स – 011-26851070

विद्यया ऽ मृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING